रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1179] नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 17, 2011/ज्येष्ठ 27, 1933
No. 1179] NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 17, 2011/JYAISTHA 27, 1933

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 17 जून, 2011

का.आ. 1417(अ).—विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4 (4) के अनुसार दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति श्री पी. के. भसीन की अध्यक्षता में गठित अधिकरण, जिसको विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4 (1) के अंतर्गत यह न्याय-निर्णय करने के लिए एक संदर्भ भेजा गया था कि क्या असम के नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड (एन डी एफ बी) संगठन को विधिविरुद्ध घोषित किए जाने के लिए पर्याप्त कारण विद्यमान हैं अथवा नहीं, का आदेश आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है ।

[फा. सं. 11011/57/2010-एन.ई.-III]

शम्भू सिंह, संयुक्त सचिव

विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 3 के अंतर्गत नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड के संबंध में भारत सरकार द्वारा दिनांक 23-11-2010 की अधिसूचना सं. का.आ. 2826(अ) के तहत गठित भारत के विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिकरण की रिपोर्ट ।

नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट ऑफ बोडोलैण्ड (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'एन डी एफ बी' कहा जाएगा) को भारत सरकार द्वारा 1992 में विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (संक्षिप्त में 1967 के अधिनियम) की धारा 3(1) के अंतर्गत एक अधिसूचना जारी करके विधिविरुद्ध संगम घोषित किया गया था क्योंकि इसका प्राथमिक उद्देश्य बोडोलैण्ड, जिसमें असम

के बोडो आबादी वाले क्षेत्र शामिल हैं, को सभी प्रकार के विधिविरुद्ध और हिंसक तरीकों द्वारा भारत से स्वतंत्र कराना था। तथापि, एन डी एफ बी के विधिविरुद्ध क्रियाकलाप उसके बाद भी उसी तरह से जारी रहे और अत: केन्द्र सरकार तब से हर दो वर्ष बाद इसी प्रकार की अधिसूचनाएं जारी करके एन डी एफ बी को विधिविरुद्ध संगम घोषित करती रही है और इन घोषणाओं की, 1967 के अधिनियम की धारा 5 (i) के अंतर्गत किए गए उपबंध के अनुसार, भारत सरकार द्वारा गठित विभिन्न अधिकरणों द्वारा पुष्टि की गई थी। भारत सरकार ने दिनांक 23.11.2010 की अधिसूचना के तहत एक नई घोषणा की जिसमें एन डी एफ बी को तत्काल प्रभाव से विधिविरुद्ध संगम, इस अधिकरण द्वारा उसकी पुष्टि के अध्यधीन, घोषित किया गया है। उक्त अधिसूचना नीचे प्रस्तुत है :-

"गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 नवम्बर, 2010

का.आ. 2826 (अ). ____यत: नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैण्ड (जिसे इसमें इसके पश्चात एन डी एफ बी कहा गया है) का घोषित उद्देश्य पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य सशस्त्र पृथकतावादी संगठनों से मिलकर बोडोलैण्ड, जिसमें अधिकतर असम के वे क्षेत्र सम्मिलित हैं जहां बोडो निवास करते हैं, को "मुक्त कराना" और उक्त क्षेत्र को भारत से पृथक करना है;

और यत:, केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि एन डी एफ बी:-

(i) पृथक बोडोलैण्ड स्थापित करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए, भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को विच्छिन्न करने वाले या विच्छिन्न करने का आशय रखने वाले अवैध और हिंसात्मक क्रियाकलापों में लिप्त रहा है;

(ii) पृथक बोडोलैण्ड के सृजन के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य भूमिगत संगठनों के साथ सम्बद्ध रहा है;

(iii) विधिविरुद्ध और हिंसक क्रियाकलापों में लगा हुआ है, इस प्रकार उसने भारत सरकार तथा असम सरकार के प्राधिकार को कम किया है और जनता में आतंक और संत्रास फैलाया है;

(iv) अपनी योजनाओं और गतिविधियों के वित्त पोषण और निष्पादन की दृष्टि से समाज के विभिन्न वर्गों से जबरन धन वसूली में संलिप्त रहा है;

(v) अपने आतंकवादी और विद्रोही क्रियाकलापों को जारी रखने के उद्देश्य हेतु नए कॉडरों की भर्ती के लिए व्यवस्थित अभियान चला रहा है;

(vi) गैर-बोडो लोगों में डर और असुरक्षा फैलाने के उद्देश्य से हत्याकाण्ड और नृजातीय हिंसा फैला रहा है जिसके परिणामस्वरूप असम के बोडो प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में रह रहे गैर-बोडो लोगों की हत्या करना, उनकी सम्पति को नष्ट करना आदि जैसी गतिविधियों में शामिल रहा है;

(vii) अपने पृथकतावादी क्रियाकलापों को चलाने के लिए देश की सीमा से पार कैंपों और छिपने के ठिकानों की स्थापना कर रहा है;

और यत: केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि एन डी एफ बी की हिंसक गतिविधियों में शामिल हैं:

(i) 2008 में हिंसा की 168 घटनाएं जिनमें 63 आम नागरिक तथा 3 सुरक्षा बल कार्मिक मारे गए; तथा

(ii) 2010 (30 जून तक) में हिंसा की 74 घटनाएं जिनमें 13 आम नागरिक मारे गए।

और यत: केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि पूर्वोक्त कारणों से एन डी एफ बी के क्रियाकलाप भारत की संप्रभुता और अखण्डता के लिए हानिकर हैं और यह एक विधिविरुद्ध संगम है;

और यत: केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि यदि एन डी एफ बी के विधिविरुद्ध क्रियाकलापों पर नियंत्रण नहीं लगाया जाता है तो संगठन पुन: नई भर्तियां कर सकता है, हिंसा, आतंकवादी और अलगाववादी क्रियाकलापों में लग सकता है, निधि का संचय कर सकता है और निर्दोष नागरिकों तथा सुरक्षा बलों के कार्मिकों के जीवन के लिए खतरा पैदा कर सकता है; और इसलिए ऐसी परिस्थितियां विद्यमान हैं जिनसे एन डी एफ बी को तत्काल प्रभाव से, विधिविरुद्ध संगम घोषित किया जाना आवश्यक हो जाता है;

अत:, अब, केन्द्रीय सरकार, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 3 की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्द्वारा नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैण्ड (एन डी एफ बी) को विधिविरुद्ध संगम घोषित करती है।

केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि एन डी एफ बी को तत्काल प्रभाव से विधिविरुद्ध संगम घोषित किया जाना आवश्यक है और तदनुसार, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (3) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए, यह निदेश देती है कि अधिसूचना किसी ऐसे आदेश के अधीन रहते हुए, जो उक्त अधिनियम की धारा 4 के अधीन किया जा सकेगा, सरकारी राजपत्र में इसके प्रकाशन की तारीख से प्रभावी होगी।

फा.सं. 11011/57/2010-एन ई-III

आर.आर. झा, संयुक्त सचिव"

2. उक्त अधिसूचना जारी किए जाने के बाद, भारत सरकार ने, 1967 के अधिनियम की धारा 5 (1) के अंतर्गत किए गए उपबंध के अनुसार, दिनांक 15.12.2010 की अधिसूचना सं. का.आ. 2964 (अ) के तहत मेरी अध्यक्षता में एक-सदस्यीय 'विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण)

अधिकरण' का गठन किया और तत्पश्चात दिनांक 23.12.2010 की अधिसूचना के तहत इस अधिकरण को यह न्याय निर्णयन करने के लिए एक संदर्भ भेजा गया था कि एन डी एफ बी को विधिविरुद्ध संगम घोषित करने का पर्याप्त कारण है अथवा नहीं। इस संदर्भ के साथ दिनांक 23 नवम्बर, 2010, 15 दिसम्बर, 2010 की अधिसूचनाएं तथा तथ्यों/एन डी एफ बी के विधिविरुद्ध क्रियाकलापों, जिनकी बजह से भारत सरकार ने इस संगठन को विधिविरुद्ध संगम घोषित किया था, का एक सार भी प्रस्तुत किया गया था। इस सार की विषय-वस्तु नीचे प्रस्तुत है:-

संगठन के उद्देश्य एवं लक्ष्य

एन डी एफ बी (जिसे मूलत: बोडो सुरक्षा बल के रूप में जाना जाता था) का गठन सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से असम के बोडो आबादी वाले क्षेत्रों को भारत से स्वतंत्र कराने और एक स्वतंत्र तथा संप्रभुतासम्पन्न बोडोलैण्ड का निर्माण करने के स्पष्ट उद्देश्य एवं लक्ष्य से 3 अक्तूबर, 1986 को किया गया था । एन डी एफ बी के उद्देश्य एवं लक्ष्य निम्न प्रकार हैं:-

(i) बोडोलैण्ड को भारतीय विस्तार और कब्जे से मुक्त कराना;
(ii) बोडो राष्ट्र को उपनिवेशिक शोषण, दमन और प्रभुत्व से मुक्त कराना;
(iii) स्वतंत्रता, समानता और भाई-चारे को बढ़ावा देने के लिए लोकतांत्रिक साम्यवादी समाज की स्थापना करना; और
(iv) बोडोलैण्ड की अखंडता और संप्रभुता को कायम रखना

एन डी एफ बी ने, भारत सरकार और असम सरकार के साथ 1 जून 2005 से एक वर्ष तक अभियान निलंबन संबंधी समझोते पर हस्ताक्षर किए जिसे समय-समय पर बढ़ाया गया है। अभियान निलंबन संबंधी उक्त समझौता 31.12.2010 तक वैध है। इस समझौते के बावजूद, यह संगठन 'संप्रभुता' और 'आत्म-निर्णय' की दिशा में बढ़ता रहा है।

प्रभाव वाले क्षेत्र/नफरी और शस्त्र भण्डार

एन डी एफ बी, असम के कोकराझार, चिरांग, उदलगुड़ी, बस्का, बारपेटा, नलबाड़ी, दारंग, कामरूप, सोनितपुर, बोगईगांव, धेमाजी तथा कार्बी आंगलांग जिलों के बोडो बहुल क्षेत्रों में सक्रिय बना हुआ है। 1 मई, 2010 को गिरफ्तार किए गए एन डी एफ बी के नेता रंजन दयामारी के अनुसार एन डी एफ बी की काडर नफरी लगभग 170-180 है तथा इसके पास लगभग 100 शस्त्र हैं।

अन्य आतंकवादी संगठनों/पाकिस्तान अन्तर सेवा आसूचना (आई एस आई) के साथ संबंध

एन डी एफ बी, नेशनल सोशलिस्ट काउन्सिल ऑफ नागालैण्ड (इसाक मुईवाह) [एन एस सी एन (आई/एम)] के साथ संबंध बनाए हुए है। एन डी एफ बी (आर डी) तथा एन एस सी एन (आई/एम) 'सेल्फ डिफेंस यूनाइटेड फ्रंट ऑफ साउथ ईस्ट हिमालयान रीजन' नामक एक व्यापक संगठन, जिसमें त्रिपुरा, मेघालय और मणिपुर के पूर्वोत्तर के छोटे उग्रवादी संगठन शामिल हैं, के सदस्य हैं। हाल के विगत में इस संगठन द्वारा किसी कार्रवाई को अंजाम नहीं दिया गया है। एन डी एफ बी के नेता विदेशों में, विशेष रूप से थाईलैण्ड (बैंकाक) और बंगलादेश जाते रहते हैं। इसके बंगलादेश में शरण स्थल/छिपने के अड्डे हैं। एन डी एफ बी ने भारत-म्यांमार सीमा के निकट एक प्रशिक्षण शिविर स्थापित किया है। रंजन दयामारी से पूछताछ के दौरान उसने पाकिस्तान के साथ अपने संबंध होने की बात स्वीकार की जिसने एन डी एफ बी को शस्त्र तथा प्रशिक्षण प्रदान किया।

एन डी एफ बी की हिंसक गतिविधियां

मई, 2005 में अभियान निलंबन संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद एन डी एफ बी ने 2007 तक हिंसा की गति धीमी रखी। तथापि, वर्ष 2008 में हिंसा में बहुत वृद्धि हुई तथा हिंसा की 93 घटनाओं में 112 लोगों की मृत्यु हो गई। 30 अक्तूबर, 2008 को रंजन दयामारी के नेतृत्व में कुछ काडरों ने गुवाहाटी, बारपेटा, बोगईगांव और कोकराझार में श्रंखलाबद्ध विस्फोटों की योजना बनाई तथा उसे अजाम दिया जिनमें 88 लोगों की मृत्यु हो गई तथा 423 लोग घायल हुए। वर्ष 2009 से एन डी एफ बी द्वारा की गई हिंसा में वृद्धि हुई है। वर्ष 2009 के दौरान 168 घटनाओं में 3 सुरक्षा बल कार्मिकों सहित 63 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। वर्ष 2010 में (30 जून तक) एन डी एफ बी द्वारा अंजाम दी गई हिंसा की 74 घटनाओं में 13 नागरिकों की मृत्यु हो गई।

विगत में एन डी एफ बी अपनी विचारधारा के विरोधी बोडो दलों/संगठनों सहित गैर-बोडो लोगों, व्यवसाइयों, पुलिस कार्मिकों और राजनैतिक दलों के सदस्यों/नेताओं को निशाना बनाता रहा था। एन डी एफ बी उत्पीड़क तरीकों से बड़ी तादाद में धन संग्रह करता रहा है। असम के छोटे कस्बों में कार्यरत चाय बागान स्वामियों, व्यवसाइयों, ठेकदारों, चिकित्सकों, वकीलों और शिक्षकों को भी आमतौर पर एन डी एफ बी को भारी तादाद में धनराशि का भुगतान करने के लिए कहा जाता है तथा ऐसा न करने पर पीड़ितों को मृत्युदंड की धमकी दी जाती है। एन डी एफ बी के भूमिगत संगठन भी गैर-बोडो लोगों का उत्पीड़न करते रहे हैं तथा उन्हें डराते-धमकाते रहे हैं और उनसे 'बोडोलैण्ड कर' का भुगतान करने अथवा 'बोडोलैण्ड' क्षेत्र को छोड़कर चले जाने अन्यथा गम्भीर परिणाम भुगतने के लिए कहते रहे हैं। एन डी एफ बी के ऐसे कृत्यों ने 'बोडोलैण्ड' क्षेत्र में रह रहे गैर-बोडो लोगों के मन में भय पैदा कर दिया है। एन डी एफ बी की व्यापक स्तर पर की जाने वाली जबरन धन वसूली से करोड़ों रुपये की राशि इकट्ठी हो गई है

जिसका प्रयोग इसके संगठनात्मक, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, शस्त्र प्रापण और इसके नेताओं के विदेशों में ठहरने के वित्तपोषण के लिए किया जा रहा है।

एन डी एफ बी द्वारा निरंतर हिंसा का सहारा लिया जाना, अन्य उग्रवादी संगठनों के साथ संबद्ध, विध्वंसक गतिविधियों में शामिल रहने तथा नृजातीय तनाव/हिंसा फैलाने की उनकी सहज प्रवृत्ति, जबरन धन वसूली और सबसे अधिक 'संप्रभुता संपन्न बोडोलैण्ड' की बात पर जोर देना गम्भीर चिंता के विषय हैं। इस संगठन की लक्षित हिंसा में संलिप्त रहने की क्षमता बनी हुई है। रंजन दयामारी, अध्यक्ष [एन डी एफ बी (आर डी)]की गिरफ्तारी से इसका हिंसा का स्तर प्रभावित नहीं हुआ है। एन डी एफ बी ने 8 जुलाई, 2010 को एक प्रैस रिलीज के माध्यम से 7.7.2010 तथा 8.7.2010 की मध्य रात्रि को बोगईगांव में रेलवे ट्रैकों पर हुए श्रंखलाबद्ध विस्फोटों की जिम्मेदारी ली।

असम सरकार, रक्षा मंत्रालय और आसूचना एजेंसियो की सिफारिश

असम सरकार तथा आसूचना ब्यूरो ने सिफारिश की है कि धीरेन, बोडो अध्यक्ष के नेतृत्व वाले एन डी एफ बी (पी) को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के अंतर्गत 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित किए जाने की आवश्यकता नहीं है और केवल एन डी एफ बी (आर डी) को 22 नवम्बर, 2010 से आगे दो वर्ष की अवधि के लिए विधिविरुद्ध संगम घोषित किया जाए। तथापि, रक्षा मंत्रालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल और अनुसंधान एवं विश्लेषण विंग ने सिफारिश की है कि एन डी एफ बी को 22 नवम्बर, 2010 के बाद 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित रखा जाए।

प्रतिबंध को बढ़ाए जाने का आचित्य

पूर्ववर्ती पैराग्राफों में उल्लिखित स्थिति पर गौर करते हुए एन डी एफ बी को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के अंतर्गत निम्नलिखित आधारों पर 22 नवम्बर, 2010 से आगे दो वर्ष की अवधि के लिए 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित किया गया है:

(i) पृथक बोडोलैण्ड स्थापित करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए, भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को विच्छिन्न करने वाले या विच्छिन्न करने का आशय रखने वाले अवैध और हिंसात्मक क्रियाकलापों में लिप्त रहना;

(ii) पृथक बोडोलैण्ड के सृजन के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य भूमिगत संगठनों के साथ सम्बद्ध रहना.

(iii) विधिविरुद्ध और हिंसक क्रियाकलापों में लगा हुआ है, इस प्रकार उसने भारत सरकार तथा असम सरकार के प्राधिकार को कम किया है और जनता में आतंक और संत्रास फैलाना;

(iv) अपनी योजनाओं और गतिविधियों के वित पोषण और निष्पादन की दृष्टि से समाज के विभिन्न वर्गों से जबरन धन वसूली में संलिप्त रहना;

(v) अपने आतंकवादी और विद्रोही क्रियाकलापों को जारी रखने के उद्देश्य हेतु नए कॉडरों की भर्ती के लिए व्यवस्थित अभियान चलाना;

(vi) गैर-बोडो लोगों में डर और असुरक्षा फैलाने के उद्देश्य से हत्याकांड और नृजातीय हिंसा फैला रहा है जिसके परिणामस्वरूप असम के बोडो प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में रह रहे गैर-बोडो लोगों की हत्या करना, उनकी सम्पति को नष्ट करना आदि जैसी गतिविधियों में शामिल रहना;

(vii) अपने पृथकतावादी क्रियाकलापों को चलाने के लिए देश की सीमा से पार कैंपों और छिपने के ठिकानों की स्थापना करना;

और यत: केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि एन डी एफ बी (आर डी) की हिंसक गतिविधियों में शामिल है:-

(i) 2008 में हिंसा की 168 घटनाएं हुईं जिनमें 63 आम नागरिक तथा 3 सुरक्षा बल कार्मिक मारे गए; तथा

(ii) 2010 (30 जून तक) में हिंसा की 74 घटनाएं हुईं जिनमें 13 आम नागरिक मारे गए।

विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 3 की उप-धारा (3) के परन्तुक के अंतर्गत यदि केन्द्र सरकार की यह राय हो कि ऐसी परिस्थितियां मौजूद हैं जिनसे एन डी एफ बी को 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित करने संबंधी अधिसूचना का विस्तार करना आवश्यक है तो वह लिखित में कारण बताकर यह निदेश दे सकती है कि अधिसूचना राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रभावी होगी। एन डी एफ बी की गतिविधियां जारी हैं, और यह महसूस किया गया कि यदि अधिसूचना के विस्तार में कोई विलंब हुआ तो यह संगठन इस स्थिति का अनुचित लाभ उठाएगा और पृथकतावाद, विध्वंसक तथा हिंसक गतिविधियों का तेज करने के लिए अपने काडरों को एकजुट करेगा। इससे इस संगठन के नेतृत्व को भारत के सुरक्षा हितों के लिए हानिकर विदेशी तत्वों के साथ मिलकर राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों को खुले तौर पर प्रचार करने का भी अवसर मिल सकता है। ऐसी स्थिति में पुलिस और सुरक्षा बलों के लिए भी इस संगठन के सदस्यों और काडरों को नज़रबंद करना तथा उन पर अभियोग चलाना कठिन होगा। अत: एन डी एफ बी पर प्रतिबंध लगाने संबंधी अधिसूचना का, राजपत्र में इसके प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की और अवधि तक, विस्तार करना आवश्यक समझा गया।"

3. मैंने 4.1.2011 को इस मामले पर प्रारंभिक रूप से विचार किया। दिनांक 23 नवम्बर, 2010 की अधिसूचना में सरकार द्वारा उल्लिखित तथ्यों तथा पहले शब्दश: प्रस्तुत किए गए तथ्यों के सार पर विचार करने के पश्चात मैंने एन डी एफ बी के एक नोटिस जारी करने का निदेश दिया कि वह इस

नोटिस की तामीली की तारीख के 30 दिन के भीतर इस बात का कारण बताए कि इसे विधिविरुद्ध संगम क्यों नहीं घोषित किया जाए। एन डी एफ बी को कारण बताओ नोटिस की तामीली, इसे दो दैनिक राष्ट्रीय समाचारपत्रों और असम के दो स्थानीय समाचारपत्रों में प्रकाशित कराए जाने के अतिरिक्त, इसके सभी उपलब्ध पतों पर किए जाने का निदेश दिया गया। एन डी एफ बी को इस नोटिस की तामीली, उक्त संगठन के कार्यालय के प्रमुख भाग पर इसकी प्रति चिपकाकर करने का भी निदेश दिया गया।

4. एन डी एफ बी को निदेशानुसार इस नोटिस की तामीली विधवत् रूप से की गई, किन्तु उसने इस अधिकरण द्वारा जारी किए गए कारण बताओ नोटिस का तीन दिन की अवधि के अन्दर जवाब नहीं दिया और इसलिए इस मामले में आगे की कार्यवाहियां एक पक्षीय रूप से करने का आदेश दिया गया।

5. केन्द्र सरकार और असम राज्य को, एन डी एफ बी को विधिविरुद्ध संगम घोषित किए जाने के समर्थन में शपथपत्रों के रूप में साक्ष्य प्रस्तुत करने की अनुमति दी गई। केन्द्र सरकार की और से गृह मंत्रालय में निदेशक श्री जी.पी.एन. सिंह ने अपना शपथपत्र, प्रदर्श एस डब्ल्यू-19/ए दायर किया। अपने शपथपत्र के साथ श्री सिंह ने अन्य विश्वसनीय दस्तावेजों के अतिरिक्त, तथ्यों का सार (प्रदर्श एस डब्ल्यू-19/बी), जो वही दस्तावेज है जो उक्त संदर्भ भेजे जाने के समय सरकार द्वारा इस अधिकरण को भेजा गया था तथा जिसकी विषय-वस्तु पहले ही प्रस्तुत की जा चुकी है, भी संलग्न किया। वह सार अब श्री जे.पी.एन. सिंह के शपथपत्र का भाग है। एन डी एफ बी के संविधान की प्रति, जिसमें इसके विधिविरुद्ध उद्देश्य और लक्ष्य दिए गए हैं, एस डब्ल्यू-15 श्री डी. मालाकर, संयुक्त सचिव, असम सरकार, गृह एवं राजनैतिक विभाग के शपथपत्र सहित रिकॉर्ड में रखी गई है तथा वह प्रदर्श एस डब्लू 15 ए है। उक्त संविधान के संगत अनुच्छेद नीचे प्रस्तुत हैं :-

"अनुच्छेद 6. प्रचालन क्षेत्र

इस तथ्य के बावजूद कि एन डी एफ बी की गतिविधियां मुख्यत: बोडोलैण्ड में होंगी, जहां तक प्रचालन का संबंध है, इसका कोई अधिकार क्षेत्र नहीं होगा।

अनुच्छेद 18. बोडोलैण्ड आर्मी

राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सशस्त्र संघर्ष चलाने हेतु एन डी एफ बी की बोडोलैण्ड आर्मी के नाम से अपनी स्वयं की सेना होगी। बोडोलैण्ड आर्मी को बोडोलैण्ड आर्मी कार्यालय के माध्यम से विनियमित किया जाएगा। ।

अनुच्छेद 19. पीपल्स रिवोल्यूशनरी गवर्नमेंट

क्रांतिकारी संघर्ष की प्रक्रिया के दौरान एन डी एफ बी पीपल्स रिवोल्यूशनरी गवर्नमेंट का गठन करेगा तथा इसकी स्थापना करेगा जिसे गवर्नमेंट ऑफ द पीपल्स रिपब्लिक ऑफ बोडोलैण्ड के नाम से जाना जाएगा।

अनुच्छेद 20. द पीपल्स रिवोल्यूशनरी गवर्नमेंट

दोषसिद्धि के स्वतंत्र और निष्पक्ष विचारण के लिए पीपल्स रिवोल्यूशनरी कोर्ट के रूप में एन डी एफ बी की न्यायपालिका होगी।

6. विद्वान एडीशनल सॉलिसीटर जनरल तथा असम राज्य के विद्वान वकील द्वारा जिस अन्य महत्वपूर्ण गवाह की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया गया वह एस डब्ल्यू-14 सुश्री बन्या गोगोई, पुलिस अधीक्षक (एस ओ यू), दिसपुर, असम राज्य हैं। उन्होंने अपने शपथपत्र प्रदर्श एस डब्ल्यू-14/ए में निम्नलिखित उल्लेख किया:

" कि अभिसाक्षी यह बताना चाहता है कि 1 जून, 2005 को भारत सरकार तथा असम सरकार और एन डी एफ बी के बीच 6 (छः) माह की अवधि तक अभियान निलंबन संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और तत्पश्चात इस क्षेत्र में स्थायी शांति के उद्देश्य से इसका चरणबद्ध तरीके से विस्तार किया गया है। तथापि, उक्त समझौते के बावजूद, एन डी एफ बी, अभियान निलंबन संबंधी बुनियादी नियमों, जिन पर 1 जून, 2005 को सहमति हुई थी, का उल्लंघन करता रहा है तथा उसने राष्ट्र के विरुद्ध सक्रिय युद्ध छेड़ा हुआ है। उक्त समझौते के बावजूद एन डी एफ बी ने, सेना/पुलिस/सुरक्षा बल कार्मिकों तथा कानून का पालन करने वाले नागरिकों पर हमलों और सार्वजनिक एवं निजी संपतियों को नष्ट करने सहित आतंकवादी हिंसा के अपने कृत्यों को तेज करके संप्रभु बोडोलैण्ड की स्थापना करने के उद्देश्य से अपनी अलगाववादी और हिंसक गतिविधियां जारी रखीं। इस संगठन ने मेघालय और मिजोरम से लगे बंगलादेश के क्रमश: शेरपुर जिले और चिटगांग हिल ट्रेक्ट्स में अनेक शिविर/छिपने के अड्डे स्थापित कर लिए हैं। विदेशी जमीन पर शिविरों की स्थापना से एन डी एफ बी कॉडरों के प्रशिक्षण में सुविधा हुई जिस पर कोई अंकुश नहीं लगाया गया। इससे राज्य में उनकी विध्वंसक गतिविधियों का जारी रखने में सुगमता हुई है क्योंकि नए भर्ती किए गए कॉडरों को विदेश में प्रशिक्षण प्रदान किए जाने के बाद उन्हें विध्वंसक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए राज्य में

भेजा जाता है। बंगलादेश में एन डी एफ बी के शिविरों के निकट ए एन वी सी, एच एन एल सी, एन एस सी एन (आई एम), उल्फा और एन एल एफ टी जैसे पूर्वोत्तर के अन्य उग्रवादी संगठनों के इसी प्रकार के शिविरों की मौजूदगी शस्त्रों के ट्रान्शिपमेंट में इस संगठन के लिए मददगार होती है। मेघालय की एच एन एल सी (हन्नीवट्रेप नेशनल लिब्रेशन काउन्सिल) तथा उल्फा के साथ एन डी एफ बी के अवैध संबंध अभी भी बने हुए हैं। उन्होंने मेघालय के रिभोई जिले से लगी असम-मेघालय की सीमा पर एक शिविर स्थापित किया है जो गुवाहाटी शहर के निकट है। उक्त स्थान से ये फिरौती प्राप्त करने के लिए गुवाहाटी शहर में व्यवसायियों के अपहरण के संयुक्त अभियान चलाते थे। अध्यक्ष रंजन दयामारी (गिरफ्तारी के बाद से) सहित बंगलादेश में स्थित एन डी एफ बी का नेतृत्व संप्रभुता संपन्न स्वतंत्र बोडोलैण्ड की स्थापना किए जाने का समर्थन कर रहा है। रंजन दयामारी (अध्यक्ष, एन डी एफ बी) ने बंगलादेश के खग्राचारी शिविर में हुई एक पासिंग आउट परेड में प्रशिक्षणार्थियों से अपील की कि वे स्वतंत्र बोडोलैण्ड की स्थापना के लिए अपने जीवन का बलिदान करें।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

कि अपने प्रारंभ के समय से, एन डी एफ बी, अपने अलगाववादी उद्देश्य को हासिल करने के लिए दारंग, सोनितपुर, कोकराझार, नलबाड़ी, बारपेटा, नगांव, गोलाघाट, लखीमपुर, धेमाजी, कामरूप, चिरांग, उदलगुड़ी, कार्बी एन्गलांग, बस्का, गोलपाड़ा, धुबरी और गुवाहाटी शहर में बड़े पैमाने पर आतंकवादी और विध्वंसक कृत्यों में संलिप्त रहा है तथा गैर-जन जातीय लोगों तथा एन डी एफ बी की अलगाववादी विचारधारा का विरोध करने वाले बोडो लोगों में भी दहशत तथा असुरक्षा की भावना फैलाता रहा है।

कि यह संगठन उल्फा, एन एस सी एन (के), एन एस सी एन (आई एम), के वाई के एल, यू एन एल एफ, के एल ओ, टी पी डी एफ, एच एन एल सी, ए एन वी सी और एल डी सी एम के अन्य विद्रोही संगठनों के साथ निकट संबंध बनाए हुए है। इसने बंगलादेश में बोलचारी शिविर (खग्राचारी), मणिकुरा (हलोवाघाट), पश्चिमी काफ्रूल (ढाका टाउन) जैसे अनेक छिपने के अड्डे स्थापित कर लिए हैं। उन्होंने एन एल एफ टी के साथ मिलकर ट्रांजिट कैम्प भी स्थापित किए हैं।

रंजन दयामारी के पूछताछ विवरण का उद्धरण संलग्न है तथा इस पर अनुलग्नक-"ख" लिखा गया है।

अभिसाक्षी यह बताना चाहता है कि रंजन दयामारी का समस्त पूछताछ विवरण संवेदनशील स्वरूप का है, अतः, यदि अपेक्षित हो तो वह माननीय अधिकरण के समक्ष समस्त मूल विवरण को सीलबंद लिफाफे में प्रस्तुत करने के लिए इस माननीय अधिकरण की अनुमति प्राप्त करना चाहता है।

इसके अतिरिक्त, एन डी एफ बी शिविरों के निकट ए एन वी सी, एच एन एल सी, एन एस सी एन (आई एम), ए टी टी एफ और एन एल एफ टी जैसे पूर्वोत्तर के अन्य उग्रवादी

संगठनों के इसी प्रकार के शिविरों की मौजूदगी से इस संगठन को चिटगांग पोर्ट मार्ग से होकर विभिन्न एजेंसियों की सहायता से प्राप्त होने वाले शस्त्रों के ट्रान्शिपमेंट में मदद मिलती है। अध्यक्ष रंजन दयामारी (मई, 2010 में गिरफ्तारी के बाद से) सहित बंगलादेश में स्थित एन डी एफ बी नेतृत्व ने एक संप्रभुता सम्पन्न स्वतंत्र बोडोलैण्ड की स्थापना करने पर जोर दिया।

कि बढ़ती आतंकी हिंसा, जिसमें एन डी एफ बी शामिल रहा है, को ध्यान में रखते हुए भारत ने प्रारंभ में इस संगठन को भारत सरकार की दिनांक 23.11.92 की अधिसूचना सं. का.आ. 851 (अ) के तहत, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) के अंतर्गत विधिविरुद्ध संगम के रूप में अधिसूचित किया था। भारत सरकार की दिनांक 23.11.94 की अधिसूचना सं. का. आ. 836 (अ) के तहत प्रतिबंध की अवधि को दो वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया। आतंकवादी हिंसा के लगातार विध्वंसक कृत्यों के कारण, जिसके परिणाम स्वरूप काफी संख्या में मासूम आम नागरिकों, पुलिस/सुरक्षा बल कार्मिकों आदि की हत्याएं हुई और जिनसे शांति-पसन्द नागरिकों के बीच व्यापक रूप से आतंक फैला, एन डी एफ बी पर लगे प्रतिबन्ध को भारत सरकार की दिनांक 23.11.96 की अधिसूचना सं. का. आ. 811 (अ) के तहत दिनांक 22.11.96 से 2 वर्ष की और अवधि के लिए बढ़ा दिया गया। उक्त प्रतिबंध भारत सरकार की दिनांक 23.11.98 की अधिसूचना सं. का. आ. 988 (अ) के तहत पुन: दो वर्ष के लिए बढ़ाया गया। उक्त प्रतिबन्ध को पुन: भारत सरकार की दिनांक 23.11.2000 की अधिसूचना सं. का. आ. 1043 (अ) के तहत और 2 वर्ष के लिए बढ़ाया गया। उक्त प्रतिबन्ध को फिर से भारत सरकार की दिनांक 23.11.2002 की अधिसूचना सं. का. आ. 1224 (अ) के तहत 2 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया। भारत सरकार की दिनांक 23.11.2004 की अधिसूचना सं. का. आ. 1292 (अ) के तहत प्रतिबन्ध को 22.11.2006 तक 2 (दो) वर्ष के लिए बढ़ाया गया। भारत सरकार की दिनांक 23.11.2006 की अधिसूचना सं. का. आ. 1292 (अ) के तहत प्रतिबन्ध की अवधि को बढ़ाकर 22.11.2008 तक कर दिया गया। पुन: दिनांक 23.11.2008 की अधिसूचना सं. का. आ. 2714 (अ) के तहत यह अवधि बढ़ाकर 22.11.10 तक कर दी गई। विधि विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम के अंतर्गत गठित माननीय अधिकरण ने भारत सरकार के प्रतिबन्ध संबंधी आदेश की पुष्टि की थी।

यह कि एन डी एफ बी के उपाध्यक्ष, महासचिव सहित कुछ वरिष्ठ नेताओं की गिरफ्तारी और बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र जिलों (बी टी ए डी) के गठन के बाद इस संगठन के प्रति घटते जनाधार की प्रवृत्ति को देखते हुए एन डी एफ बी ने दिनांक 15.10.2004 से एकपक्षीय युद्ध विराम की घोषणा की। दिनांक 01.06.2005 से एक वर्ष के लिए अभियान के निलंबन संबंधी समझौते पर भारत सरकार, असम सरकार और एन डी एफ बी नेतृत्व ने हस्ताक्षर किए, उक्त समझौते को युद्ध विराम के बाद भी एन डी एफ बी द्वारा अलगाववादी विचारधारा पर कायम रहने

के कारण दिनांक 01.06.2006 से केवल और 6 (छह) माह के लिए बढ़ाया गया है। इस समय युद्ध विराम की विस्तारित अवधि 30.06.2011 तक है।

यह कि 1 जून, 2005 से अभियान के निलंबन के पश्चात् एन डी एफ बी द्वारा की गई हिंसा की प्रवृत्ति से स्पष्ट होता है कि अभियान के निलंबन के पश्चात् 2005 में यह संगठन हिंसा की 05 घटनाओं में संलिप्त रहा जिसमें 2 मासूम नागरिक मारे गए और पुन: वर्ष 2006 में यह संगठन हिंसा की 28 घटनाओं में संलिप्त रहा जिसमें 7 आम नागरिकों की मृत्यु हुई तथा 2007 में इसकी संलिप्तता 36 हिंसक घटनाओं में थी जिनमें 3 आम नागरिकों की मृत्यु हो गई। इसी बीच असम में एन डी एफ बी का नेतृत्व शांति प्रक्रिया में तेजी लाने के उद्देश्य से अपनी मांगों के चार्टर से संप्रभुता के मुद्दे को हटा देने पर विचार कर रहा था। इसे एन डी एफ बी के अध्यक्ष रंजन दायमारी ने, जो उस समय बंगलादेश में अपने ढ़ाका स्थित ठिकाने पर छिपा हुआ था, स्वीकार नहीं किया। इसके परिणाम स्वरूप संप्रभुता के मुद्दे पर नेतृत्व में मतभेद उभर कर सामने आ गए। जबकि रंजन दायमारी अपने समर्थकों के साथ 'संप्रभुता' के मुद्दे को मांगों के चार्टर में बनाए रखने का हिमायती था, वहीं दूसरा गुट, जिसमें धीरेन बोडो, उपाध्यक्ष, गोबिंदा बासुमती, महासचिव आदि सहित अधिकांश शीर्षस्थ नेता थे, संप्रभुता की मांग को छोड़ते हुए भारत के संविधान के दायरे में अपनी समस्याओं के निपटारे का इच्छुक था। इस बारे में एन डी एफ बी के महासचिव गोबिंदा बासुमती ने भारत सरकार को सितम्बर 29/08 में संशोधित मांगों का चार्टर सौंपा जिसमें संप्रभुता का मुद्दा छोड़ दिया गया था। इन परिस्थितियों के मद्देनज़र रंजन दायमारी ने, अपने समर्थकों को एक जुट करते हुए जिनमें कुछ इसके नेतृत्व में असम में और कुछ बंगलादेश में सक्रिय थे, अपनी ताकत का प्रदर्शन करने तथा भारत सरकार पर दबाव बनाने के उद्देश्य से अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में और अधिक हिंसा में संलिप्त हो गया। इसके परिणाम स्वरूप 2008 में हिंसा और अन्य विध्वसंक क्रियाकलापों में तेजी देखी गई। वर्ष 2008 में हिंसा की कुल 128 घटनाएं हुई जिनमें 126 आम नागरिक मारे गए और इसमें गुवाहाटी शहर सहित असम के चार शहरों में 30 अक्टूबर, 2008 को श्रृंखलाबद्ध विस्फोटों की जघन्य घटनाएं हुई जिनमें 89 व्यक्ति मारे गए और 593 व्यक्ति घायल हुए। नेतृत्व में चल रहा मतभेद 15 दिसम्बर, 08 को कोकराझार नामोदिष्ट शिविर में आयोजित आम परिषद की बैठक के नतीजों में उजागर हुआ जहां रंजन दायमारी के स्थान पर धीरेन बोडो को संगठन का अध्यक्ष बनाया गया। इस समय धीरेन बोडो के नेतृत्व में एन डी एफ बी अपने को सीमित रखे हुए है और बात-चीत के जरिए अपनी समस्याओं का हल चाहता है जिसके लिए उन्होंने अपने को एन डी एफ बी (प्रोगेसिव) नाम दिया है और अपने संविधान में संशोधन किए हैं।

तथापि यह गंभीर चिंता का विषय है कि ऐसे कई उदाहरण हैं जब एन डी एफ बी (प्रोगेसिव) अर्थात् एन डी एफ बी (वार्ता समर्थक) गुट के काडर बीमारी, व्यक्तिगत कारणों से अपने घरों को जाने, पारिवारिक समारोहों में जाने का अलग-अलग बहाना बनाकर अपने नामोदिष्ट शिविरों को छोड़कर एन डी एफ बी, जिसे आमतौर पर एन डी एफ बी (रंजन दायमारी गुट) या एन डी एफ बी (आर) या एन डी एफ बी (वार्ता विरोधी गुट) कहा जाता है, में शमिल हो जाते हैं और फिर से हिंसक गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं। उदाहरण के लिए जी. रफीखांग, जो बाकसा जिले में बोर बोरी नामोदिष्ट शिविर का शिविर कमांडर था, बोर बोरी नामोदिष्ट शिविर में रहने वाला विष्णु गोयारी ऊर्फ बिदेई ने शिविर को छोड़कर एन डी एफ बी (वाता विरोधी गुट) द्वारा शुरू की गई शांति प्रक्रिया के विरोधी उपर्युक्त एन डी एफ बी (रंजन दायमारी मुट) के साथ शामिल हो गया।

एन डी एफ बी के उपाध्यक्ष जी. रफीखांग द्वारा 14 सितम्बर, 2010 को शहीदी दिवस पर दिए गए भाषण से बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि संगठन वार्ता-समर्थक और वार्ता विरोधी दो गुटों में बंट गया है जिसमें वार्ता विरोधी गुट ने अपनी अलगाववादी विचारधारा और शासन के खिलाफ़ हिंसक गतिविधियां जारी रखने का प्रण लिया।

जी. रफीखांग के उपर्युक्त वक्तव्य की प्रति **अनुलग्नक ग** पर संलग्न है।

राज्य के विभिन्न भागों में एन डी एफ बी (रंजन दायमारी) द्वारा जबरन धन वसूली के अनेक उदाहरण मौजूद हैं। वे लोगों, व्यापारियों और ठेकेदारों से गुप्त तरीके से धनराशि एकत्र कर रहे हैं। संगठन के काडर, संगठन के लिए चंदे के नाम पर अनेकों नागरिकों और चल रही परियोजनाओं के प्रमुखों आदि को मांग-पत्र जारी करने में संलिप्त पाए गए हैं। संगठन ने चंदे के नाम पर जबरन धनवसूली की यह प्रक्रिया अपनाई हुई है। शस्त्रों और गोला बारुद से पूरी तरह से सुसज्जित इनके काडर बंदूक की नोक पर लोगों, व्यापारियों आदि से जबरन धनवसूली करते हैं। वह उस व्यक्ति को मार देने में नहीं झिझकते हैं जो मांगी गई राशि देने में विफल रहते हैं। इस संबंध में यह उल्लेख किया जाता है कि 23 जुलाई, 2009 को लगभग 1130 बजे, अपने चेहरों को कपड़े से ढ़के हुए 3 (तीन) संदिग्ध एन डी एफ बी (आर) उग्रवादियों ने सोनितपुर जिले के ढेकीजुली पुलिस थाने के अंतर्गत जोर पुकुरी से आई आई आर एम (इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटेड रिसोर्स मैनेजमेंट) के कर्मचारी दीपक गुरूंग (25) पुत्र रीतु गुरूंग, ग्राम मिजिकाजन, पुलिस थाना - विश्वनाथ चरियाली का अपहरण कर लिया। इस संबंध में मिली आगे की सूचना के अनुसार, पुलिस/सेना ने गुप्त सूचना के आधार पर दीपक गुरूंग को लौडंगी जंगल क्षेत्र (ढेकीयाजुली पुलिस थाना) से बरामद कर लिया। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 365/34 के अंतर्गत ढेकीयाजुली पुलिस थाना के मामला सं. 219/09 से है और 22

मार्च, 2010 को संदिग्ध एन डी एफ बी (आर) उग्रवादियों ने बिहारी मुस्लिम समुदाय (गद्दा बनाने वाले) के मो. आलम (25) पुत्र मो. मोइनुद्दीन और मो. गोलाब पुत्र मो. नसीरूद्दीन नामक दो व्यक्तियों, जो सोनितपुर जिले के रंगपारा पुलिस थाने के अंतर्गत रंगपारा शहर के वार्ड नं. 2 में एक किराए के मकान में ठहरे हुए थे, का अपहरण कर लिया। पुलिस ने 25.3.10 को रंगपारा पुलिस थाने के अंतर्गत ग्राम गौरंगजुली पहाड़ के पास के एक जंगल से उनके शव बरामद किए।

3 अगस्त, 2010 को लगभग 2030 बजे सूचना मिलने पर तेजपुर पुलिस ने तेजपुर बस स्टैंड से कथलगुड़ी (सीलापत्थर पुलिस थाना, धेमाजी जिला) की सुश्री ऊषा रामचियरी उर्फ उइन्गश्री जियाबाड़ी की श्रीमती अरुणा बासुमतारी, नं. 4 बतासीपुर की श्रीमती मीना बासुमतारी और अलयसीरी जियाबाड़ी की श्रीमती उर्मिला गयारी, ये सभी ढेकीयाजुली पुलिस थाने के अंतर्गत हैं, नामक एन डी एफ बी (आर) के 4 (चार) महिला काडरों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने उनके पास से 12,16,153/-रु. (बारह लाख सोलह हजार और एक सौ तिरपन रु.), एक मोबाइल फोन और कुछ संदिग्ध दस्तावेज भी बरामद किए। इसका संबंध विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 10/13 के साथ पठित भारतीय दण्ड संहिता की धारा 120(ख)/121/121(क)/384 के अंतर्गत तेजपुर पुलिस थाना मामला सं. 726/10 से है।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

यह कि एन डी एफ बी (रंजन दायमारी गुट) (जिसे संक्षिप्त रूप में "एन डी एफ बी (आर)" कहा गया है) राजनैतिक नेताओं, मासूम लोगों पर हमला जारी रखे हुए है:

दिनांक 24 अप्रैल, 2009 को लगभग 1130 बजे जब कोकराझार एच पी सी के लिए उम्मीवार श्री एस. के. बीविसमुथियारी, बी टी ए डी के एक कार्यकारी सदस्य और अन्य लोगों का काफिला गोसांईगांव की तरफ से तिपकई पानबारी की तरफ बढ़ रहा था, उसी समय कोकराझार जिले के गोसांईगांव पुलिस थाने के अंतर्गत नसराईबारी में संदिग्ध एन डी एफ बी (आर) काडरों ने उन पर घात लगाकर हमला किया और वहां 2 (दो) व्यक्ति (पुलिस कार्मिक-1, आम नागरिक-1) मारे गए तथा 9 (पुलिस कार्मिक-5, आम नागरिक-4) घायल हो गए। श्री एस. के. बीविसमुथियारी को कोई चोट नहीं आई। घायल व्यक्तियों को ईलाज के लिए गोसाईगांव अस्पताल ले जाया गया। इसके अतिरिक्त, 4 अक्तूबर, 2009 को लगभग 1800 बजे एन डी एफ बी (आर) काडरों ने सोनितपुर जिले के विश्वनाथ चरियाली के अंतर्गत नं. 2 भीमाजुली गांव और नं. 2 डिलीचांग में मासूम लोगों पर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाकर आतंक का माहौल व्याप्त कर दिया। इसमें 12 (बारह) लोगों की मृत्यु हो गई और 10 (दस) अन्य लोग घायल हुए।

इसका संबंध आयुध अधिनियम की धारा 27(3) और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 10/13 के साथ पठित भारतीय दण्ड संहिता की धारा 120(ख)/121/121(क)/122/324/326/307 के अंतर्गत विश्वनाथ चरियाली पुलिस थाने के मामला सं. 151/09 से है।

29/30-06-09 को एन डी एफ बी (आर) काडरों ने सोनितपुर जिले के रंगपारा पुलिस थाने के अंतर्गत नं.1 नहोरोनी ग्रांट में हिन्दी भाषी 4 लोगों की निर्मम हत्या कर दी। इस मामले का संबंध आयुध अधिनियम की धारा 27(3) और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 10/13 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 120(ख)/121/121(क)/122/324/326/307 के अंतर्गत विश्वनाथ चरियाली पुलिस थाने के मामला सं. 151/09 से है।

<u>विदेशी धरती पर भर्ती और प्रशिक्षण:</u> एन डी एफ बी (आर) नेतृत्व, संप्रभुता संपन्न बोडोलैंड बनाने संबंधी अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने संगठनात्मक आधार को सुदृढ़ करने संबंधी उद्देश्य के मद्देनजर अपने संगठन में नए काडरों की भर्ती कर रहा है। युद्ध-विराम की अवधि में इस संगठन ने संगठन हेतु राज्य के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में युवाओं की भर्ती की है। इन नए रंगरूटों को शस्त्रों, गोलाबारूद आदि चलाने में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए बैचों में बंगलादेश भेजा गया है। उन्हें बंगलादेश में एन डी एफ बी (आर) के विभिन्न शिविरों में प्रशिक्षण दिया गया। अक्तूबर, 09 में एक मैतई संगठन के वाई के एल की सहायता से तामू, म्यांमार में एक नया प्रशिक्षण शिविर खोला गया है जहां 54 (चौवन) नए काडरों सहित 64 (चौसठ) काडरों ने के वाई के एल के अंतर्गत शस्त्र-प्रशिक्षण प्राप्त किया। रंजन दायमारी की पूछताछ संबंधी वक्तव्य के उद्धरण संलग्न हैं। <u>अनुलग्नक - "ङ"</u>।

अभिसाक्षी यह कहना चाहता है कि रंजन दायमारी से पूछताछ से संबंधित पूरा वक्तव्य संवदेनशील प्रकृति का है अत: अभिसाक्षी, माननीय अधिकरण से यह अनुरोध करता है कि यदि अपेक्षित हो, उसे पूरे मूल वक्तव्य को सीलबंद लिफाफे में माननीय अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए।

यह कि उपर्युक्त प्रतिबंध लगाए जाने के दौरान, एन डी एफ बी ने, सुरक्षा बलों, कानून का पालन करने वाले लोगों पर हमलों, अपहरण, जबरन धनवसूली और सार्वजनिक संपत्ति को क्षति पहुँचाने सहित आतंकवादी हिंसा के अपने क्रियाकलापों को बढ़ाकर अपनी अलगाववादी गतिविधियां तथा शासन के खिलाफ युद्ध जारी रखे हुए है। दिनांक 23.11.2008 से 22.11.2010 तक की प्रतिबन्ध की अवधि के दौरान एन डी एफ बी ने कुल 99 व्यक्तियों की

हत्या की और उसके जानलेवा प्रयासों में 146 व्यक्तियों को चोटें आई। वह हिंसा की 323 घटनाओं में शामिल है। उसने फिरौती के लिए 51 व्यक्तियों का अपहरण भी किया।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

एन डी एफ बी काडरों ने एक नए सहायक उग्रवादी दल का गठन किया है जो छिपने के सुरक्षित ठिकाने के लिए मिशिंग्स आबादी वाले क्षेत्रों में घुसपैठ बनाने के उद्देश्य से "लिब्रेशन डेमोक्रेटिक कांउसिल ऑफ़ दि मिशिंग" (एल डी सी एम)" नाम से धेमाजी जिले तथा जोरहट जिले के लखीमपुर के एक भाग तथा मजुली के उत्तरी भाग में अपनी गतिविधियां चला रहा है। एल डी सी एम के लगभग 25 काडरों को असम-अरुणाचल प्रदेश सीमा पर एक अंदरूनी स्थान पर स्थित एन डी एफ बी के शिविर में प्रशिक्षण दिया गया।

रंजन दायमारी की पूछताछ से संबंधित वक्तव्य और अहित स्वरगियारी से अभियान की जानकारी से संबधित वक्तव्य के उद्धरण संलग्न हैं और ये <u>अनुलग्नक - "छ"</u> के रूप में चिन्हित है।

अभिसाक्षी यह कहना चाहता है कि रंजन दायमारी से पूछनाछ से संबंधित पूरा वक्तव्य संवेदनशील प्रकृति का है अत: अभिसाक्षी, माननीय अधिकरण से अनुरोध करता है कि यदि अपेक्षित हो, उसे पूरे मूल वक्तव्य को सीलबंद लिफाफे में माननीय अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए।

यह कि एन डी एफ बी की गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार से है:

<u>राज्य के अन्य उग्रवादी संगठनों के साथ सांठ-गांठ:</u>

पूर्व में एन डी एफ बी के उल्फा के साथ केवल राजनयिक संबंध थे। परन्तु 2008 से जब एन डी एफ बी बंटवारे के कगार पर था और एन डी एफ बी (आर) का जन्म हो रहा था, नया गुट स्वयं को उल्फा के निकट ले आया। अब घटते जनाधार के संदर्भ में अपने साझा आशय की प्राप्ति के उद्देश्य से दोनो ने प्रचालनात्मक संबंध विकसित कर लिए हैं।

कुछ समय से एन डी एफ बी ने के एल ओ/एन एस सी एन (आई एम)/के वाई के एल/एन एल एफ टी/एन एस सी एन (के)/एच एन एल सी/के पी एफ/यू एन एल एफ/ए एन वी सी/जी एन एल एफ और एल डी सी एम के साथ सांठ-गांठ कर ली है। रंजन दायमारी की पूछताछ से संबंधित वक्तव्य के उद्धरण संलग्न है और उक्त को <u>अनुलग्नक - "ज"</u> के रूप में चिन्हित किया गया है। अभिसाक्षी यह कहना चाहता है कि रंजन दायमारी की पूछताछ से संबंधित पूरा वक्तव्य संवेदनशील प्रकृति का है, अत:

अभिसाक्षी, माननीय अधिकरण से अनुरोध करता है कि यदि अपेक्षित हो, उसे पूरे मूल वक्तव्य को सीलबंद लिफाफे में माननीय अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए।

क) <u>मेघालय में एन डी एफ बी की गतिविधियां</u>

युद्ध विराम की अवधि के बाद एन डी एफ बी ने मेघालय के एक उग्रवादी संगठन एच एन एल सी के साथ नापाक संबंध स्थापित कर लिए। यह एच एन एल सी के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार से मेघालय के भीतर अपहरण, विस्फोट, हथियारों के जखीरे की तस्करी आदि की कई घटनाओं में संलिप्त रहा है। इस सांठ-गांठ का गंभीर पहलू यह है कि एच एन एल सी रंजन दायमारी एन डी एफ बी के उन समर्थक काडरों को संभार तंत्र संबंधी सहायता प्रदान कर रहा है जो असम में अपराध करने के पश्चात् मेघालय में प्रवेश कर जाते हैं।

दूसरी ओर मेघालय में पूर्व और पश्चिम गारो हिल्स में मजबूत जड़ें जमाए हुए "लिब्रेशन अचीक इलीट फोर्स (एल ए ई एफ)" नामक एक नवगठित संगठन ने एन डी एफ बी के साथ संबंध स्थापित कर लिए हैं। ये दोनों संगठन समय-समय पर अपहरण के रास्ते जबरन धनवसूली करते हैं। ये दोनों दीमापुर और बंगलादेश से लगी अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पार से हथियारों की तस्करी में एक दूसरे के सहयोगी बन गए हैं।

उन्होंने शिलांग में एक व्यावसायी के बेटे का अपहरण का असफल प्रयास भी किया। तथापि, मेघालय पुलिस की त्वरित कार्रवाई से ये अपने प्रयास में विफल रहे। पुलिस उनमें से दो लोगों को गिरफ्तार करने में सफल रही।

पुलिस अधीक्षक, ईस्ट खासी हिल्स जिला, शिलांग, मेघालय की रिपोर्ट <u>अनुलग्नक - "झ"</u> के रूप में चिन्हित है।

ख) <u>अरुणाचल प्रदेश में एन डी एफ बी की गतिविधियां:</u>

यह नोट करना प्रासंगिक होगा कि एन डी एफ बी (आर) काडर, फिरौती के लिए अपहरण की अनेक घटनाओं में संलिप्त हैं जिससे विशेष रूप से सोनितपुर जिले में इसकी प्रवृति बढ़ती हुई दिखी है। अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती राज्य से 12 मई, 2010 को महाराष्ट्र के आई एफ एस अधिकारी श्री विलास बारडेकर के अपहरण से जुड़े बड़े कांड से उनकी हिम्मत काफी बढ़ी है। अधिकारी को उन्होंने

अपनी हिरासत में अन्तर-राज्य सीमा के वन क्षेत्रों में रखा और ऐसी सूचना है कि फिरौती की एक बड़ी रकम मिलने के बाद संगठन ने उस अधिकारी को रिहा किया।

पुलिस अधीक्षक, उदालगिरी की रिपोर्ट अनुलग्नक - "ञ" के रूप में संलग्न है।

घ) भारत-भूटान सीमा पर एन डी एफ बी की गतिविधियां

(i) इसके अतिरिक्त यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि 18/19 जुलाई/09 की रात्रि में एन डी एफ बी (आर) काडरों में एक समूह (8/9), जो ए के-श्रृंखला के हथियारों से लैस था, ने असम के चिरांग जिले की सीमा के पास के क्षेत्र में स्थित सीमा स्तंभ नं. 198/4 से भूटान के फॉरेस्ट गार्डों से 4 (चार) एस एल आर छीन लिए।

(ii) चिरांग जिले के सिकलाजन में 26 जुलाई, 2010 को सशस्त्र सीमा बल की एक गश्त पार्टी पर हमला करके उन्होंने अपनी आग्नेयास्त्र क्षमता का परिचय दिया और एक सहायक कमांडेंट सहित सशस्त्र सीमा बल के 4 (चार) कार्मिकों को मार दिया तथा 3 (तीन) अन्य को घायल कर दिया। पुलिस अधीक्षक, चिरांग की रिपोर्ट अनुलग्नक - "ट" के रूप में संलग्न है।

यह कि वर्ष 2009 में एन डी एफ बी (आर) के स्वयं-भू अध्यक्ष रंजन दायमारी ने बंगलादेश में स्थित छिपने के ठिकाने में 11 महत्वपूर्ण उच्च पदस्थ काडरों के साथ राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद को पुनगर्ठित किया।

दिनांक 18.11.09 को जारी प्रेस विज्ञप्ति में एन डी एफ बी (आर) 29 और 30 अक्तूबर, 2009 को हुई अपनी आम बैठक के संकल्प को अंगीकार किया। बैठक में बोडोलैंड तथा पश्चिम दक्षिण पूर्व एशिया, जो तथाकथित "पूर्वोतर भारत" के समानार्थ है, को स्वतंत्र कराने के लिए जोश और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने और संघर्ष करने का संकल्प और प्रण लिया गया। दिनांक 18.11.09 की प्रेस विज्ञप्ति अनुलग्नक - "ठ" के रूप में संलग्न है।

यह कि बोडोलैंड सेना और राष्ट्रीय परिषद् के शीर्षस्थ पदाधिकारियों के साथ 17.06.10 को हुई एन डी एफ बी (आर) की आम बैठक में आठ (8) सूची संकल्प पारित किया गया। इनमें से अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनागत नीति संबंधी संकल्प यह था कि सरकारी कार्यालयों, पुलों, विद्युत पावरहाउस जैसी सरकारी संपत्तियों, अन्य सरकारी संपत्तियों, शत्रु की संपत्तियों और परिवहन और संचार के साधनों को नष्ट करने का निर्णय लिया गया।

इन निर्णयों के क्रम में इसने विस्फोट करके अपनी क्षमता प्रदर्शित की। हाल में इसने जुलाई, 2010 के पहले सप्ताह में रेल की पटरियों पर बड़ी संख्या में विस्फोट किए। ऐसा ही एक विस्फोट 08 जुलाई, 2010 को कोकराझार जिले में मदाती पुल पर रेल की पटरी पर किया गया जिससे गरीब रथ एक्सप्रेस को क्षति पहुँची और एक बच्चे की मृत्यु हो गई।

विदेशी कूटनीति और विदेशी आधार को सुदृढ़ करने के संबंध में बैठक में किए गए एक अन्य संकल्प के अनुसरण में आम बैठक में एक नई रणनीति बनाई गई कि 5 काडरों सहित प्रतिनिधि के रूप में एस एस लेफ्टिनेंट जी. ओनथॉव को नेपाल देश में संगठन के लिए नया आधार बनाने से संबंधित सर्वेक्षण कार्य के लिए नेपाल भेजा जाए। विभिन्न समाचार पत्रों को ई-मेल के जरिए भेजी गई दिनांक 17.06.10 की एन डी एफ बी (आर) की आम बैठक के संकल्प की प्रति <u>अनुलग्नक - "ड़"</u> के रूप में चिन्हित है।

यह कि एन डी एफ बी के शीर्षस्थ पदाधिकारियों ने अपनी तथाकथित वैध मांग को पूरा करने के लिए भारत संघ से संघर्ष के लिए एन डी एफ बी की सहायता हेतु बंगलादेश और चीन की सरकारों से संपर्क करने का विचार कर रखा है।

दैनिक बटोरी के दिनांक 04.10.09 के संस्करण की कतरन <u>अनुलग्नक - "ढ"</u> के रूप में संलग्न है।

तथापि, सुरक्षा बलों और आसूचना एजेंसियों के लगातार प्रयासों से एन डी एफ बी (आर) के मुखिया रंजन दायमारी को राज्य पुलिस ने 1 मई, 2010 को गिरफ्तार कर लिया। तब से उससे असम की सभी हिंसक गतिविधियों में उसकी भूमिका के बारे में गहन पूछताछ की जा रही है। उसे 30 अक्तूबर, 2008 को सी बी आई द्वारा श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोटों के मामले में तथा राज्य पुलिस द्वारा, पुलिस चौकी सहित असम में अन्य विध्वसंक/ आपराधिक कृत्यों से संबंधित अनेक मामलों में गिरफ्तार किया गया था।

एन डी एफ बी के मुखिया रंजन दायमारी की गिरफ्तारी के पश्चात् एन डी एफ बी नेतृत्व को जबर्दस्त धक्का लगा है। तथापि आसूचना इन्पुट्स से स्पष्ट होता है कि शेष रहा नेतृत्व घोर निराशा की स्थिति में फील्ड काडरों के टूटते मनोबल को ऊंचा करने के लिए उन्हें राज्य के विभिन्न भागों को जहां तक संभव हो सके अधिकाधिक आई ई डी विस्फोट करने की ओर प्रेरित कर रहा है। तदनुसार 1 मई, 2010 को रंजन दायमारी की गिरफ्तारी के पश्चात एन डी एफ बी ने हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया है जिनमें मासूम जानें गई हैं। अत्यधिक विश्वसनीय आसूचना से यह भी स्पष्ट होता है कि बंगलादेश/म्यांमार आधारित एन डी एफ बी (आर) के अनेक महत्वपूर्ण काडर अर्थात् दानस्वारांग, संगबीजीत, बिदेई, लैफेंग, नेसौंग आदि

जबरन धनवसूली और फिरौती के लिए अपहरण सहित और अधिक आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त होने का प्रयास कर रहे हैं।

संगठन का आक्रामक रूख, एन डी एफ बी के डिप्टी कमांडर-इन-चीफ बी. ज्वांगखांग ऊर्फ जार्ज बोडो ऊर्फ जॉन द्वारा दिए गए 01.11.2010 के ई-मेल वक्तव्य से उजागर होता है जिसमें उसने भारत सरकार और असम सरकार को धमकी दी है कि यदि भारतीय सेना एक भी बोडो व्यक्ति अथवा एन डी एफ बी काडर को मारती है तो एन डी एफ बी बीस अथवा उससे भी अधिक भारतीयों को मौत के घाट उतार देगा।

इस वक्तव्य के क्रम में 8 नवम्बर, 2010 को सोनितपुर जिले में सुरक्षा बल (अंग्रेजी में संक्षिप्त रूप से "एस एफ") से हुई मुठभेड़ में मारे गए एक एन डी एफ बी (आर) काडर की मृत्यु की आड़ में एन डी एफ बी ने 8 और 9 नवम्बर, 2010 को सोनितपुर, उदलगिरी, बक्सा, चिरांग, कोकराझार और कार्बी-आंगलांग जिलों में बड़े पैमाने पर हिंसा की जिनमें 9 घटनाओं में 12 (बारह) हिन्दी-भाषी लोग सहित 22 (बाईस) मासूम लोग मारे गए और 13 व्यक्ति घायल हो गए।

समाचार पत्र में प्रकाशित बी. ज्वांगखांग उर्फ जार्ज बोडो उर्फ जॉर्ज के ई-मेल वक्तव्य की प्रति **अनुलग्नक - "ण"** के रूप में संलग्न है।

यह कि हिंसक घटनाओं, जिनमें एन डी एफ बी (आर) संलिप्त रहा है, के आंकड़े **अनुलग्नक - "ढ"** में उल्लिखित हैं।"

7. अपने साक्ष्य में एस डब्ल्यू-14 के रूप में संदर्भित, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 10/13 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 384 के अंतर्गत एस ओ यू पुलिस थाने के मामला सं. 2/98 के संबंध में गिरफ्तार किए गए गॉव ओदलकाहीबारी के स्व. स्टीफन दायमारी के पुत्र रंजन दायमारी उर्फ डी. आर. नबिया के विस्फोटक भाषण के उद्धरण को भी नोट किया जाना आवश्यक है। पुलिस द्वारा अपनी गिरफ्तारी के पश्चात् अपनी पूछताछ के दौरान अपने बयान में उसने जो दावा किया वह निम्नलिखित है:-

"बंगलादेश में शिविर और छिपने के ठिकाने:

1. **बोहोलसोरी शिविर:-** यह चिट्टागौंग पर्वतीय क्षेत्र के अंतर्गत खगरासारी जिले में है। खगरासारी से दीघीनाला होकर बगईहाट जाने में वाहन से लगभग एक घंटे का समय लगता है। बगईहाट बाजार से बरसात के दिनों में पावरबोट (बहाव के विरुद्ध) द्वारा पूर्वोत्तर की तरफ बढ़ने में लगभग 4/5 घंटे तथा जाड़े

के मौसम में पावरबोट द्वारा लगभग 6/7 घंटे का समय लगता है। नदी का नाम बोलसोरी है। नौका जिस स्थान पर पहुंचती है उसे हम "बोट कमांड" कहते हैं। हमने एक पावरबोट रखा हुआ है। 3/4 एन डी एफ बी काडर वहां मौजूद रहते हैं। बोट कमांड से लगा हमारा एक कृषि फार्म है जहां हमारे काडर अपनी इस्तेमाल के लिए हरी सब्जियां लगाते हैं। बोट कमांड से नीचे की ओर बोहोलसोरी बाजार है जहां लगभग 4/5 दुकानें हैं। पॉवरबोट द्वारा बोहोलसोरी बाजार से बोट कमांड जाने में लगभग 1.5/2 घंटा लगता है। बोहोलसोरी बाजार से लगे त्रिपुरी और चकमा गांव हैं। पहले इस शिविर को "थाम थीम कैम्प" अर्थात् तैयारी शिविर कहा जाता था।

बोट कमांड से लगभग 20 मिनिट पश्चिम दिशा की ओर पैदल चलने पर एच एन एल सी का शिविर स्थित है। वहां 303 राइफलें/एस एल आर के साथ लगभग 6/8 एच एन एल सी काडर हैं।

एच एन एल सी शिविर से पश्चिम की ओर लगभग 20/25 मिनिट पैदल चलने पर हमारा एन डी एफ बी (ए टी) शिविर है। इस शिविर को अब परिषद् मुख्यालय शिविर के नाम से जाना जाता है।

<u>शिविर में रहने वाले:- (30.4.2010 की स्थिति के अनुसार)</u>

1. एस एस सेकेंड एल टी बी. थुलुंगा (28/30) उर्फ थुंगरी बोडो, बक्सा जिला शिविर कमांडर
2. बोंगलगांव के पास के एस एस एल टी बी. फवारदन (32)
3. बक्सा/नलबारी जिले के एस एस एल टी बी. ओखरी (31)
4. पत्नी और पुत्र सहित बारपेला रोड, गांव खगराबारी के एस एस कैप्टन जी रफीखांग (33) उर्फ राजेश गोरारी - वित्त सचिव
5. कोकराझार जिले के रूनीखाता क्षेत्र का एन. दिनश्रिगा (32) - महासचिव
6. सिला बालीगांव, पुलिस थाना सिलापत्थर, धेमाजी के बी. ओंजालु (31) 2 अभिराम बासुमतारी - सूचना एवं प्रचार सचिव
7. बोरोबोरी पुलिस थाना क्षेत्र (बरामा) बक्सा जिले का पी टी ई बी. बीठोराय (26) - महिला काडरों में सबसे वरिष्ठ - कोकराझार जिले की एस एस सार्जेंट बी. जारंग (28)
8. चिरांग जिले का बी एस एम बी. ओखा हददी (29)
9. और 6/8 महिला काडरों सहित 60 अन्य लोग हैं जिनके नाम नहीं मालूम हैं।

<u>हथियारों का विवरण:</u>

ए के 56 राइफल	-	12
अर्द्ध स्वचालित राइफल	-	3
स्निपर राइफल	-	1
9 मि मी पिस्तौल	-	1
विस्फोटक	-	शून्य
जेनरेटर	-	1
एच एफ सेट	-	1
आर टी सेट	-	4/5
मोबाइल फोन	-	लगभग 10 (एयर सेल, ग्रामीण और बांग्लालिंक)
लकड़ी की पावरबोट	-	1
पोर्टेबल टी वी	-	1

क्रम सं. 4, 5 और 6 पर उल्लिखित व्यक्ति खगरासारी शहर के निकट खगरापुर में एक किराए के मकान में भी रह रहे हैं।

<u>खगरासारी शहर के पास खगरापुर में छिपने का ठिकाना:-</u>

एन सी सदस्य जी रफीखांग, अपनी पत्नी और बेटे के साथ तथा डी. दिनथ्रिगा और बी. ओंजालु किराए के मकान में शरण लिए हुए हैं। वे मुख्य शिविर में भी रहते हैं।

<u>मणिकुरा, पुलिस थाना-हलोवाघाट में ट्रांजिट शिविर:-</u>

मणिकुरा ट्रांजिट, भारत-बंगला सीमा से लगभग 5/6 कि.मी. की दूरी पर है। मेरे अनुदेश पर शरण लेने तथा हथियार और गोलाबारुद को जमा करने के लिए एस एस एल टी बी. सतबंग्सा उर्फ सुशील ब्रोंग उर्फ सुशील बोडो ने 1997 में अपने ससुर प्रबीन ब्रोंग के नाम से 1 लाख 40 हजार टका में आई. एस. बीघा जमीन खरीदी थी। सुशील ने वहां असम की तरह का मकान बनवाया है। हमने उसे 2004 तक ट्रांजिट शिविर के रूप में इस्तेमाल किया था। अब वहां सुशील की पत्नी काजोल ब्रोंग और उनकी बेटी रह रही है। 2004 में सुशील गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया था। दिसम्बर/04 में अर्थात 6/7 माह के बाद उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया। उसकी गिरफ्तारी के बाद हमने उस मकान का इस्तेमाल नहीं किया।

जिंगयाली पुलिस थाना, जिला शेरपुर के अंतर्गत नोक्सी-हलचाटी शरण-स्थल:-

हमारे काडर नोक्सी और हलचाटी गांव में शरण लेते हैं जो भारत-बंगलादेश सीमा से लगे हुए हैं। दोनों गांवों में होजोंग और कोच लोगों की आबादी है। वहां दो एन डी एफ बी काडर रहते हैं ताकि वे भारत-बंगलादेश सीमा को पार करने में हमारे काडरों की सहायता कर सकें।

खगरासारी शहर के निकट खगरापुर में शरण-स्थल एवं ट्रांजिट शिविर:

हमारे एन. सी. नेता अर्थात् परिवार सहित जी. फिफीखांग, एन. दिंथ्रिगा (महासचिव), बी. औंजालु (सूचना एवं प्रचार सचिव) त्रिपुरी लोगों के किराए के मकान में शरण लेते हैं।

वेस्ट कफरूल, ढाका सिटी स्थित एन डी एफ बी (ए टी) कार्यालय एवं ट्रांजिट शिविर:

एन सी सदस्य एन. जनसरंग (गोसांईगांव क्षेत्र का) वर्ष 2008 से एन डी एफ बी लेखापाल एन. अंजाद (बोंगईगांव के निकट का) के साथ इस कार्यालय का प्रभारी है।

इससे पूर्व हमारा कार्यालय सियरोपारा, ढाका में था। काफरूल स्थित हमारा कार्यालय 6 तल वाले भवन के सबसे ऊपर के तल पर स्थित है।

मेरा किराए का शरण-स्थल:

5 तल वाले भवन के
5वें तल पर फ्लैट है।
मकान नं. 35, रोड नं. 13,
सेक्टर-13, उत्तरा, ढाका सिटी,
मालिक मि. और मिसेज खान

2004 के मध्य से अपनी गिरफ्तारी की तारीख (30.4.2010) तक मैं अपनी पत्नी, बेटे और बेटी के साथ एक किराए के एक फ्लैट में रहता था। इसका किराया 15,000 टका प्रति माह था।

मैं प्रत्येक एक या दो वर्ष पर अपना आवास बदल लेता था। वर्ष 1993 से 2003 तक मैं किराए के मकानों में अपने परिवार के साथ ढाका सिटी के भीतर के क्षेत्रों अर्थात् शाहजंहापुर, बेली रोड, सिद्धेश्वरी अपार्टमेंट, बंगला मोटर्स, डी एच ओ एस महाकाली एरिया में रहा।

एन डी एफ बी (ए टी) शिविर के निकट बोहोलसोरी क्षेत्र में अन्य आतंकवादी संगठनों के शिविर हैं।

<u>एन एस सी एन (आई एम) शिविर:-</u>

बगईहाट बाजार से पावरबोट द्वारा बरसात के दिनों में बोहोलसोरी नदी से लगभग 2 से 2.5 घंटे का समय लगता है। बोहोलसोरी नदी से पश्चिम की ओर लगभग 1 घंटा पैदल चलने पर एन एस सी एन (आई एम) शिविर है।

एन एस सी एन (आई एम) शिविर में लगभग 30/35 काडर हैं। वर्ष 2002 में बंगलादेश सेना ने एन एस सी एन (आई एम) शिविर पर छापा मारा था। एन एस सी एन (आई एम) अपने आने-जाने के लिए नदी में नौका भी रखते हैं। मैं उस शिविर में कभी भी नहीं गया।

एन एस सी एन (आई एम) शिविर से पावरबोट द्वारा लगभग 1 घंटे में बोहोलसोरी शिविर पहुंचा जा सकता है।

<u>एच एन एल सी शिविर:-</u>

बोहोलसोरी बाजार से हमारे बोट कमांड पहुंचने में नौका (बहाव के विपरीत) द्वारा लगभग 1 घंटा लगता है। वहां से लगभग 20 मिनट पैदल चलने पर एच एन एल सी शिविर है (नदी तट से पश्चिम में)। वहां 303 राइफलें और एस एल आर के साथ एच एन एल सी के लगभग 6/8 काडर मौजूद हैं।

<u>के वाई के एल शिविर:</u>

एन डी एफ बी (ए टी) बोट कमांड से उत्तर की ओर पावरबोट से लगभग 1.5/2 घंटे की यात्रा के बाद के वाई के एल शिविर आता है। नदी के किनारे से लगभग 45/50 मिनट चलने पर पश्चिमी के वाई के एल शिविर स्थित है। यहां के वाई के एल के लगभग 30/35 काडर मौजूद हैं। उन्होंने 2006 में यह शिविर स्थापित किया था। उसी वर्ष मैं उस शिविर में गया था। मुझे उनके हथियारों की मात्रा और शिविर में रहने वाले नेताओं के बारे में जानकारी नहीं है। वे नदी तट पर नौका भी रखते हैं।

<u>एन एल एफ टी मुख्यालय शिविर:</u>

के वाई के एल शिविर से लगभग 30 मिनट पैदल चलने पर एन एल एफ टी शिविर है। मैं जनवरी, 06 में उस शिविर में गया था। यह शिविर के वाई के एल शिविर के उत्तर में है। इस शिविर में 150 से अधिक सशस्त्र काडर मौजूद हैं। मुख्यालय शिविर के पास रक्षा चौकियां और अन्य छोटे शिविर हो सकते हैं। इस शिविर से लगभग 2 दिन पैदल चलने पर त्रिपुरा सीमा (भारत-बंगलादेश सीमा) पहुंचा जा सकता है। मेरी यात्रा के दौरान शिविर में एन एल एफ टी का अध्यक्ष बाइथांग देव बर्मा मौजूद था।

पहले सभी शिविर आर टी सेट के जरिए एक दूसरे के संपर्क में रहते थे। हमारी कोई भी साझा रक्षा चौकी नहीं है। यह उल्लेख किया जाता है कि बगईघाट बाजार के निकट बंगलादेश सेना का शिविर है। जहां तक मेरी जानकारी है खगरासारी क्षेत्र में उल्फा का कोई शिविर नहीं है।

<u>प्रशिक्षणर्थियों का अन्तिम बैच:</u>

जनवरी/फरवरी, 2010 में खगरासारी, बंगलादेश में बोहोलसारी शिविर में 38 काडरों को प्रशिक्षण दिया गया जिनमें से 10/12 काडर जबरन धनवसूली और विध्वसंक गतिविधियों के लिए पहले ही असम भेजे जा चुके हैं।

फरवरी/मार्च, 2010 में उप काडरों को म्यांमार में प्रशिक्षण दिया गया।

हम उन्हें भारत संघ के खिलाफ़ युद्ध के लिए परिष्कृत हथियार रखने और चलाने, भारी विस्फोटकों को बनाने और विस्फोट करने तथा गुरिल्ला युद्ध कौशल में पहले ही प्रशिक्षण दे चुके हैं।

वर्ष 1993 में मैं बंगलादेश गया था और मुख्यत: ढाका सिटी में किराए के मकान में रहने की व्यवस्था की थी। मेरे अनुमोदन और निर्णय से हमारे नेता और काडर बंगलादेश के विभिन्न जगहों पर ट्रांजिट शिविर, छिपने के ठिकाने बनाते हैं तथा हथियार और गोलाबारूद को रखने तथा उसे लाने-जे जाने के लिए थांसी, अली कदम आदि में ट्रांजिट शिविर स्थापित किए हैं। वर्ष 1997 में बोहोलसोरी के निकट खगरासारी में एन डी एफ बी के शिविर स्थापित किए गए थे।

वर्ष 2002 में हमने अपने काडरों को हथियारों में और गुरिल्ला प्रशिक्षण देना शुरू किया था।

उदाहरण के तौर पर - 2002 में - 30/32 काडरों का एक बैच

2005 में - 30/35 काडरों का एक बैच

2007 में - 30/35 काडरों का एक बैच

सामान्यत: असम से नए काडरों को नोक्सी सीमा से लगे मेघालय के पश्चिम गारो हिल्स जिले से होकर चोरी-छिपे एक समय में 2/3 कॉडरों के बैच में लाया जाता था।

ढाका स्थित पाक दूतावास में नियुक्त आई एस आई अधिकारी जॉन के माध्यम से मैंने अपने चुनिंदा नेताओं के दो बैच भेजे जिनमें 1996 में-5 काडर तथा 1998 में -11 काडर शामिल थे जिनको आई एस आई के अधीन पाक अधिकृत कश्मीर क्षेत्र में उच्च विस्फोटक तैयार किए जाने और विस्फोट करने सहित आधुनिक शस्त्रों के बारे में, गुरिल्ला प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रशिक्षित काडरों में से एस एस मेजर बी. अलोंगबार, एस एस एल टी बी. रोमेश (मृतक) तथा एस एस कैप्टन डी. जाबरांग (मृतक)

ने पाकिस्तान से वापिस आकर 2003 तक भूटान के शिविरों में हमारे चुनिन्दा कॉडरों को ध्वस्त करने का उन्नत प्रशिक्षण प्रदान किया।

उदालगिरि, बोरबोरी तथा सेरफांगुड़ी में हमारे तीन निर्धारित शिविरों में भारत सरकार द्वारा अभियान निलंबन की घोषणा के पश्चात् हमारे वरिष्ठ काडरों ने 2007 तथा 2008 में 5/6 बैचों में नए भर्ती किए गए लगभग 600/700 पुरुष काडरों को प्रशिक्षण प्रदान किया था।

15/12/08 को एन डी एफ बी के विभाजन के बाद हमने निम्नलिखित बैचों को प्रशिक्षण दिया है-

(क) फरवरी-मार्च/10 में म्यांमार एन डी एफ बी (ए टी) शिविर में - 41 काडर

35वां बैच - <u>अनुदेशक</u>

(1) एस एस सार्जेन्ट मेजर बी. मेसन, संगठन सचिव, एन डी एफ बी (ए टी।)

(2) एस एस एल टी बी. जोंगखांग उर्फ जॉन उर्फ जॉर्ज बासुमतारी उप सेना प्रमुख।

(3) के वाई के एल के तीन अनुदेशकों ने 50 दिन का प्रशिक्षण दिया।

(ख) जनवरी-फरवरी/10 में बोहोलसोरी (खगरासारी जिला) में 38 काडर।

34वां बैच - <u>अनुदेशक</u>

(1) एस एस सार्जेन्ट मेजर बी. स्ग्रीड, मुख्य प्रशिक्षण अनुदेशक।

(2) और 4/5 अन्य (नाम याद नहीं) ने 50 दिन का प्रशिक्षण दिया।

वर्ष 1989 से 2010 तक हमने उसी उद्देश्य से बीडी एसएफ, एन डी एफ बी, एन डी एफ बी (सी एफ) और एन डी एफ बी (ए टी) कॉडरों के कुल 35 बैचों में अपने काडरों को प्रशिक्षण प्रदान किया है।

<u>एन डी एफ बी का विभाजन तथा एन डी एफ बी (आर) का पुनर्गठन</u>

15.12.2008 को अध्यक्ष पद से मुझे हटाए जाने के बाद, मैंने एस एस एल टी आई. के. संगबिजित उप कमांडर तीसरी बटालियन से फोन पर संपर्क किया और उसे कहा कि हम अपना संघर्ष जारी रखेंगे इसलिए उसे सोनितपुर जिले में हमारे काडरों को संगठित रखना चाहिए तथा एन डी एफ बी युद्ध-विराम दल के काडरों का स्वागत करना चाहिए जो हमारे दल में शामिल होना चाह रहे थे। वह सोनितपुर जिले में शरण लिए हुए था। मैंने उससे फोन पर बात की। उस समय उसके अधीन लगभग 30/32 काडर थे।

13/1/2009 को अर्थात् एन डी एफ बी सी/एफ ग्रुप से मेरे निष्कासन के बाद मैंने तीसरी बटालियन के कमांडर एस एस एल टी डी. रजाब उर्फ रजाब डेका को उनकी गुर्दे की पथरी के इलाज के लिए गुवाहाटी भेजा तथा कोकराझार, बोंगईगांव जिले में अपने काडरों को संगठित किया। वह गुवाहाटी आया अपना इलाज कराया तथा बोंगईगांव और कोकराझार जिले का चला गया और उसने 5/6 ऐ के राइफ़ल्स तथा 7/8 पिस्तौलों के साथ एन डी एफ बी के 70 काडरों को एकजुट किया। इन 70 कॉडरों को

बेंग्टोल क्षेत्र के एस एस एल टी. बी. एन्थाओ द्वारा कमांड दी जाती थी। ये काडर बेंग्टोल के उत्तरी भाग में बोडो लोगों के घरों में शरण लिए हुए थे।

मेरे निदेश के अनुसार कमांडर डी. रजाब तथा उप कमांडर आई. के. संगबिजित दोनों ने एन डी एफ बी (ए टी) के बेस को सुदृढ़ बनाया था।

15 दिसम्बर, 2008 को एन डी एफ बी का दो गुटों में विभाजन हो गया अर्थात् एन डी एफ बी (सी/एफ ग्रुप) तथा एन डी एफ बी (ए टी)।

<u>म्यांमार में शिविर की स्थापना</u>

जनवरी/09 में मैं के वाई के एल के गृह सचिव (नाम याद नहीं) से लेखाकार एन. दानसारंग के साथ ढाका में एक होटल में मिला था। चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि वे एन डी एफ बी की सहायता करेंगे और के वाई के एल बटालियन मुख्यालय शिविर से सटे म्यांमार में एक शरण स्थली सह प्रशिक्षण शिविर की स्थापना करेंगे। फोन पर चर्चा के दौरान मैंने के वाई के एल के महासचिव एन. ओकेन से बात की जो अस्थायी रूप से काठमांडु में शरण लिए हुए था। इस बात की पुन: पुष्टि करने पर कि के वाई के एल हमारी मदद करेगा, दोनों ने हमें बताया, कि मानसून से पूर्व हम अपने काडरों को तैनात कर देंगे।

तत्पश्चात् हमारे वर्तमान नेताओं के साथ चर्चा करने के उपरान्त के वाई के एल द्वारा कार्बी आंगलोंग के संगठन सचिव एन. नाइसन तथा दो तीन अन्य काडरों को म्यामांर शिविर में भेजने का निर्णय लिया गया। सितम्बर/09 में के वाई के एल कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन में नाइसन 2/3 काडरों के साथ नागालैण्ड के मोन जिले के रास्ते के वाई के एल शिविर में गया। मोन जिले से यह लगभग 10 से 15 दिनों का पैदल का रास्ता है। उन्होंने शिविर स्थल का चयन किया और निर्माण शुरू करके मुझे सूचित किया। अक्तूबर/09 से जनवरी/10 तक सोनितपुर, दर्रांग, नलबारी और बारपेटा जिले से 54 नए काडरों सहित कुल 64 काडरों की भर्ती की गई। नाइसन सेटेलाइट फोन का प्रयोग करता था और शिविर से मुझसे बात करता था। सेना के मुखिया आई के संगबिजित ने नाइसन को चलते समय 5 लाख रुपये दिये थे और बाद में दिसम्बर/09 में शिविर में उनके रख-रखाव के लिए 10 लाख रुपये भेजे थे।

मार्च/10 में के वाई के एल ने शिविर में नि:शुल्क 3 ए के-56 राइफलें (पुरानी) दी थीं। जनवरी/10 के अन्तिम सप्ताह में एल टी बी. जिंगखांग शिविर में चला गया। नाइसन और जिनखांग दोनों अभी भी वहां शिविर चला रहे हैं। अप्रैल/10 में उन्होंने के वाई के एल से 9 लाख रुपये लागत वाली दो मैग्जीनों और 36 राउन्ड गोलाबारूद सहित 6 ए के-56 राइफलें खरीदी थीं।

<u>लिबरल डेमोक्रेटिक काउंसिल ऑफ मिसिंग लैण्ड (एल डी सी एम) के साथ संबंध</u>

इस गुट के बारे में मुझे ब्यौरे की जानकारी नहीं है। सितम्बर/अक्तूबर 2009 में एस एस कैप्टन डी. रिफिखांग, जो खगरासारी क्षेत्र से एन डी एफ बी (ए टी) का वित्त सचिव है, ने मुझे फोन पर सूचना दी (जब मैं ढाका में था) कि एल डी सी एम के काडरों का एक समूह एन डी एफ बी के अधीन प्रशिक्षण

प्राप्त करने के लिए बोडोलैण्ड सेना के मुखिया आई. के. संगबिजित के पास पुहुंच गया है। संगबिजित नवम्बर/दिसम्बर 2009 में एल डी सी एम ग्रुप को शस्त्रों से संबंधित तथा गुरिल्ला प्रशिक्षण प्रदान करेगा। मैंने रिफिखांग को बताया था कि उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि बाद में वे धन एकत्र करके भाग जाएंगे। लेकिन बाद में मुझे पता चला कि संगबिजित ने नवम्बर/दिसम्बर 2009 में असम सीमा के निकट अरुणाचल प्रदेश तथा विश्वनाथ चेरियाली के उत्तरी तरफ कहीं प्रशिक्षण प्रदान किया है। एल डी सी एम गुट धेमाजी जिले के मिसिंग बाधित क्षेत्र से है।

<u>माओवादियों के साथ संबंध:</u>

माओवादियों के साथ हमारा कोई संबंध नहीं है। वे प्रशिक्षण अथवा शस्त्रों के लिए कभी हमारे पास नहीं आए। हमारी तरफ से हमने माओवादियों से सम्पर्क करने का कभी प्रयास नहीं किया है।

<u>कोकराझार तथा बोंगईगांव जिले में मुसलमानों के साथ संघर्ष</u>

1993 से तत्कालीन कोकराझार जिले के अंतर्गत आम्टेका क्षेत्र में बोडो एवं मुस्लिम समुदायों के बीच साम्प्रदायिक भावना पनपी और साम्प्रदायिक संघर्ष का रूप ले लिया। तत्कालीन उप कमांडर एस एस मेजर डी. जफ्रांग उर्फ देबोजीत डोलमान तथा शस्त्रों से लैस उनके ग्रुप ने उस क्षेत्र के मुस्लिम लोगों पर हमला कर दिया, उनके घर जला दिए और मुस्लिम लोगों की हत्या कर दी। बाद में महासचिव गोबिन्दा बासुमातारी और वित्त सचिव नीलेश्वर बासुमातारी ने बी डी एस एफ उप कमांडर के अभियानों को मंजूरी दी दी थी।

पुन: जुलाई/94 में महासचिव गोबिन्दा बासुमातारी तथा वित्त सचिव नीलेश्वर बासुमातारी के आदेशानुसार, कमांडर एस एस द्वितीय एल टी बी. गाओखूब उर्फ बानेश्वर बासुमातारी (मृतक) और उसके हथियारबंद ग्रुप ने बारपेटा जिले में सालबारी क्षेत्र के मुस्लिमों पर हमला कर दिया, उनके घरों में आग लगा दी तथा लगभग 200 मुस्लिम लोगों को मौत के घाट उतार दिया।

<u>समान विचारधारा वाले गुट के साथ संबंध:</u>

एन डी एफ बी के निम्नलिखित समरूचि गुटों के साथ संबंध हैं। 1987 में स्वयं मैंने विदेशी मामलों का अध्यक्ष सह प्रभारी होने के नाते एन एस सी एन (आई एम) के साथ तथा 1993 के बाद अर्थात् बंगलादेश में अपना आधार बनाने के बाद शेष गुटों के साथ निकट संबंध कायम किए।

<u>डी एच डी:</u>

जून/जुलाई 1997 में दिलीप नुनीसा, डी एच डी के उपाध्यक्ष दिमासा छात्र संघ के उपाध्यक्ष तथा उसी छात्र संघ के एक कार्यकारी सदस्य के साथ एक बोडो छात्र, जो सिल्चर विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र की पढ़ाई करता है, के मार्गदर्शन में सारभोग क्षेत्र के उत्तर की तरफ हमारे अस्थायी शिविर में गए, जहां मैं उपाध्यक्ष धीरेन बोडो और महासचिव गोबिन्दा बासुमातारी एक साथ उपस्थित थे। दिलीप नुनीसा ने हमें बताया कि डी एच डी के एन एस सी एन (आई एम) के साथ गहन संबंध हैं। दोनों ने डी एच डी क्षेत्र में संयुक्त रूप से कार्रवाई को अंजाम दिया, बहुत बड़ी धन राशि जबरन वसूल की लेकिन डी एच डी को

उनके हिस्से से वंचित कर दिया गया। इन दोनों गुटों के बीच सम्बन्ध बिगड़ गए। अत: डी एच डी, एन एस सी एन (आई एम) के चंगुल से बाहर आना चाहता था जिसने युद्ध-विराम किया हुआ था। उन्होंने अपने काडरों को प्रशिक्षित करने तथा उनकी ओर से एन एस सी एन (आई एम) के शीर्ष नेताओं को उनके हिस्से का भुगतान करके डी एच डी से अलग होने का अनुरोध करने के लिए हमारी सहायता मांगी। चूंकि एन डी एफ बी 7 एन सी एन (आई एम) उसी मंच से कार्य कर रहे थे इसलिए उनके पक्ष में एन एस सी एन (आई एम) से अनुरोध करना हमारे लिए गलत होता। तथापि, मैंने उनको एन एस सी एन (आई एम) से धीरे-धीरे अलग होने और अपने स्वयं के शिविर स्थापित करने तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करने की सलाह दी। मैंने उनसे अपने काडरों को भूटान में हमारे शिविर में भेजने के लिए कहा और यह कहा कि हम उन्हें प्रशिक्षण देंगे। वे वापिस चले गए।

मार्च/अप्रैल 1998 में 11 डी एच डी काडरों का एक समूह भूटान में नामलांग शिविर में आया। हमने प्रशिक्षुओं के हमारे 13 वें बैच के साथ उन्हें लगभग 50 दिन का प्रशिक्षण दिया।

1999 के मध्य में एक पी एल ए कार्यकर्ता के मार्गदर्शन से दिलीप नुनीसा ढाका गया और प्रचालन गतिविधियों में सहायता करने हेतु मुझसे सशस्त्र एन डी एफ बी काडरों की एक टुकड़ी भेजने का अनुरोध किया। उसने मुझसे उनके प्रचालन क्षेत्र एन सी हिल्स आदि में लगभग 30 एन डी एफ बी काडर भेजने का अनुरोध किया। तदनुसार मेरे आदेश के अनुसार एन डी एफ बी आर्मी चीफ चाबिन बोडो ने वर्ष 2000 तक एस एस द्वितीय एल टी बी. नेरखांग तथा एस एस सार्जेन्ट मेजर बी. उदला (दोनों मृतक) के नियंत्रण में 12/15 प्रशिक्षित सशस्त्र काडरों का एक दल डी एच डी के साथ मिलकर कार्य करने के लिए एन सी हिल्स में भेजा। हमारा संगठन डी एच डी के युद्ध-विराम तक अर्थात् 1.1.2003 तक डी एच डी संगठनों के साथ मिलकर संयुक्त अभियान चलाता था, जबरन धन वसूली करता था, फिरौती के लिए लोगों का अपहरण करता था। हमारे संगठन एकत्र की हुई जबरन धन वसूली की धनराशि से धन प्राप्त करते थे और उसे दीमापुर में ठहरे हमारे नेताओं के माध्यम से भेजते थे।

सितम्बर/अक्तूबर 2002 में डी एच डी अध्यक्ष जोएल गारलोसा ने अपने उप कमान्डर-इन-चीफ को भेजा तथा विदेशी मामलों का प्रभारी कोई बीरेन मुझसे उतारा, ढाका में मिला और एन सी हिल्स जिले में दीमासा और हमारे समुदाय के बीच चल रहे संघर्ष को देखते हुए मुझसे 25,000 ए एम एन सहित 25 ए के राइफलों की आपूर्ति करने का अनुरोध किया। मैंने साम्प्रदायिक संघर्षों में इनका प्रयोग करने के लिए उन्हें शस्त्र एवं गोलाबारूद मुहैया कराने से इन्कार कर दिया। इसके बाद डी एच डी और एन डी एफ बी के बीच संबंध खराब हो गए और हमारे भेजे गए काडरों ने एन सी हिल्स छोड़ दिया तथा वे कार्बी आंगलोंग चले गए। वहां पर वे के एल एन एल एफ के साथ मिल गए और के एल एन एल एफ के आत्मसमर्पण तक जबरन धन वसूली आदि में लगे रहे। इस अवधि के दौरान हमारे एन डी एफ बी गुट ने युवाओं बोडो और कार्बी दोनों की एन डी एफ बी में भर्ती की। एक पक्षीय युद्ध-विराम की घोषणा के बाद भी एन डी एफ बी काडर वहां बने रहे। दिसम्बर, 2008 में विभाजन के पश्चात् एन डी एफ बी काडर एन डी एफ बी (ए टी) की कमान में आ गए। अब वे एन डी एफ बी काडर एस एस द्वितीय एल टी बी. आओजार कमांडर एन डी एफ बी (ए टी) की दक्षिणी कमान के अधीन हैं।

डी एच डी के युद्ध-विराम (1/1/2003) के बाद धीरे-धीरे डी एच डी (सी एफ) तथा डी एच डी (ए टी) के बीच वैमनस्य उत्पन्न हो गया और हमलों तथा जवाबी हमलों की घटनाएं हुईं। बाद में डी एच सी के वार्ता विरोधी गुट ने जोएल गारलोसा की अध्यक्षता में डी एच डी (जे) बनाया।

वर्ष 2008 के मध्य से विदेश सचिव डी एच डी फ्रांकी ने फोन पर हमारे काडरों के माध्यम से मुझे सन्देश भेजे। वह अपने सुरक्षित आश्रय के लिए हमारी सहायता चाहता था। 2009 में (संभवत: फरवरी में) जोएल गारलोसा ने डी एच डी (जे) काडरों को बंगलादेश में शरण देने के लिए मुझे अनुरोध करते हुए एक ई-मेल सन्देश भेजा और कहा कि वह मुझसे मिलने के लिए ढाका में अपने प्रतिनिधि को भेजेगा। ई-मेल संदेश के जरिए उत्तर में मैंने उसके प्रस्ताव का स्वागत किया और अपना प्रतिनिधि भेजने हेतु उसका कहा। मार्च/09 में डी एच डी (जे) का विदेश सचिव फ्रांकी ढाका गया। हमने मामले पर चर्चा की और लगभग 30 काडरों को बंगलादेश भेजने के संबंध में सहमति हुई। फ्रांकी लौट गया और उसकी मृत्यु हो गई। डी एच डी (जे) अपने काडरों को बंगलादेश में नहीं भेज सका क्योंकि जोएल गारलोसा गिरफ्तार हो गया था। मैं एन.सी. हिल्स में हमारे आधार, शरण और परिचालन क्षेत्र के विस्तार की उम्मीद के बारे में सहमत था।

<u>एन एस सी एन (आई एम) के साथ संबंध:-</u>

मैं 1987 में डॉ. मेरगा के साथ म्यांमार में स्थित एन एस सी एन के ठिकाने पर गया तथा मैंने अध्यक्ष ईस्साक सिसि स्यू तथा अन्य लोगों से बातचीत की। उन्होंने हमें हमारे काडरों को शस्त्र और गुरिल्ला प्रशिक्षण देने का आश्वासन दिया, वे शस्त्र और गोलाबारूद की आपूर्ति करते हैं तथा धन इकट्ठा करने के लिए संयुक्त अभियान चलाते हैं।

वर्ष 1988 के अंत में एन एस सी एन (आई एम) के नेता और अनुदेशक गुरंगजुली शिविर में आए तथा उन्होंने 26/10/89 से हमारे 33 काडरों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

वर्ष 1990-91 के दौरान बी डी एस एफ तथा एन एस सी एन (आई एम) दोनों के काडरों ने संयुक्त अभियान चलाए। उन्होंने एस बी आई की रंगापाड़ा शाखा तथा एस बी आई की इटानगर शाखा में लूट की तथा लूटी गई धनराशि को बराबर बांट लिया।

अप्रैल/93 में अध्यक्ष, एन एस सी एन (आई एम) ईस्साक सिसि स्यू ने मुझसे उनके द्वारा प्राप्त किए गए कुछ शस्त्र और गोलाबारूद को लेने के लिए बंगलादेश जाने का कहा।

तदनुसार मैं मई, 1993 में बी. इरेकडाओ के साथ शिलांग गया तथा एन एस सी एन (आई एम) के अध्यक्ष की सहायता से हमने डॉकी के रास्ते भारत-बँगला देश सीमा पार की और शहाजहांपुर, ढाका में किसी नुरू मियां के स्वामित्व वाले किराए के मकान में ठहरा। यह उल्लेखनीय है कि एन एस सी एन (आई एम) ने समुद्री रास्ते से कम्बोडिया से लगभग 300 शस्त्र प्राप्त किए थे और उन्हें टेकनाफ में कॉक्स बाजार क निकट उतारा। मैंने शस्त्र और गोलाबारूद को लेने तथा अली कादम में अपना शिविर स्थापित करने के लिए इराकडाओ को असम से काडर लाने के लिए वापिस भेजा।

1994 (मध्य) में अपनी पत्नी के साथ मैं जाली नाम से बंगलादेश पासपोर्ट के आधार पर ढाका से बैंकाक गया। बैंकाक में मैंने अध्यक्ष स्यू तथा विदेश मंत्री एंजीलस शिमरे से सम्पर्क किया तथा विदेश से परिष्कृत शस्त्र एवं गोलाबारूद का प्रापण करने के बारे में चर्चा की और निर्णय लिया। हमने शस्त्र एवं गोलाबारूद के प्रापण के लिए आवश्यक प्रबंध करने हेतु एन डी एफ बी और एन एस सी एन (आई एम) के एक संयुक्त दल का चीन भेजने का भी निर्णय लिया, स्यू ने चीन में यह मिशन एस एस कैप्टन एंथनी को सौंपा।

बाद में 1994 के अंत में, बोडोलैण्ड आर्मी चीफ एस एस एल टी कर्नल बी. बिव्हीटी उर्फ भूपेन बोडो (मृतक) सूचना एवं प्रचार सचिव बी. इराकाडाओ उर्फ इमान्यूल बासुमातारी एस एस कैप्टन एंथोनी के साथ शंघाई, चीन गए। उन्होंने नोरिंको आयुद्ध कारखाने के शस्त्र डीलरों और एजेंटों से संपर्क किया। डीलरों और एजेंटों ने अपेक्षित शस्त्र एवं गोलाबारूद मुहैया कराने का आश्वासन दिया जिनका मूल्य 1 मिलियन यू एस डालर से कम नहीं था और इन शस्त्रों और गोलाबारूद की आपूर्ति हमें उत्तरी कोरियन कारगो के माध्यम से की जाएगी।

फरवरी/94 में एन एस सी एन (आई एम) ने हमें एम-16 राइफलें =2,राकेट लांचर =1 और ए के 47 राइफलें=9 पर्याप्त गोलाबारूद सहित निःशुल्क दी थीं और उन्हें म्यांमार, नागालैण्ड आदि के रास्ते उदालगिरि लाया गया था।

नोरिंको कम्पनी चीन से शस्त्रों और गोलाबारूद की खेप मार्च/96 में उत्तरी कोरियन कारगो द्वारा लाई गई थी। एन एस सी एन (आई एम) के माध्यम से हमने पर्याप्त गोलाबारूद सहित विभिन्न वर्गों के लगभग 550 शस्त्र प्राप्त किए।

एन एस सी एन (आई एम) के महासचिव मुइवाह के साथ हुई बातचीत के अनुसार मैंने यू एन पी ओ (अनरिप्रेजेन्टेड नेशन्स एंड पीपल्स आर्गेनाइजेशन) का सदस्य बनने के लिए निर्धारित फार्म प्राप्त किया। यू एन पी ओ का मुख्यालय एम्स्टर्डम, नीदरलैण्ड में है। अन्तर्राष्ट्रीय मंच के समक्ष हमारी मांग तथा शिकायतों को प्रक्षेपित करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से समर्थन एवं सहायता प्राप्त करने के लिए हमने इसका सदस्य बनने का विचार बनाया। दिसम्बर/97 में समर्थकारी दस्तावेजों सहित विधिवत भरा गया फार्म मैंने फैक्स द्वारा ढाका से यू एन पी ओ के कार्यालय में भेजा था। मैंने यू एन पी ओ से पत्र की पावती प्राप्त की थी। आज तक हमने मामले को आगे नहीं बढ़ाया है।

1997 में एन एस सी एन (आई एम) हमें सूचित किए बिना सम्पर्क में आया है। इसलिए एन एस सी एन (आई एम) से हमारा सम्बंध कम है। तथापि मैंने ढाका में एस एस ब्रिगेडियर एंथोनी और एस एस कैप्टन आशिंग से सम्पर्क बनाए रखा है। उन्होंने स्यूरापाड़ा तथा वेस्ट काफ्रूल में हमारा एन डी एफ बी, बाद में एन डी एफ बी (ए टी) कार्यालय भी देखा।

<u>के वाई के एल के साथ सम्बन्ध:</u>

अगस्त/1994 में हमने एन एस सी एन (के), उल्फा, पी एल ए, यू एन एल एफ, के एल ओ आदि को छोड़कर पूर्वोत्तर क्षेत्र के उग्रवादी गुटों का एक कॉमन मंच स्थापित किया था जिसे पूर्वोत्तर क्षेत्र

को आजाद कराने के लिए भारत संघ के खिलाफ संयुक्त रूप से लड़ने हेतु दक्षिण पूर्व हिमालयी क्षेत्र का आत्म रक्षा एकीकृत मंच (एस डी यू एफ एस ई एच) कहा जाता था। हमारे संघटक सदस्य एन डी एफ बी, एन एस सी एन (आई एम), के वाई के एल, एन एल एफ टी, एच एन एल सी, के पी एफ आदि थे, मुइवाह मुख्य संयोजक था और मैं संयोजक था। चूंकि मुइवाह अधिकांशत: विदेश में बाहर रहता था अत: एन ओकेन, जी टी इ एन सचिव, के वाई के एल को संयोजक के रूप में चुना गया। बाद में एस डी यू एफ एस इ एच समाप्त हो गया। एन डी एफ बी के विभाजन के बाद, जनवरी/09 में मैंने ढाका में के वाई के एल के गृह सचिव (नाम याद नहीं) के साथ बात की थी और फोन पर मैंने एस एस ब्रिगेडियर एन ओकेन (महा सचिव) के वाई के एल के साथ बात की और हमें शरण देने तथा मयांमार में एक शिविर स्थापित करने के लिए उनकी सहायता मांगी। वे सहमत हो गए। तदनुसार, एस एस सार्जेन्ट एन. नाइसन को 2/3 काडरों के साथ मोन के रास्ते सागेन डिवीजन में के वाई के एल के शिविर में म्यांमार भेजा गया। नाइसन ने एन डी एफ बी (ए टी) के एक शिविर सह प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। अक्सूबर/09 से जनवरी/10 तक 54 नए काडरों सहित एन डी एफ बी (ए टी) के 64 काडरों को उस प्रशिक्षण शिविर में भर्ती किया गया।

के वाई के एल ने शिविर में हमारे काडरों को 3 ए के-56 राइफलें नि:शुल्क दीं और के वाई के एल के माध्यम से नाइसन ने 9 लाख रुपये में 6 ए के-56 राइफलें खरीदीं।

<u>के वाई के एल के पदाधिकारी</u>

अध्यक्ष	-	नाम की जानकारी नहीं
स्टाफ का मुखिया	-	नाम ज्ञात नहीं लेकिन उसे फरवरी/मार्च 2010 में सिलीगुड़ी के नजदीक गिरफ्तार किया गया था।
महा सचिव सह बिग्रेडियर	-	एन. ओकेन (58/60) अब वह मोरेह के निकट म्यांमार में हो सकता है। उसके बच्चे बड़े हो गए हैं जो इम्फाल में रह रहे हैं।
गृह सचिव	-	नाम याद नहीं। वह भी मोरेह के नजदीक म्यांमार में एक कस्बे में रह रहा है।

के वाई के एल के काडर और कमांडर मौलवी बाजार जिले के मणिपुरी गावों में शरण लेते हैं। जब वे ढाका आते हैं तो वे होटलों में और मणिपुरी लोगों के घरों में ठहरते हैं। के वाई के एल मणिपुर की संप्रभुता की मांग करता है। पहले एन. ओकेन यू एन एल एफ का विदेश सचिव था। उसने इस गुट को मार्गदर्शन दिया और के वाई के एल का गठन किया।

जनवरी/10 में मैंने एस एस एल टी बी. जिंगखांग, उप मुखिया बोडोलैण्ड आर्मी को म्यांमार में हमारे शिविर में भेजा। जिंगखांग और एन. नाइसन दोनों हमारे शिविर की देखभाल करते हैं।

<u>एन यू पी ए के साथ सम्बन्ध :</u>

वर्ष 2002 में कभी-कभी बी. जुख्रुब (मृतक) तत्कालीन न्यायिक सचिव एन डी एफ बी जो खगरासारी जिले में शिविर चला रहा था, कॉक्स बाजार के निकट जवालफांडी में आता था जहां किसी एन यू पी ए कार्यकर्ता (नेशनल यूनाइटेड पार्टी ऑफ अराकन) से उसकी घनिष्ठता हो गई। बाद में एन यू पी ए कार्यकर्ता ने बताया कि एन यू पी ए के शीर्ष नेताओं ने हमसे बातचीत करने की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार, उसी वर्ष कमान्डर आर. गुथल तथा एन सी सदस्य एस एस कैप्टन बेनु बोडो सहित मैंने खीखट, ढाका में आर. गुथल के किराए के मकान में डॉ. खिन मुआंग, अध्यक्ष एन यू पी ए तथा उनके विदेश और वित्त सचिव (नाम याद नहीं) के साथ बातचीत की। हमने मुख्यत: परस्पर रूप से कार्य करने और कम्बोडिया से शस्त्र और गोलाबारूद (पुराने) का प्रापण करने का निर्णय लिया। बैंकाक में ठहरा उनका उप सेना प्रमुख बैंकाक के थाई शस्त्र डीलर के माध्यम से शस्त्रों का प्रापण करने में हमारी मदद करेगा।

वर्ष 2002 के अंतिम समय से लेकर जुलाई/2004 तक कैप्टन बेनू बैंकाक गया और एन यू पी ए के डिप्टी चीफ तथा थाई शस्त्र डीलर की मदद से कम्बोडिया गया और 3 लाख यूरो-डॉलर, अर्थात् 1 करोड़ 68 लाख रु. मूल्य की 300 ए के -47 राइफल्स (पुराने शस्त्र) की खरीद करने का सौदा किया तथा शस्त्र डीलरों को 84 लाख रु. (1 लाख 50,000 यूरो डॉलर) की दो किस्तों में उक्त राशि का भुगतान किया। किन्तु एन यू पी ए के अध्यक्ष ने मुझे सूचित किया कि कम्बोडिया से बंगलादेश लाई जा रही शस्त्रों की खेप को प्राधिकारियों द्वारा रोक लिया गया।

किन्तु एन यू पी एफ ए के अध्यक्ष के बयान से संतुष्ट नहीं हुआ था। उसने मुझसे प्रस्तावित शस्त्र एवं गोलाबारूद के लिए और धनराशि का भुगतान करने पर भी जोर डाला। इसी बीच जुलाई/04 में बेनू बोडो को बैंकाक में प्राधिकारी द्वारा पकड़ लिया गया और बाद में उसने प्राधिकारी के समक्ष समर्पण कर दिया और हमारा मिशन फियस्को में समाप्त हो गया। बेनू बोडो की गिरफ्तारी के बाद से एन यू पी ए के साथ हमारा कोई संबंध नहीं है।

<u>उल्फा के साथ संबंध:</u>

1987 में जब मैं एन एस सी एन के नेता की सलाह के अनुसार म्यांमार में एन एस सी एन के मुख्यालय गया तो मैं उल्फा के साथ उनके कैम्प में ठहरा और वहां मैं रॉबिन हाण्डिक, किशोर महन्त आदि के संपर्क में आया और उस समय परेश बरुआ के नेतृत्व में लगभग 200/250 कॉडरों का एक ग्रुप प्रशिक्षण के लिए काचिन प्रांत में के आई के मुख्यालय में था।

1991 में राइनो अभियान से पूर्व अध्यक्ष अरबिन्द राजखोवा भूटान में हमारे शिविर में गया। परस्पर सहमति के लिए बी डी एस एस और उल्फा नेताओं के दो करार हुए। हमारे महासचिव गोबिन्द बासुमातारी तथा अध्यक्ष अरबिन्द राजखोवा ने दो करार किए। 1991 के बाद से हमारे एक दूसरे के साथ अच्छे संबंध बने हुए हैं। 1995 में बंगलादेश में, मैं उल्फा के चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ परेश बरुआ से ढाका में मिला। मैंने उसका सम्पर्क नम्बर लिया, फिर मैंने उससे फोन पर बात की। सितम्बर/2000 में ढाका में परेश बरुआ और मैंने शस्त्र एवं गोलाबारूद के प्रापण के बारे में चर्चा की।

दिसम्बर/2000 में परेश बरुआ शस्त्रों की एक खेप चीन से चटगोंग लाया तथा उसने निम्नलिखित शस्त्र मुहैया कराए-

ए के -56 राइफलें	-	180	-	बिना गोलाबरूद के
एम-20 पिस्तौलें	-	100	-	-वही-
राकेट लांचर	-	05	-	शैल - 30
चीनी हथगोले	-	30	-	
60 एम एम मोर्टार	-	2	-	शैल 20
एम एम जी	-	1	-	गोलाबारूद 8000

उक्त खेप के लिए मैंने एस एस द्वितीय लेफ्टीनेंट रूबल के माध्यम से परेश बरुआ को 3 लाख 50 हजार यू एस डालर का भुगतान किया।

1998 में हमने अध्यक्ष अरबिन्द राजखोवा, सी एस परेश बरुआ, विदेश सचिव साशा चौधरी के साथ एक बैठक की जिसमें हमारी तरफ से बी सी धीरेन बोडो, जी एस गोबिन्द बासुमातारी, संगठन सचिव एम. जेरेमा तथा मैंने भाग लिया। यह बैठक मालीबाग, ढाका में एस एस एल टी सुशील बोडो उर्फ बी. सतबंग्सा के किराए के मकान में हुई। अपने राजनैतिक और वैचारिक मतभेदों तथा जब कभी कोई अन्य समस्याएं पैदा हों तो उनका समाधान करने के लिए हमने उल्फा और एन डी एफ बी की एक समन्वय समिति गठित की।

2003 के प्रारंभ में पुन: समन्वय समिति की बैठक खिलखेट, ढाका में आर. तुहई के किराए के मकान हुई जिसमें उल्फा के अध्यक्ष अरबिन्द राजखोवा, विदेश सचिव साशा चौधरी, मुख्य संगठन सचिव अशन्ता बेग फुकन ने भाग लिया और एन डी एफ बी की ओर से एस एस कैप्टन डी. डेरहासा (संगठन सचिव), सेना प्रमुख चाबिन बोडो, एस एस कैप्टन बेनू बोडो, एस एस मेजर आर. गुथल और मैं उपस्थित थे। इस बैठक में परस्पर सहमति और समन्वय बैठकें बार-बार आयोजित करने तथा दोनों संगठनों के बीच मैत्री संबंध को सुदृढ़ बनाने पर जोर दिया गया।

वर्ष 2004 में अर्थात् भूटान में ' ऑल क्लीयर' अभियान के बाद अध्यक्ष अरबिन्द राजखोवा और सी एस परेश बरुआ उतारा, ढाका में मेरे किराए के निवास पर आए। एन डी एफ बी की ओर से एस एस मेजर आर. गुथल, एस एस कैप्टन बेनू बोडो तथा मैंने जबरन धन वसूली और प्रचालन संबंधी गतिविधियां संयुक्त रूप से चलाने के लिए उल्फा और एन डी एफ बी के दो कैप्टनों की अध्यक्षता में एक संयुक्त अभियान दल गठित करने पर चर्चा की और निर्णय लिया। यद्यपि हमने निर्णय तो ले लिया किन्तु इसे मूर्त रूप नहीं दिया गया।

यह उल्लेखनीय है कि 1998 की बैठक में अरबिन्द राजखोवा ने यह बताया था कि उल्फा और एन डी एफ बी दोनों असम और बोडोलैण्ड की संप्रभुता की लड़ाई लड़ रहे हैं लेकिन किसी भी परिस्थिति में असम का विभाजन नहीं किया जाना चाहिए। यदि जरुरी हो तो असम के नाम में परिवर्तन किया जाना चाहिए और हमें साथ-साथ रहना चाहिए । जनवरी/2004 से लगभग एक सप्ताह पूर्व परेश बरुआ ने मुझे शस्त्र एवं गोला बारूद उपलब्ध कराने के लिए जिनके शीघ्र बंगलादेश पहुंचने की संभावना थी, 2

लाख यू एस डालर का उसे भुगतान करने के लिए सैटेलाइट फोन से मुझसे बात की। किन्तु मैं उसे धनराशि का भुगतान नहीं कर सका। और जनवरी/2004 में परेश बरुआ द्वारा लाए गए शस्त्र एवं गोलाबारूद के 10 ट्रकों को चटगोंग में करनाफुली नदी के तट पर उर्वरक कारखाने के निकट पकड़ लिया गया। पकड़े जाने की घटना के बाद परेश बरुआ और अरबिन्द राजखोवा से कोई संपर्क नहीं हुआ लेकन कभी-कभी मैं साशा चौधरी और राजू बरुआ से मिला।

<u>यू एन एल एफ के साथ संबंध:</u>

मैं इस बारे में पहले ही बता चुका हूँ।

<u>के एल ओ के साथ संबंध:</u>

के एल ओ मुख्यत: उल्फा से संबंधित है। के एल ओ के साथ एन डी एफ बी के अच्छे संबंध हैं। 2001 में जब मैं एन डी एफ बी, द्वितीय बटालियन मुख्यालय कैंप कालीखोला से ढाका जा रहा था तो के एल ओ आर्मी चीफ मिल्टन से मेरे अनुरोध के बाद के एल ओ का अध्यक्ष जीबोन सिंह और उल्फा का एस एस एल टी रुस्तोब चौधरी कालीखोला से ढाका तक मेरे साथ गए। उस समय के एल ओ के नेता तथा काडर कालीखोला के निकट 709 बटालियन मुख्यालय कैंप में थे यह उल्लेखनीय है कि मेरे साथ ढाका जाते समय जीबोन सिंह ने अपनी पहचान नहीं बताई।

2004 में भूटान में 'आल क्लीयर' अभियान के बाद जीबोन सिंह मुझसे खिलखेल, ढाका में आर. गुथल के किराए के मकान में मिला तथा उसने मुझसे उनके काडरों को प्रशिक्षण देने तथा कुछ शस्त्र एवं गोलाबारूद मुहैया कराने का अनुरोध किया। मैंने उसे बताया कि हम उसे बाद में सूचित करेंगे। इसी बीच उल्फा नेताओं ने ढाका में मौलवी बाजार जिले में सतसौरी शिविर में टी पी डी एफ के अधीन के एल ओ काडरों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की। मेरी सलाह के अनुसार एस एस मेजर आर. गुथल कमांडर तीसरी बटालियन ने के एल ओ अध्यक्ष के साथ अच्छे संबंध बनाए। बाद में 2007 में के एल ओ के कार्यकारी आर्मी चीफ (जीबोन सिंह की बहन का पति) के साथ आर. गुथल बंगलादेश से धुब्री, कोकराझार तथा बोंगईगांव जिला क्षेत्र मुख्यत: कोच -राजबंसी क्षेत्र में उन लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिए लामबंद करने तथा हमारे आधार क्षेत्र को बढ़ाने के लिए आए। लेकिन लामबंद किए जाने के 5/6 दिन बाद के एल ओ ने हमारे दल को रोक दिया। उल्फा और के एल ओ के बीच यह सहमति हुई कि के एल ओ असम में लोगों को लामबंद करने से बचेगा।

इसके बावजूद हमारे संबंध अच्छे बने हुए हैं। इस समय के एल ओ के 10/15 प्रशिक्षित काडर हो सकते हैं। जीबोन सिंह के एक निकट सहयोगी किसी पटोवारी को सितम्बर/2009 में रंगपुर से गिरफ्तार किया गया है। जीबोन सिंह के मीरपुर में छिपने का अड्डा (किराये का मकान) है। हमने के एल ओ को कोई शस्त्र और गोलाबारूद नहीं दिए हैं।

<u>एन एल एफ टी के साथ संबंध:</u>

एन एल एफ टी का अध्यक्ष बैथंगदेब बर्मा, ढाका में अगस्त/94 में गठित किए गए सेल्फ डिफेंस यूनाइटेड फ्रंट ऑफ साउथ-ईस्ट हिमालयन रीज़न के घटक सदस्यों में से एक है। एन एल एफ टी का प्रचालन क्षेत्र त्रिपुरा, मौलवी बाजार क्षेत्र है। हमारे एक दूसरे के साथ अच्छे संबंध हैं। 1997 में एन एल एफ टी के काडरों ने हमारे शिविर को अली काडम जिला-बंदरबोन से बदलकर खपरासारी जिले में बोहोलसौरी में स्थापित करने में हमारी मदद की। मित्रता के प्रमाण स्वरूप हमने एन एल एफ टी को 10 ए के-47 राइफलें, 3 अर्द्ध स्वचालित राइफलें और एक स्निपर राइफल दी। एन एल एफ टी ने 1997, 1998 में एन डी एफ बी काडरों की त्रिपुरा से शस्त्र एवं गोलाबारूद के ट्रांशिपमेंट में मदद की, उन्होंने हमारे काडरों तथा नेताओं की भारत से बंगलादेश तथा बंगलादेश से भारत जाने में भी मदद की।

एन एल एफ टी उपाध्यक्ष - याम बोर्क देब बर्मा (अब खगरासारी में)

एन एल एफ टी सेना प्रमुख - थॉमस देब बर्मा (अब बोहोलसोरी शिविर में)

उनकी कुल नफरी 150/200 हो सकती है। बोहोलसोरी शिविर के सिवाय उनके ट्रांजिट शिविर हैं तथा काडर त्रिपुरा के त्रिपुरी गांव में, बंगलादेश क्षेत्र के मौलवी बाजार और खगरासारी जिले में ठहरे हैं।

यह उल्लेख किया जाता है कि 1998 में भूटान में स्थित नामलांग शिविर में हमारे पाक प्रशिक्षित काडरों ने 5/6 एन एल टी काडरों को एक महीने तक एडवांस गुरिलल्ला प्रशिक्षण दिया। इनमें से कुछ काडर दीपक देब बर्मा , संगासा देब बर्मा थे। उनके अध्यक्ष तथा सेना प्रमुख के अनुरोध के अनुसार मैंने तत्कालीन बोडोलैंड आर्मी चीफ चाबिन बोड़ो को निदेश दिया था जिसने प्रशिक्षण की व्यवस्था की थी।

जहां तक मुझे पता है एन एल एफ टी काडरों ने सुनामी से पूर्व और उसके बाद त्रिपुरा में असम राइफल्स के 14/15 जवानों पर घात लगाकर हमला किया तथा उनकी हत्या कर दी। उस घटना से पूर्व एन एल एफ टी ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लगभग 21 कार्मिकों की हत्या कर दी और इन दोनों घटनाओं में उनके हथियार छीन लिए। एन एल एफ टी के 5/6 काडरों ने शायद 1996 या 1997 में आई एस आई के अधीन पाकिस्तान में नेट प्रशिक्षण लिया।

<u>टी पी डी एफ के साथ संबंध:</u>

पूर्व ए टी टी एफ अब टी पी डी एफ के 1993 से अच्छे संबंध हैं। टी टी एफ काडरों ने म्यांमार और मिजोरम के रास्ते से कॉक्स बाजार क्षेत्र से शस्त्रों के ट्रांशिपमेंट में सहायता की।

1997 में हमारा कैम्प अली काडम के निकट बीहोलसोरी में चेले जाने के बाद एन एल एफ टी के सैनिकों द्वारा उप प्रमुख, वित्त सचिव और टी पी डी एफ के एक काडर की हत्या कर दी गई किन्तु टी पी डी एफ के चेयरमैन को अपने नेताओं और काडरों की हत्या में एन डी एफ बी पर सन्देह था। टी पी डी एफ अध्यक्ष रंजीत दब बर्मा ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार किया जिसमें इस हत्या के पीछे एन डी एफ बी और एन एस जी एन (आई एम) पर आरोप लगाया। उसे दोषी ठहराया। इस घटना के पूरे समय

मैं भूटान में नामलांग शिविर में था। तत्पश्चात मैं वापिस ढाका चला गया और दिसम्बर/97 के दौरान मैंने उल्फा के सी एस परेश बरुआ से यह अनुरोध किया कि वह हमारी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए टी पी डी एफ के अध्यक्ष रंजीत देब बर्मा के साथ एक बैठक कराए क्योंकि हम इस घटना में शामिल नहीं थे।

जनवरी/98 में परेश बरुआ ने मू बाजार ढाका में एक चीनी रेस्टोरेंट में बैठक कराई जहां मैंने टी पी डी एफ के अध्यक्ष रंजीत देब बर्मा को इस मामले के बारे में स्पष्टीकरण दिया ताकि आशंकाएं दूर हो जाएं। बाद में रंजीत देब बर्मा को यह पता चला कि उस मामले में न तो एन डी एफ बी और न ही एन एस सी एन (आई एम) शामिल थे।

2006 में लम्बे अन्तराल के बाद मेरे अनुरोध पर के एल ओ के अध्यक्ष जीबोन सिंह ने फार्म गेट, ढाका में एक रेस्टोरेंट में रंजीत देब बर्मा के साथ मेरी बैठक कराई जहां मैंने एन डी एफ बी और टी पी डी एफ के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने का प्रयास किया।

2009 में रंजीत देब बर्मा ने मेरे अनुरोध पर संग्शाद भवन, ढाका के निकट यू एन एल एफ अध्यक्ष, सनेइमा के साथ मेरी बैठक कराई थी। मैं अपने प्रयोग के लिए म्यामांर से शस्त्र एवं गोलाबारूद के प्रापण के बारे में जानना चाहता था। उसने मुझे बताया कि म्यांमार से पुराने शस्त्र एक समय में 5/6 शस्त्रों की खेप में खरीदे जा सकते हैं।

दिसम्बर/2009 में साशा चौधरी, चित्राबोन हजारिका, राजू बरुआ और अरबिन्द राजखोवा की गिरफ्तारी तथा बंगलादेश से भारत में उनके निष्कासन के बाद मैंने फोन तथा ई-मेल पर सनेइमा, रंजीत देब बर्मा तथा परेश बरुआ के साथ चर्चा की तथा बंगलादेश और असम के मीडिया को संयुक्त प्रैस वक्तव्य जारी किया जिसमें यह कहा गयाकि बंगलादेश के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारत के लोगों ने उसकी मदद की थी इसलिए बंगलादेश के प्राधिकारियों को उनकी मदद करनी चाहिए।

इसके बाद मुझे म्यांमार से शस्त्रों के प्रापण के बारे में उससे बातचीत करने का समय नहीं मिला।

<u>ए एन वी सी के साथ संबंध:</u>

अचिक नेशनल वालंटीयर फोर्स का गठन मेघालय के गारो हिल्स क्षेत्र के गारो लोगों द्वारा किया गया। ए एन वी सी के गठन से पहले यूनाइटेड लिब्रेशन आर्मी ऑफ मेघालय (यू एल ए एम) के नाम से एक दूसरा संगठन था। डीलक्स माराक इसका सेना प्रमुख था। संभवत: 1995 में डीलक्स माराक को गिरफ्तार किया गया और उसको शिलांग जेल में रखा गया। डीलकस माराक उसी वर्ष एन एस सी एन (आई एम) तथा एच एन एल सी काडरों के साथ जेल से भागकर ढाका चला गया और ढाका में वह एन एस सी एन (आई एम) की शरण में रहा। मैं भी उससे मिला और उसके खर्चे के लिए मैंने उसे 10,000 टका दिए। मैंने उसे एक नया संगठन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। 1997 में एन डी एफ बी की ओर से मैंने डीलक्स माराक को 3 ए के-56 राइफलें, 2 अर्द्ध स्वचालित राइफलें, 2 पिस्तौलें दी थीं। मैंने संगठन सचिव डी. बेरहासा की अध्यक्षता में 10/12 एन डी एफ बी काडर निधियां जुटाने में डीलक्स

माराक को मदद करने के लिए भेजे। 1997 में डीलक्स माराक ने यू एल ए एम को समाप्त करके ए एन वी सी का गठन किया और इसका अध्यक्ष बन गया तथा वह अभी इसका अध्यक्ष बना हुआ है। ए एन वी सी 2003 से युद्धविराम में चल रहा है। हमने बंगलादेश से आने-जाने में अपने काडरों की मुफ्त आवा-जाही, बंगलादेश से शस्त्र एवं गोलाबारूद का ट्रांशिपमेंट तथा उनकी शरण सुनिश्चित करने में उनकी मदद की। 1997 से 2003 तक हमारे सशस्त्र काडरों के एक ग्रुप ने उनके साथ संयुक्त रूप से एक अभियान चलाया और जबरन धन वसूली आदि की।

<u>एच एन एल सी के साथ संबंध:</u>

मेघालय का एच एस एल सी (हिन्नीव ट्रेप नेशनल लिब्रेशन काउंसिल) एक खासी संगठन है जो 1994 से एस डी यू एफ एस ई एच आर का घटक सदस्य है। अत: हम एक दूसरे के साथ अच्छे संबंध रखे हुए हैं।

2003 में तत्कालीन एच एन एल सी अध्यक्ष, जूलिसय डोरफांग (अब आत्मसमर्पण कर दिया है) के अनुरोध पर मैंने कार्बी आंगलांग से लगे जैन्तिया हिल्स में एच एन एल सी काडरों के साथ संयुक्त अभियान चलाने, जबरन धन वसूली करने के लिए एस एस एल टी डी. ओफरी की अध्यक्षता में 5/6 सशस्त्र एन डी एफ बी काडरों का एक ग्रुप भेजा था। हमारी टीम वहां 2004 तक रही। 2004 में किसी समय विशेष अभियान दल ने हमारे एक काडर की हत्या कर दी तथा हमारे दो हथियार जब्त कर लिए।

अध्यक्ष -

महासचिव - चेरलिश थांगक्यू (42)
आर्मी चीफ - बॉबी भार्विन (38)

बोहोलसोरी में एच एन एल सी का शिविर है। उनके काडरों की संख्या 20/30 हो सकती है। बॉबी भार्विन ने असम राइफल्स में 14 माह का प्रशिक्षण लिया और वहां से छोड़कर चला गया।

<u>गारो नेशनल लिब्रेशन फ्रंट (जी एन एल एफ) के साथ संबंध</u>

इस संगठन का गठन अभी हाल ही में हुआ है। इससे पूर्व किसी एस ओ टी कमांडो, जिसकी मुठभेड़ में मृत्यु हो गई है के नेतृत्व में "इलाइट अचिक नेशनल फोर्स" के नाम से एक गारो संगठन था। इसके बाद मेघालय बटालियन के पुलिस उपाधीक्षक ने इलाइट फोर्स के काडरों, एच एन एल सी के पलायनकर्ताओं आदि के साथ मिलकर जी एन एल एफ का गठन किया। एन डी एफ बी का जी एन एल एफ के साथ कोई संबंध नहीं है।

8. अब मैं कुछ प्रैस रिलीजों पर आता है जो एस डब्ल्यू 14 के अनुसार एन डी एफ बी द्वारा दी गई थी। प्रथम प्रैस रिलीज का उल्लेख अनुलग्नक-ठ के रूप में अपने शपथ पत्र में एस डब्ल्यू-14 द्वारा किया

गया था जिसे इस अधिकरण के समक्ष उसके बयान के दौरान प्रदर्श एस डब्ल्यू 14/ठ के रूप में चिन्हित किया गया था और जो नीचे प्रस्तुत है:-

"एन डी एफ बी की एक राष्ट्रीय परिषद का गठन करने तथा बोडोलैण्ड आर्मी के चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ तथा डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ और चार कमानों के कमांडिंग तथा डिप्टी कमांडिंग अधिकारियों की नियुक्ति करने तथा पार्टी के विभिन्न मुद्दों और समस्याओं पर चर्चा करने के उद्देश्य से 29 और 30 अक्तूबर, 2009 को एन डी एफ बी की आम बैठक की गई। इस बैठक की अध्यक्षता एन डी एफ बी के अध्यक्ष डी. आर. नबला ने की तथा एन डी एफ बी के प्रवक्ता एन. दिन्थी ग्वरा को सर्व सम्मित से रिकार्डिंग सचिव के रूप में चुना गया। बैठक में विस्तृत और लंबी चर्चा के बाद नेशनल काउन्सिल बनाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया जिसमें सात सदस्य होंगे और निम्नलिखित निर्णय लिया:

बैठक ने सर्वसम्मति से राष्ट्रीय परिषद का गठन किया है जिसमें सात सदस्य होंगे, यह एन डी एफ बी की सर्वोच्च कार्यकारी एवं निर्णयकारी संस्था होगी। राष्ट्रीय परिषद में सात निर्वाचित सदस्य हैं :

रोनायग्रा नाबला दायमारी	अध्यक्ष
दिन्ती ग्वरा नारजारी	महासचिव
ओंजालू बासुमतारी	सूचना एवं प्रचार सचिव
बरबाय बासुमतारी	सहायक सूचना एवं प्रचार सचिव
रिफिखांग गोयारी	वित्त सचिव
रौजब डेका	संगठन सचिव (अब सी एफ के साथ)
दैंस्वरैंग नारजारी	सदस्य

* बैठक ने सर्वसम्मति से कैप्टन सौंगबीजित इंगती कठार एवं लेफ्टिनेंट ज्वंखैंग बोडो को बोडोलैंड आर्मी का क्रमश: चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ तथा डेपुटी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ नियुक्त किया गया है।

* व्यापक विचार-विमर्श के बाद बैठक ने बोडोलैंड आर्मी के सभी अभियानों को केन्द्रीकृत करने का प्रस्ताव पारित किया तथा ऐसे क्रियाकलापों से दूर रहने को कहा जिनसे कुल मिलाकर पार्टी पर बुरा असर पड़े और जो क्रांतिकारी नीतियों के खिलाफ हों। बैठक में यह प्रस्ताव भी पारित किया कि बोर्ड की बड़ी अथवा गंभीर गतिविधि अथवा कार्रवाई केवल पार्टी के सर्वोच अधिकारी के परामर्श से की जानी चाहिए।

* बैठक ने प्रस्ताव पारित किया तथा बोडोलैंड तथा पश्चिमी दक्षिण पूर्व एशिया तथा कथित "पूर्वोत्तर भारत" को मुक्त कराने के लिए ताकत एवं दृढ़निश्चय के साथ एकजुट होकर कार्य करने की प्रतिज्ञा की।

9. एन डी एफ बी द्वारा 17 जून, 2010 को अपनी आम सभा में पारित संकल्प को एस डब्ल्यू-14 के हलफनामे के साथ अनुलग्नक-ड के रूप में संलग्न किया गया था तथा अधिकरण के समक्ष उसके साक्ष्य के दौरान प्रदर्श एस डब्ल्यू-14/एम के रूप में मार्क किया गया था जिसका पाठ निम्नवत है :-

"नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड की आम बैठक 17 जून, 2010 को आयोजित की गई

बोडोलैंड आर्मी तथा राष्ट्रीय परिषद के उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में 17 जून, 2010 (गुरूवार) को नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड की आम बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक की अध्यक्षता एन डी एफ बी के माननीय उपाध्यक्ष द्वारा की गई थी। बैठक, उन शहीदों को 1 मिनट के शोक प्रस्ताव के बाद आरंभ हुई, जिन्होंने बोडोलैंड के लिए अपनी जानें दीं। कार्यसूची के अनुसार बैठक में संगठन के संचालन हेतु विभिन्न क्षेत्रों में सचिव तथा कमानों में वरिष्ठ काडरों की तैनाती की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया गया था। संगठन की विदेशी नीति के आधारों में अभिवृद्धि एवं इनके प्रसार को बैठक में महत्वपूर्ण एवं आवश्यक बताया गया। आम सभा के सदस्यों ने घूस की रकम तथा उसके समुचित उपयोग के महत्व पर भी विचार-विमर्श किया। उगाही गई रकम को खर्च एवं उपयोग के बारे में बैठक ने कुछेक नियम एवं विनियम बनाए जिन्हें प्रत्येक कमान को उसी रूप में पालन करना होगा जिस रूप में आम बैठक ने इन्हें पारित किया। आम सभा कक्ष में शत्रु के खिलाफ फोर्स की नफरी में वृद्धि करने पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया।

आम सभा के संकल्प

1. आम सभा ने वित्त सचिव की नियुक्ति के मुद्दे पर सभी के विचार एवं समर्थन लेकर कैप्टन एन. दैनस्वरैंग को नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड का वित्त सचिव नियुक्त किया और उसी कार्यसूची की आवश्यकता के अनुसार लेफ्टिनेंट बी. शोतबैंग्सा को एन डी एफ बी की राष्ट्रीय परिषद का नया परिषद सदस्य नियुक्त किया।

2. वित्तीय मामलों के संकल्प में हाउस ने यह नियम पारित किया कि प्रत्येक कलेक्टर के साथ-साथ कमांडिंग ऑफीसर भी इन नियमों एवं विनियमों का अनिवार्य रूप से पालन करें। सेना प्रमुख अथवा वित्त सचिव की सलाह के बिना कमांडिंग ऑफीसर तथा इसके निचले स्तर के

अधिकारी एक लाख रुपये से ज्यादा खर्च नहीं कर सकते हैं तथा प्रत्येक कमान को पैसे के उपयोग के मामले में चीफ-ऑफ-कमांड के आदेश का पालन करना होगा।

3. विदेशी कूटनीति एवं विदेशी आधार को कार्यसूची में लिया गया जिसमें नई रणनीति पारित कर गई थी कि आम सभा लेफ्टिनेंट जी. औथाव को प्रतिनिधि के रूप में पांच काडरों के साथ नेपाल में छिपने के नए अड्डे बनाने हेतु सर्वे के लिए भेजने का संकल्प करती है तथा उसी कार्य सूची के कार्यान्वयन में वरिष्ठ काडर अपने को विभिन्न कमानों में तैनात रखने का संकल्प करते हैं।

4. आम सभा में, और ज्यादा ताकत एवं दृढ़ निश्चय के साथ लड़ने के लिए ज्यादा से ज्यादा काडरों की भर्ती करके फोर्स की ताकत एवं नफरी बढ़ाने का संकल्प लिया गया था इसलिए कमांडिंग आफीसरों से भिन्न-भिन्न भागों से नए प्रौढ़ लड़कों को, उनकी पृष्भूमि की साधारण जांच-परख करके भर्ती करने के लिए कहा गया है।

5. संगठन संबंधी मामले को कार्यसूची में लिया गया जिसमें एक मत से यह संकल्प पारित किया गया कि भारत सरकार को भेजे जाने वाले प्रस्ताव के रूप में पूर्व में 1 मई, 2008 की कार्य सूची में लिया गया निर्णय ही हमारे संगठन का अंतिम मुद्दा है।

6. कार्यसूची की विविध मद के रूप में, सभी कमान में जरूरत के मुताबिक वित्त विभाग को और अधिक संग्रह रसीद बुक पुन: जारी करने के लिए कहा गया है। साथ ही कमान से कहा गया है कि वे रसीद बुक का प्रयोग करें और इसे लेखा-बही में दर्ज करें।

7. कार्रवाई एवं योजना-नीति के संकल्प में यह हाउस सरकारी संपति जैसे – पुल, बिजली, पावर हाउस, सरकारी दफ्तर एवं अन्य सरकारी सम्पति एवं शत्रुओं एवं सभी तरह के परिवहनों एवं संचार प्रणाली कों ध्वस्त करने का निर्णय लेता है।

8. आम सभा ने एक बार फिर पूरे दृढ़ संकल्प एवं समर्पण के साथ बोडोलैंड तथा बोडोलैंड के लोगों को भारत के उप निवेशवाद के चंगुल से मुक्त कराने के लिए तब तक संघर्ष करने की प्रतिज्ञा की कि जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता तथा राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के अधिकार पर कभी समझौता न करने का संकल्प लिया।

10. सरकार एन डी एफ बी के तीन कार्यकर्ताओं द्वारा दिए गए निम्नलिखित बयानों पर भी भरोसा कर रही है जिन्हें किसी अपराध के सिलसिले में असम पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया था, जिनका विस्तृत ब्यौरा, एस डब्ल्यू-4 श्री नितुल गोगोई, पुलिस अधीक्षक, बोमगैगांव, असम द्वारा अपने हलफनामा प्रदर्श एस डब्ल्यू-4/1-क, एस डब्ल्यू-7 श्री पार्थ सारथी महन्त, पुलिस अधीक्षक, जनपद-कामपुर, असम राज्य द्वारा अपने हलफनामा प्रदर्श एस डब्ल्यू-7/क तथा एस डब्ल्यू-10 श्री देबराज उपाध्याय, पुलिस अधीक्षक,

जनपद चिरांग, असम द्वारा अपने हलफनामा प्रदर्श एस डब्ल्यू-10/1-क में दिया गया है :-

"शस्त्र अधिनियम की धारा 27 (2) तथा विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 10/13 के साथ पठित धारा 120 (ख)/121 (क)/122/353/396/307 भा.दं.सं. के अंतर्गत बिजनी पुलिस थाना मामला सं. 185/10 के संबंध में धारा-161 सी पी सी के अंतर्गत अभियुक्त मो. अयूब का बयान।

"उसके द्वारा बताए गए के अनुसार उसका नाम तथा ऊपर उल्लिखित पता सही है। वह पिछले दो-तीन साल से हेडेन बाजार में एक साइकिल मेकेनिक के रूप में कार्य कर रहा था। उसी अवधि के दौरान एन डी एफ बी के कुछ चरमपंथी हेडेन बाजार आए और उन्होंने अपनी साइकिलों की मरम्मत कराई। उसने यह भी बयान दिया कि वह अब स्विस गेट के समीप साइकिल मेकेनिक का कार्य कर रहा है। एन डी एफ बी का दल वहां भी उसकी साइकिल की दूकान पर आया और उसे अपने मददगार के रूप में इस्तेमाल किया। वह केवल बिदाई को जानता है जो कि एन डी एफ बी का एक चरमपंथी है। कभी-कभी एन डी एफ बी का दल उसे डरा धमकाकर उससे सूखी रसद तथा स्थानीय लोगों के मोबाइल नम्बर लेता था। उसने स्वीकार किया कि वह एन डी एफ बी के लिए कार्य करता था लेकिन इस मामले के संबंध में वह उस घटना में शामिल नहीं था। उसने कहा कि निस्संदेह यह घटना एन डी एफ बी द्वारा की गई थी और इसे बिदाई के कमान और नियंत्रण में अंजाम दिया गया था।"

"अभियुक्त श्री दमानिक मुशाहारी उर्फ जट्गू का बयान"

"मेरा नाम श्री दमानिक मुशहारी उर्फ जाठी है। मैं 8 (आठ) महीने पहले प्रतिबंधित एन डी एफ बी संगठन में शामिल हुआ था। मैंने कोई प्रशिक्षण नहीं लिया। मैं एक स्थान से दूसरे स्थान तक पत्रों एवं सामान को लाने और ले जाने का कार्य किया करता था। मैं एन डी एफ बी के मांग पत्रों (डीमांड लेटर्स) की फोटो कापियां एन डी एफ बी चरमपंथी एंटी टॉक ग्रुप के प्लाटून कमांडर एन. जंगखाला बासूमतारी को दिया करता था। मैं बंगतोल गेट पर फोटोकापियां कराता था। इसके बाद पुलिस ने बंगतोल गेट से जीराक्स मशीन बरामद कर ली, जो एन डी एफ बी के कार्यों हेतु इस्तेमाल की जाती थी। दिनांक 26.9.09 को मैंने श्री बिश्वजीत बासुमतारी को एक फैक्स भेजने का आदेश दिया था जिसमें एन डी एफ बी के नाम से असम में भारी तोड़फोड़/विस्फोट किए जाने की धमकी के साथ सरकार को चेतावनी दी गई थी। मैं वह फैक्स लाया और उसे श्री लखन बासुमतारी को सौंप दिया। बिश्वजीत बासुमतारी को वह फैक्स पत्र लखन बासुमतारी ने सौंपा था। तदनुसार बिश्वजीत बासुमतारी तथा लखन बासुमतारी को फैक्स भेजे गए थे। इससे पूर्व, बिजनी एरिया के प्लाटून कमांडर एन. जंगखाला बासुमतारी ने मुझे कुछ मांग पत्र (डिमांड लेटर्स) दिए थे।

बिश्वजीत बासुमतारी के साथ मैंने वे डिमांड लेटर्स बोंगाईगांव कस्बे के कुछ दुकानदारों को वितरित कर दिए। तदनुसार, चापागुड़ी रोड के दूकानदार श्री राज कुमार चौहान ने बोंगाईगांव कस्बे के कुछ दुकानदारों के फोन नम्बर एकत्रित किए और मुझे दे दिए। फोन नम्बर मिलने के बाद मैंने बोंगाईगांव कस्बे के कुछ दुकानदारों से फोन पर पैसे की मांग की। लेकिन मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि एन डी एफ बी को पैसा दिया गया या नहीं । क्योंकि मुझे दीमापुर से लैपटाप, कपड़े, कम्बल आदि खरीदने के लिए प्लाटून कमांडर एन. जंगखाला बासुमतारी द्वारा 2,50,000/- रुपए दिए गए थे। मुझे अमर्टेगा गांव के कंचई मुसाहारी एवं टयूपिल इस्लारी के साथ जोराबाट में दीमापुर जाते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। दीमापुर जाते हुए पुलिस ने हमें पकड़ लिया और हमारे पैसे जब्त कर लिए। इसके बाद उदालगुड़ी पुलिस ने हमें पकड़कर जेल हिरासत में भेज दिया।"

अभियुक्त रंजीत दास का बयान

"ऊपर बताया गया मेरा नाम और पता सही है। मैं कालमनी सिंगीमारी चौक पर साइकिल मरम्मत का व्यवसाय करता हूं और वर्तमान में मेरे पास पेट्रोल एवं डीजल का भी स्टॉक है जो मैं अपनी दूकान के इर्द-गिर्द बेचता हूं। मैं एन डी एफ बी का काडर नहीं हूं लेकिन सरानिया काचारी के एक युवक के तौर पर मैं एन डी एफ बी की विचारधारा, लक्ष्य एवं उद्देश्य से प्रेरित हूं और मैं लगभग 5/6 वर्षों से एन डी एफ बी के बिचौलिए के रूप में कार्य कर रहा हूं। मैं एन डी एफ बी काडरों द्वारा किए गए किसी भी अपराध में संलिप्त नहीं हूं। टांगला निवासी एन डी एफ बी काडर बिपुल बोडो तथा जोरेश्वर के दीपक बोडो, जो कभी-कभी हमारे पास तेल खरीदने आते थे, ने मुझे एन डी एफ बी का बिचौलिया (लिंक मैन) बनने के लिए प्रेरित किया। मैं एन डी एफ बी के किसी अन्य काडर से परिचित नहीं हूं। कभी-कभी बिपुल और दीपक हमारे निवास एवं दूकान पर आया करते थे और ठहरते थे। तीन माह पहले टांगला के बिपुल बोडो ने मुझे घर में रखने के लिए एक हथगोला (हैंडग्रेनेड) दिया और तदनुसार उसे मैंने रख लिया। आज सुबह मुझे गोरेश्वर में दीपक बोडो को हैंड ग्रेनेड हस्तान्तरित करने की सूचना दी गई है और वे मुझे बताएंगे कि गोरेश्वर पहुंचकर मुझे इसे किस प्रकार हस्तान्तरित करना है। तदनुसार, मैं फोन नं. 9854826535 जो कि मेरी पत्नी के नाम पर है और 4060 रुपये ,जो उन 5000/- रुपए में से लिए जो उन्होने मुझे मुहैया कराए थे, को लेकर मैं घर से ट्रैकर द्वारा गोरेश्वर जाने के लिए निकल पड़ा, इंडियन आर्मी तथा रांगिया पुलिस ने संयुक्त रूप से तलाशी ली और जब्ती-सूची के अनुसार मेरे पास से बरामद वस्तुओं को जब्त किया। जब्ती कार्रवाई गवाहों की उपस्थिति में की गई। मैं इस बारे में झूठ नहीं बोल रहा हूं कि मैं एन डी एफ बी के अन्य काडरों को नहीं जानता हूं। मैं केवल बिपुलबोडो एवं दीपक बोडो को जानता हूं। मैं उनका वास्तविक पता तक नहीं जानता हूं। वे

विशेषकर काले रंग की पल्सर मोटर साइकिल पर क्रमश: कलमानी एवं मधुकुची के अंदरूनी क्षेत्र में स्थित साप्ताहिक बाजारों में आते थे। मैं उनके विशेषकर रात्रि के समय ठहरने के स्थानों तथा वे अपने साथ किस तरह के हथियार एवं गोलाबारूद लेकर चलते थे, इसके बारे में नहीं जानता हूं। मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि उन्होंने मेरे कब्जे में हैंड ग्रेनेड क्यों रखा और किस प्रयोजन के लिए आज इसे गोरेश्वर में दीपक बोडो को हस्तान्तरित करने को कहा। चूंकि, मेरे आस-पड़ोस में कोई भी नहीं जानता था कि मैं एन डी एफ बी का बिचौलिया (लिंकमैन) हूं इसलिए मैं उनके कार्यकलापों में आसानी से मदद करता था लेकिन मैं पकड़ा गया। मैं विवाहित हूं और मेरा एक बच्चा है और मैं अपने पिता तथा अन्य परिवार के सदस्यों के साथ संयुक्त रूप से रहता हूं।"

11. एस डब्ल्यू-14 ने अपने हलफनामे के साथ जी. रफीखांग द्वारा 14 सितम्बर, 2010 को एन डी एफ बी के उपाध्यक्ष की हैसियत से दिए गए भाषण को भी संलग्न किया है। उसे उसके साक्ष्य के दौरान प्रदर्श एस डब्ल्यू-14/सी के रूप में मार्क किया गया है तथा इसका अंग्रेजी रूपांतर नीचे उद्धृत किया जाता है:-

शहीद दिवस पर उपाध्यक्ष जी. रफीखांग का भाषण

मेरे प्रिय साथियों, आजाद बोडोलैंड के समर्थको और वे लोग, जिन्होंने विभिन्न प्रकार से हमारे संघर्ष में हमारी मदद की, मैं सबसे पहले उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। मैं, उन बहादुर सिपाहियों और उनके परिवारों को, जिन्होंने एन डी एफ बी के 24 साल लम्बे संघर्ष के दौरान बोडोलैंड की आज़ादी के लए अपनी जान गंवाई, को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हम 14 सितम्बर को शहीद दिवस के रूप में मनाते हैं। आज के दिन मैं उन सभी को याद करना चाहूंगा जिन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया और जो विभिन्न जेलों में बंद हैं।

14 सितम्बर, 1988 को कार्रवाई कमांडर बी. बंग्बर ग्वारा मारे गए थे और इस तरह वे बोडोलैंड की आज़ादी की लड़ाई के प्रथम शहीद हुए और तब से 14 सितम्बर, 1989 से हम इस दिन को शहीद दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। 20 वर्षों के संघर्ष के बाद, 8 अक्तूबर, 2004 को एन डी एफ बी ने भारत सरकार के साथ बातचीत की प्रत्याशा में युद्ध विराम की घोषणा की थी। यह आशा की गई थी कि हमलोगों के कल्याणार्थ विभिन्न मांगे उनके समक्ष रख सकेंगे। हमारे नेताओं ने 5 वर्षों तक यह सोचकर प्रतीक्षा की कि भारत सरकार हमें बातचीत के लिए आमंत्रित करेगी, लेकिन इसके बजाए भारत सरकार ने भारत-बोडो समस्या के हल के लिए बिना किसी राजनीतिक वार्ता अथवा विचार-विमर्श के केवल युद्ध

विराम को बढ़ाते रहने की नीतियां निर्मित कीं। युद्ध विराम के दौरान कई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटीं। हमारी तीसरी बटालियन के काडर नहीं चाहते थे कि युद्ध विराम को जारी रखा जाए क्योंकि उनमें से कई लोग युद्ध विराम के आधारभूत नियमों को तोड़े जाने के नाम पर सुरक्षा बलों द्वारा मौत के घाट उतार दिए गए थे। हमारे अधिकांश नेता विलासिता का शिकार हो गए हैं और संगठन की संबद्धता को नजरअंदाज करते हुए अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्त हो गए हैं। 01 मई, 2009 को भारत सरकार के निदेशानुसार हमने प्रस्तावित कार्य सूची की एक प्रति उन्हें दी थी लेकिन नवीन वर्मा, जो कि भारत सरकार की तरफ से मध्यस्थ की भूमिका निभा रहे थे, ने इसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने हमसे प्रस्तावित कार्य सूची की संशोधित प्रति दुबारा प्रस्तुत करने के लिए कहा क्योंकि उनके अनुसार प्रस्तावित कार्य सूची की उक्त प्रति विदेशी भाषा में लिखी हुई थी। यह केवल इस बात को दर्शाता है कि भारत सरकार बातचीत के लिए एन डी एफ बी के साथ बैठने की इच्छुक नहीं है। हमारे कुछ नेताओं ने, जिन्हें सरकार की नीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं था, शीर्ष नेताओं से परामर्श किए बिना प्रस्तावित कार्य सूची की संशोधित प्रति प्रस्तुत कर दी थी। इसका नतीजा यह हुआ कि एन डी एफ बी वार्ता-पक्षधर एवं वार्ता-विरोधी दो खेमो में बंट गया। अब सवाल यह उठता है कि हम वार्ता-विरोधी खेमे में क्यों हैं, इसका कारण यह है कि एन डी एफ बी के वार्ता-पक्षधर नेताओं ने जो प्रस्तावित कार्य सूची सौंपी थी उसमें आत्म-निर्णय का अधिकार, बोडो जनता के ऐतिहासिक अधिकारों तथा शहीदों की आकांक्षाओं को शामिल नहीं किया गया है। असली क्रांतिकारी एवं एन डी एफ बी के देशभक्त औपचारिक राजनीतिक वार्ताओं के समक्ष पार्टी की विचारधारा एवं सिद्धांतों से कभी भी समझौता नहीं कर सकते और यही वजह है कि हमें दुबारा हथियार उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा।

स्वतंत्र बोडोलैंड की लड़ाई में अब तक हमने 800 से भी ज्यादा बहादुर लोगों की जाने गंवाई हैं। यह उनकी इच्छाओं एवं सपनों के पूरा करने का मामला है जिसके कारण हमें शत्रु के खिलाफ अपनी लड़ाइयां जारी रखनी होंगी। पिछले 22 वर्षों से एन डी एफ बी भारत सरकार के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष कर रहा था। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि अब हम बंट गए हैं और हमारे बीच अन्तर्कलह है, जिसका फायदा हमारे शत्रु उठा रहे हैं। हमें सावधान रहना होगा ताकि हमारी फूट का कोई फायदा न उठा सके और इसलिए मैं दोनों गुटों अर्थात् युद्ध विराम तथा वार्ता-विरोधी गुटों से अनुरोध करना चाहूंगा कि वे इकट्ठे हों और एकजुट होकर नई ताकत से बोडोलैंड की आजादी की लड़ाई लड़ें। मै सभी को यह बताना चाहूंगा कि यदि हमारे छात्र, राजनेता और दूसरे संगठन प्रथक बोडोलैंड की लंबे समय की मांग को पूरा कर सकते हों तो हमारे संगठन को इससे बेहद प्रसन्नता होगी।

हमारे नेता रंजन दैमारी को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया है। इससे असम सरकार को यह विश्वास होने लगा है कि हम कमजोर पड़ गए हैं और एक संगठन के तौर पर एन डी एफ बी का खात्मा हो जाएगा। भारत सरकार तथा असम सरकार को ऐसा सोचने दें लेकिन हमें यह दिखाना है कि हम कमजोर नहीं पड़े हैं और हम अपनी जंग जारी रखेंगे। मै अपने काडरों से अनुरोध करना चाहूंगा कि जिस पर हमारा अधिकार है उसे हम ताकत के बल पर लेकर रहेंगे। हमारा नेता जेल में अत्यधिक विपत्ति का सामना कर रहा है और पूछताछ के नाम पर भारी अन्याय किया जा रहा है। मैं आपको यह भी बताना चाहूंगा कि संगठनों ने भारत सरकार के साथ छह तारीख तक युद्ध विराम के करार पर समझौता किया है लेकिन आज की तारीख तक उनकी समस्याओं का कोई अर्थपूर्ण समाधान नहीं निकला है।

डी एच डी ने भारत सरकार के साथ युद्ध विराम का करार किया था और उन्होंने अपने हथियार भी सौंप दिए थे लेकिन उनके नेताओं को जेल भेज दिया गया और अब विभिन्न झूठे मामलों में फंसाकर उनका उत्पीड़न किया जा रहा है। मेरा विचार है कि इस प्रकार की शांति वार्ताएं निरर्थक हैं और इनसे कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है।

सबसे आखिर में, मैं पुन: एक बार लोगों के प्रति तथा अपने समर्थकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस विषम कठिनाई के दौर से गुजरने के बावजूद बोडो समुदाय के संघर्ष में हमारे साथ खड़े हैं। मैं प्रार्थना करता हूं कि हमारे शहीदों द्वारा दी गई कुर्बानियां व्यर्थ नहीं जाएंगी और यह वादा करता हूं कि जब तक उनके सपने एवं आकांक्षाएं पूरी नहीं हो जातीं तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा।

धन्यवाद।
बोडोलैंड आर्मी जिंदाबाद।
एन डी एफ बी जिंदाबाद।
बोडोलैंड के लिए संघर्ष जिंदाबाद।

12. एन डी एफ बी द्वारा 01 नवम्बर, 2010 को जारी की गई प्रेस रिलीज की एक प्रति, जो एस डब्ल्यू-14 के हलफनामे के साथ अनुलग्नक'ण' के रूप में संलग्न की गई थी तथा जिसे प्रदर्श एस. डब्ल्यू.14/ण के रूप में मार्क किया गया था, का पाठ भी नीचे दिया जा रहा है :-

"भारत सरकार/असम सरकार एन डी एफ बी के नाम पर निर्दोष बोडो लोगों की फर्जी मुठभेड़ दिखाते हुए हत्याएं कर रही है। भारतीय बलों द्वारा स्कूली छात्रों, किसानों तथा सादगी से रहने वाले निर्दोष बोडो लोगों की हत्याएं की जा रही हैं तथा ये फर्जी मुठभेड़ें अभी जारी हैं। इसलिए बोडोलैंड आर्मी, एन डी एफ बी भारत सरकार/असम सरकार को फर्जी मुठभेड़ के नाम पर निर्दोष बोडो लोगों की हत्याओं को बंद करने के लिए सख्त चेतावनी देता है। हम बोडो लोग एवं

बोडोलैंड आर्मी, एन डी एफ बी लम्बे समय से यह सब सहन कर रहे हैं। भारत सरकार/असम सरकार ने बोडो जनता के खिलाफ बहुत अधिक ज्यादतियां की हैं। धैर्य की भी एक सीमा होती है और अब हमारा धैर्य टूट चुका है। हम ईंट से पत्थर को नहीं तोड़ सकते, हमें अब पत्थर का इस्तेमाल करना होगा। आज के बाद यदि कोई भी निर्दोष बोडो/एन डी एफ बी काडर भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा फर्जी मुठभेड़ के नाम पर मारा जाता है तो बोडोलैंड आर्मी, एन डी एफ बी किसी भी भारतीय के खिलाफ कार्रवाई करेगी। हम इसकी परवाह नहीं करेंगे कि वह कौन है? वह कोई भी भारतीय (नागरिक) या भारतीय बल (फोर्स) हो सकता है। एक निर्दोष बोडो व्यक्ति बीस अथवा इससे ज्यादा भारतीयों के बराबर होगा (1 बोडो व्यक्ति = 20 अथवा और अधिक भारतीय)। और यह किसी भी क्षण और किसी भी समय होगा। समस्त बोडोलैंड आर्मी, एन डी एफ बी तैयार हैं। इसलिए, इस चेतावनी को याद रखें और किसी निर्दोष बोडो व्यक्ति को मारने के पहले गंभीरतापूर्वक सोचें। यदि भारत सरकार/असम सरकार दुबारा इसकी शुरूआत करती है, तो हम भी शुरूआत करेंगे और किसी को भी यह अधिकार नहीं होगा कि वह हमारे खिलाफ कुछ कहे। और यदि इसकी शुरूआत होती है तो संपूर्ण उत्तरदायित्व भारत/असम सरकार का होगा ना कि बोडोलैंड आर्मी, एन डी एफ बी का। बोडोलैंड आर्मी, एन डी एफ बी के विरुद्ध संघर्ष करें, ना कि निर्दोष बोडोलैंड सिविल नागरिकों के साथ। उपनिवेशवादी का हमारी भूमि पर कोई अधिकार नहीं है। हम इस धरती के पुत्र हैं। भारत/असम सरकार सम्मान करना नहीं जानती है और जब भी वह हमारे लोगों, काडरों एवं नेताओं को पकड़ती है तो उनके साथ भेदभाव करती है। भारत/असम सरकार यह नहीं जानती है कि एक क्रांतिकारी सेनानी का किस प्रकार सम्मान किया जाता है क्योंकि जब भी वे फर्जी मुठभेड़ों अथवा युद्ध क्षेत्र में हमारे कामरेडों को मारते हैं तो वे उनके शवों तक के साथ जानवर जैसा बर्ताव करते हैं ना कि किसी मानव मात्र की तरह। बोरा लोग एवं एन डी एफ बी भी मानवमात्र की तरह ही हैं और अपने बोडो राष्ट्र तथा अपने तर्क संगत अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं, इसलिए दूसरों का सम्मान करना सीखें। अपनी ताकतवर सत्ता का घमंड न करें। यदि यू एस एस आर जैसी महाशक्ति ध्वस्त हो सकती है तो भारत क्या चीज है? याद रखें, इस दुनिया में सब कुछ मुमकिन है।

एन डी एफ बी जिंदाबाद ।

बोडोलैंड आर्मी जिंदाबाद।

आइए बोडो राष्ट्र के लिए हम अपने प्राणों की आहुति दें किंतु बोडो राष्ट्र हमारे कारण मरने न पाए।"

13. एन डी एफ बी द्वारा 11 नवम्बर, 2010 को प्रेस ज्ञापन की एक अन्य जारी प्रति को एस डब्ल्यू-2 श्री देबजीत देवरी, पुलिस अधीक्षक, उदालबुरी जिला, बी टी ए डी असम के हलफनामे के साथ संलग्न की गई तथा जिसे एक्स. एस डब्ल्यू-2/सी मार्क किया गया और यहां पर प्रस्तुत किया जा रहा है:

"अतीत के बोडो लोगों के राज्यवंश एवं राज्यों का इतिहास है। संस्कृति, परम्परा एवं रीति-रिवाज का एक अपना इतिहास है। विभिन्न समयों पर विभिन्न लोगों द्वारा आक्रमण के परिणामस्वरूप बोडो लोग अपनी ही भूमि पर अल्पसंख्यक हो गए। अहोम आक्रमण के पश्चात बोडो लोगों के विघटन एवं उनके इतिहास की समाप्ति शुरू हो गई। भारतीय स्वतंत्रता के बाद बोडो एवं बोडो लोग भारतीय शासन के अंतर्गत आ गए। भारत विश्व में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है जिसकी व्यवस्था में मूल अधिकार राज्य नीति-निर्देश, संवैधानिक अधिकार की व्यवस्था है परन्तु यह सभी प्रत्येक राज्य में शासन वर्ग के लिए हैं। असम में बोडो लोग इससे पीड़ित हैं। भारतीय स्वतंत्रता से सरकार का उदासीन रवैया, बेराजगारी एवं दमन, आक्रामक नीति तथा विनिवेशवादी व्यवहार ने बोडो लोगों को वर्तमान में आक्रामक एवं हताश कर दिया है। बोडो लोगों द्वारा विभिन्न समयों पर कई लोकतांत्रिक आंदोलन शुरू किए गए जिनकी अनदेखी कर दी गई जिसके कारण बोडो लोगों की सुरक्षा के लिए वर्तमान हिंसक आंदोलन सामने उभरकर आया। एन डी एफ बी भारत के विरुद्ध 1986 से विद्रोह कर रहा है जिसका अभी तक कोई प्रत्युतर नहीं है। एन डी एफ बी के खिलाफ प्रचालन के नाम पर सुरक्षा बलों ने एन डी एफ बी के विभाजन से पहले और उसके बाद कई मासूम बोडो लोगों की हत्या की जिसमें देखा गया कि 200 में से मात्र 20 अथवा 25 प्रतिशत एन डी एफ बी संवर्ग से हैं शेष सब मासूम बोडो जवान बच्चे हैं जिनकी सुरक्षा बलों तथा बातचीत समर्थक एन डी एफ बी संवर्ग द्वारा नृशंसता से हत्या कर दी गई तथा गिरफ्तारों की संख्या 225 पर पहुंच गई, जिसमें से केवल 40 वास्तविक एन डी एफ बी प्रशिक्षित संवर्ग से हैं। कई बार एन डी एफ बी के प्रेस ज्ञापनों में मासूमों की हत्या की चेतावनी दी गई परन्तु यह चालू है। सरकार को इन घटनाओं से सीखना चाहिए। 8 नवम्बर, 2010 को चेतावनी के बावजूद गोरखा रेजीमेंट एवं असम पुलिस द्वारा मासूम किसान मोहेश्वर बासूमतारी, गांव मैनासौरी, डाकघर बहाशीपुर, पी.एस. देखियाजुली, जिला सोनितपुर की हत्या क्यों की गई जो कि अपनी पत्नी एवं दो बच्चों के साथ सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा था। इन मृतकों के लिए कौन जिम्मेवार है। सरकार एवं सुरक्षा बल इसके लिए जिम्मेवार हैं। एन डी एफ बी संगठन की निंदा से राज्य में शान्ति एवं समाधान प्राप्त नहीं किया जा सकता। जब कोई एक एन डी एफ बी सदस्य मरता है तो सैकड़ों उसका स्थान लेने के लिए आ जाते हैं जिसको ध्यान में रखकर भारत सरकार को भारतीय-बोडो समस्या का समाधान ढूंढ़ना चाहिए। हमारे अध्यक्ष की गिरफ्तारी पर हम शान्त रहे जिसका फायदा सुरक्षा बलों ने गिरफ्तारी एवं हत्याएं करके उठाया। कुछ समय के लिए शांत रहने को किसी प्रकार की कमजोरी नहीं समझा जाना चाहिए इसका परिणाम अतीत की हिंसक घटनाओं की तरह होगा जिसके लिए सरकार जिम्मेवार होगी।

अधिकतर बोडो एवं गैर बोडो नेता तभी प्रचार करते हैं जब एन डी एफ बी हमला करती है जब सुरक्षा बल बोडो जवानों और किसानों की नृशंस हत्याएं करते हैं तो वह कुछ नहीं कहना चाहते यहां तक कि स्वयं के समुदाय में कोई भी सुरक्षा बलों के विरुद्ध बोलने तथा मासूम जवानों को लेने के लिए सामने

नहीं आया। अत: मैं सभी बोडो फ्रंटियर संगठनों, बी पी एफ नेताओं, बोडो साहित्य सभा ए बी एस यू तथा अन्य बोडो संगठन इन मासूमों की हत्या एवं गिरफ्तारी तथा सुरक्षा बलों द्वारा बोडो गांवों एवं घरों में उत्पीड़न एवं डकैती के विरुद्ध आवाज उठाएं। प्रबुद्ध बोडो नेशनल संगोष्ठी जिसका नेतृत्व उप प्रमुख खाम्पा बोरगोयारी कर रहे हैं उसका सम्मान करते हुए हमारा संगठन बोडो लोगों को जोड़ने की शुरुआत का सम्मान करता है। एन डी एफ बी सभी बोडो लोगों से शत्रु के विरुद्ध खड़े होने और एक होने की अपील करता है इसके अतिरिक्त मैं सभी समुदायों जो बोडो क्षेत्र में रह रहे हैं अन्य भारतीय समुदायों, सुरक्षा बलों से अपील करता हूँ कि वह एन डी एफ बी के विरुद्ध कोई अपराध अथवा गलती नहीं करें इसका परिणाम घातक हो सकता है।"

14. एस डब्ल्यू-2 ने अपने हलफनामे के साथ एक आरोपी दाइथून बोडो के बयान की कॉपी भी संलग्न की थी जिसे एस डब्ल्यू-2/डी मार्क किया गया था तथा जिसे नीचे प्रस्तुत किया गया है:

"मेरा नाम एवं पता जैसे ऊपर उल्लेख किया गया है और मेरी आयु 25 वर्ष है। मैं एच एस एल सी पास हूँ। मैंने एन डी एफ बी में वर्ष 2005 में एक जिओ एन डी एफ बी (रंजन डायमरी समूह) की सहायता से काम शुरू किया था तथा तूरा मेघालय से बंगलादेश पहुंचा। प्रशिक्षण कैम्प घाघराचारी हिल्स बंगलादेश में था जहां एन डी एफ बी के तीस सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया था। हमें करीब $2^{1}/_{2}$ महीने ए के-47, 303"राइफल, स्निफर राइफल तथा 9 एम एम पिस्टल के साथ प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कैंप में करीब 200 सदस्य इन शस्त्रों के साथ हैं: ए के-47 सिरीज राइफल; 35 संख्या, 303' राइफल, 15 संख्या, स्निफर राइफल 15 संख्या; ए के-81 10 नं. एवं 9 एम एम पिस्टल; 30 संख्या। मेरे प्रशिक्षण के बाद मैं जिओ के साथ तायुलपुर वापस आ गया जैसा कमान्डर एन एस गोरम द्वारा निर्देश दिया गया था मैंने अन्य लोगों के साथ एक कमलेश्वर गुप्ता, प्रबंधक मेनोका टी ई का अपहरण कर लिया और एक करोड़ रु. की मांग की। 28.12.2010 को गार्डन प्राधिकारियों ने 16 लाख रु. की फिरौती दी तदनुसार मेनोका टी ई के प्रबंधक को नागरजूली में 29.12.2010 को रिहा कर दिया गया। 15.01.2011 को जब मैं एक संजीब के साथ दीमापुर जा रहा था तो हमें कारबी आंगलोंग पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया।"

15. एस डब्ल्यू 18 श्री प्रशान्त कुमार दत्ता, पुलिस अधीक्षक, कोकराझार जिला, असम की गवाही भी विशेष रूप से मेरे सामने असम राज्य के प्रबुद्ध अधिवक्ता एवं एडिशनल सालिसिटर जनरल द्वारा प्रस्तुत की गई। इस गवाह ने अपने हलफनामे में निम्नलिखित कहा:

" यह कि मैं कोकराझार जिला, असम का पुलिस अधीक्षक हूँ। मेरी ड्यूटी जिले में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने तथा उक्त जिले में मैं सभी पुलिस स्टेशनों के कार्य का पर्यवेक्षण करता हूँ। मैं अवैध मामलों का भी अनुवीक्षण करता हूँ विशेषत: आतंक संबंधी मामलों का। मैं नियमित रूप से ऐसी घटनाओं की रिपोर्ट विशेष शाखा, काहिलीपारा, गुवाहाटी और असम पुलिस मुख्यालय, गुवाहाटी को प्रेषित करता हूँ। मेरे जिले में एन डी एफ बी के सदस्य जो सरकारी मशीनरी से वार्ता के विरुद्ध हैं तथा जिन्हें

अनौपचारिक रूप से एन डी एफ बी (गैर वार्ता वर्ग) के नाम से पहचाना जाता है बहुत सक्रिय हैं तथा वह बड़े स्तर पर गैर-कानूनी एवं हिंसक गतिविधियों में संलिप्त होकर वह सरकार की सत्ता को अमान्य कर रहे हैं तथा भारतवर्ष के विरुद्ध युद्ध चला रहे हैं। इसके साथ वह लोगों में आतंक भी पैदा कर रहे हैं तथा वह मासूम नागरिकों की हत्या, सरकारी कर्मचारियों के अपहरण, फिरौती, शस्त्रों एवं बारूद का अवैध संग्रहण कर उनको सामान्य जीवन व्यतीत करने में बहुत बाधा पहुंचा रहे हैं तथा उन्हें भय और आतंक के माहौल में जीने के लिए मजबूर कर रहे हैं। मैं इस प्रबुद्ध अधिकरण से अनुमति चाहूंगा कि वह मुझे एन डी एफ बी सदस्यों द्वारा गैर कानूनी गतिविधियों में संलिप्त होने के कुछ उदाहरणों की आज्ञा प्रदान करें।

19.08.2009 को शिकायतकर्ता उप निरीक्षक उपेन चन्द दास ने कोकराझार पुलिस स्टेशन में इस संबंध में शिकायत दर्ज कराई कि 18 अगस्त, 2009 को एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि कोकराझार पुलिस स्टेशन के अंतर्गत तराइबारी क्षेत्र में एन डी एफ बी (गैर वार्ता समूह को) विध्वंसक गतिविधियों हेतु इस क्षेत्र में सक्रिय है। तदनुसार उस रात 1.30 बजे सुबह पुलिस और सेना के 11 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री का एक दश्ता अभिसाक्षी के नेतृत्व में उपरोक्त क्षेत्र को रवाना हुआ। वहां पहुंचने के पश्चात संयुक्त दल ने संदिग्ध एन डी एफ बी (गैर वार्ता) की स्थिति के संबंध में सतर्कता से पूंछताछ करते हुए संदिग्धों के अवस्थान क्षेत्र की और कूच किया परन्तु 3 बजे रात को आतंकियों ने सुरक्षा बलों की उपस्थिति भांपते हुए उन पर उन्हें मारने के उद्देश्य से गोलाबारी शुरू कर दी। इसके उत्तर में सुरक्षा बलों मे गोलाबारी शुरू कर की और 20 मिनट तक गोलाबारी चलती रही। बाद में आतंकवादी अंधेरे का फायदा उठाते हुए बच निकले। तथापि, खोज करने पर एक मृत आतंकी का शरीर निकट के एक चावल के खेत में प्राप्त हुआ जिसकी पहचान न हो सकी। शस्त्र और बारूद का बड़ा जखीरा, इलैक्ट्रिकल डेटोनेटर्स, इलैक्ट्रिानिक क्लॉक, बारूदी सामग्री इत्यादि भी मृतक आतंकी के पास से प्राप्त की गई। यह कोकराझार पी एस सी/संख्या 284/2009 यू/एस 120 (बी)/121 (ए)/21 (ए)/122/307 आई पी सी आर/डब्ल्यू सेक. 25 (1-बी) (ए) शस्त्र आर/डब्ल्यू ई एस अधिनियम की धारा 25, आर/डब्ल्यू 10/13 यू ए (पी) अधिनियम के संदर्भ में है। बाद में मृतक की पहचान निखिल ब्रह्मा @ नारला (25/26 वर्ष) पुत्र श्री मुनेश्वर ब्रह्मा, गांव तराइबारी पी एस एवं जिला-कोकराझार के बतौर हुई जो कि एन डी एफ बी (गैर वार्ता) का एक कट्टर सदस्य था।

कोकराझार पी एस एफ आई आर संख्या 284/09 दिनांक 19.08.2009 की एक प्रमाणित प्रति यहां संलग्न की गई है तथा इसे **अनुलग्नक-"क"** मार्क किया गया है।

दिनांक 19.08.2009 को एम आर संख्या 99/09 के मार्फत जब्त किए गए सामान की सूची की प्रमाणित प्रति यहाँ **अनुलग्नक- "ख"** में संलग्न की गई है।

गवाहों के बयानों की सत्य प्रमाणित अनुदित प्रतियां **अनुलग्नक "ग" (कॉली)** के बतौर संलग्न की गई हैं।

यह कि 18.05.2010 को शिकायतकर्ता वी.पी. सिंह लेफ्टिनेंट/कमान्डर 15 डोगरा रेजीमेंट, आडाबारी ने सरफानगुरी पुलिस स्टेशन में एक प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई कि 17.05.2010 को करीब

1400 बजे एक विशेष सूचना प्राप्त होने पर उन्होंने सरफानगुरी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत परगांव क्षेत्र में पुलिस के साथ एक संयुक्त खोज अभियान किया। अभियान के दौरान उन्होंने एक श्री बारहुंगखा बासुमतरी @ बी. बीरखाई @ जालो, एन डी एफ बी (गैर वार्ता वर्ग) का स्वयं-भू प्लाटून कमान्डर उम्र 25 वर्ष पुत्र गुकुल बासूमतरी निवासी गांव उत्तर भोमरागुरी पुलिस स्टेशन सरफानगुरी एवं जिला कोकराझार (असम) को गिरफ्तार किया। उसने यह खुलासा किया कि वह एन डी एफ बी (गैर वार्ता समूह) से संबंधित है तथा वह कोकराझार क्षेत्र में प्लाटून कमान्डर के बतौर कार्य कर रहा था। बाद में उसके साथ गांव हसरावबारी तथा उत्तर भोमरागुरी में एक खोज अभियान किया गया जहां एक गुप्त स्थान से भारी मात्रा में शस्त्र एवं बारूद पाए गए। यह सरफानगुरी पी एस मामला संख्या 35/2010/यू/एस/121/121 (ए)/122 आई पी सी आर/डब्ल्यू 27 आर्म्स एक्ट की धारा 25 (1-ख) यू ए (पी) अधिनियम के आर/डब्ल्यू 10/13 यू से संबंधित है। उपरोक्त आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया एवं न्यायिक संरक्षण में भेज दिया गया।

दिनांक 18/5/10 की सरफानगुरी पी एस एफ आई आर संख्या 35/10 की प्रमाणित प्रति यहां अनुलग्नक-"घ" में संलग्न है।

एम आर संख्या 20,21,22/2010 के मार्फत 17/5/10 को जब्त सामान की सूची की दो प्रमाणित प्रतियां यहां **अनुलग्नक- "ङ" (कॉली)** में संलग्न हैं।

गवाहों के बयानों की अनुदित प्रमाणित प्रतियां जिसमें आरोपी व्यक्ति एवं शिकायतकर्ता के बयानों की प्रतियां सम्मिलित हैं यहां **अनुलग्नक-"च" (कॉली)** में सम्मिलित हैं।

यह कि 24.10.09 को सूबेदार संतोष कुमार ने कोकराझार पुलिस स्टेशन में यह शिकायत दर्ज की कि उसी दिन एक विशेष सूचना के आधार पर सेना/पुलिस के एक संयुक्त दल ने तरांग नदी के किनारे भोमरागुरी गांव के आस-पास एक अभियान शुरू किया। करीब 2015 बजे एन डी एफ बी (गैर वार्ता) के संदिग्ध आतंकवादियों को हमले के स्थल की ओर जाते देखा गया। चुनौती देने पर इन्होंने सुरक्षा दल पर गोलाबारी शुरू कर दी। सुरक्षा दल ने भी इसके उत्तर में गोलाबारी की, गोलाबारी के चलते एक आतंकी की स्थल पर मृत्यु हो गई। शेष आतंकी घने जंगलों का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गए। मृतक आतंकी से एक 7.65 एम एम पिस्टल (अमेरिका में निर्मित) एक 7.65 एम एम पिस्टल मैग्जीन, पाँच 7.65 बारूद की गोलियां प्राप्त हुईं। यह कोकराझार पी एस सी/संख्या 375/09 यू एस 120 (बी)/121/121 (ए)/122/307 आई पी सी आर/डब्ल्यू आर्म्स एक्ट की धारा 25 (।-बी) ए/27 यू एल (पी) एक्ट की धारा 10/13 के संदर्भ में है। मृतक कर्मचारी की पहचान श्री जेसमिन बोडो (26 वर्ष) पुत्र श्री धनेश्वर बोडो गांव बालाजान तिनियाली पी एस एवं जिला-कोकराझार के बतौर की गई। जांच के दौरान यह पाया गया कि मृतक आंतकी एन डी एफ बी (वार्ता रोधी) का सदस्य था एवं कई विध्वंसक गतिविधियों में संलिप्त था।

कोकराझार पी एस एफ आई आर संख्या 375/09 दिनांक 24/10/09 की प्रमाणित प्रति यहां अनुलग्नक-"च" के साथ संलग्न है।

एम आर संख्या 168/09/ के मार्फत दिनांक 24/10/09 की जब्त सूची की प्रमाणित प्रति यहां अनुलग्नक-"छ" में संलग्न है।

गवाहों के बयानों की प्रतियां जिसमें शिकायतकर्ता एवं आरोपी के बयान की प्रतियां सम्मिलित हैं यहां अनुलग्नक-"ज" (कॉली) में संलग्न हैं।

यह कि 27/09/2009 को शिकायतकर्ता उप निरीक्षक माकिब अली, काचूगांव प्रभारी अधिकारी ने काचूगांव पुलिस स्टेशन में यह एफ आई आर दर्ज की कि दिनांक 26.09.09 को करीब 6.45 बजे एक व्यक्ति नामत: सामीराम बसुमतरी, जो एन डी एफ बी का पूर्व सदस्य था जिसने समर्पण कर दिया था को एन डी एफ बी (वार्ता विद्रोही वर्ग) के संदिग्ध आतंकियों ने सरफानगुरी में सरफानगुरी पुलिस स्टेशन के निकट सिंचाई नहर के निकट हत्या कर दी। उपरोक्त सूचना प्राप्त होने पर 11 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री के एक दस्ते के साथ घटना स्थल को रवाना हुए वहां पहुंचने पर यह पता चला कि घटना से पहले एन डी एफ बी (वार्ता विद्रोही) के कुछ कट्टर सदस्य वहां संदिग्ध अवस्था में घूमते देखे गए थे। स्रोतों ने अभिसाक्षी को यह भी सूचित किया कि एन डी एफ बी (वार्ता विद्रोही) के सदस्यों को जिन्होंने यह आपराधिक कृत्य किया था को उसी रात काचूगांव पुलिस स्टेशन के थाईसोगुरी गांव में देखा गया था। उपरोक्त सूचना प्राप्त होने पर अभिसाक्षी पुलिस और सेना के एक संयुक्त दल के साथ (11 मराठा इन्फैन्ट्री) इस क्षेत्र की ओर रवाना हुए। वहां पहुंचने पर तथा स्रोत द्वारा सूचना प्राप्त होने पर उसने तत्काल गांव और उसके आस -पास हमला स्थल स्थापित करने का आदेश दिया जहां दुर्गा पूजा के चलते एक मेला भी चल रहा था। तथापि दो घंटा प्रतीक्षा करने के पश्चात स्रोत ने अचानक से सूचित किया कि उक्त आतंकवादी पहले ही मेला मैदान में घुस गए हैं जहां वह खतरनाक हथियारों के साथ विध्वंसक कार्रवाई करना चाह रहे हैं। यह पता चलने पर पुलिस/सेना का एक छोटा दल भेष बदलकर उनको पकड़ने के उद्देश्य से मेले वाले मैदान में प्रविष्ट हुआ। तथापि वहां सुरक्षा बलों की उपस्थिति देखकर तीन आतंकवादियों ने बहुत निकट से बचकर भाग निकलने के लिए सुरक्षा बलों पर गोलीबारी की। सुरक्षा बलों ने भी उन पर गोलीबारी की तथा एक आतंकवादी को निष्क्रिय कर दिया। इस बीच दो आतंकवादी भारी भीड़ का फायदा उठाकर, जो इस बीच दहशत में इधर-उधर भाग रहे थे, भाग गए। बाद में पूरे क्षेत्र में तलाशी की गई तथा एक 7.62 एम एम मौसर पिस्टल, 1 (एक) मैग्जीन, 7.62 एम एम बारूद की पाँच गोलियां, 9 एम एम के पाँच खाली कैच मृतक आतंकी से प्राप्त किए गए एवं तदनुसार जब्त किए गए। इस संबंध में एक मामला काचूगांव पुलिस स्टेशन के माध्यम से मामला संख्या 38/9 यू/एस 120 (ख)/121/121 (ए)/122/307 आई पी सी आर/डब्ल्यू धारा 25(1-ख) (ए)/27 शस्त्र अधिनियम आर/डब्ल्यू 10/13 यू ए (पी) अधिनियम दर्ज किया गया एवं इसकी जांच की गई। मामले की जांच के दौरान मृतक आतंकी की पहचान बीरदेव मुसाहारी @ बिरपन मुसाहारी पुत्र लेफ्टिनेंट थोसन मुसाहारी गांव संख्या 1 गोगिया गंदाबिल पुलिस स्टेशन काचूगांव के बतौर हुई जो कि एन डी एफ बी (वार्ता विद्रोह गुट) का कट्टर आतंकी था तथा कई अवैध गतिविधियों में शामिल था।

काचूगांव पुलिस स्टेशन एफ आई आर संख्या 38/09 दिनांक 27/09/09 की प्रमाणित प्रति यहां अनुलग्नक-"झ" के साथ संलग्न है।

एम आर संख्या 18/07 के माध्यम से दिनांक 27/09/09 की जब्त सूची अनुलग्नक-"ट" में संलग्न है।

शिकायतकर्ता एवं आरोपी के बयानों की प्रतियों सहित गवाहों के बयानों की अनुदित प्रमाणित प्रतियां अनुलग्नक-"ठ" (कॉली) में संलग्न हैं।"

16 उपरोक्त साक्ष्य के अतिरिक्त अधिकरण के समक्ष केन्द्रीय एवं असम राज्य सरकार तथा असम राज्य से कई पुलिस कर्मचारियों की गवाही भी दर्ज की गई तथा उनके बयान दर्ज किए गए। मुझे सभी साक्ष्यों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती क्योंकि वे करीब एक जैसे हैं। सभी अपने क्षेत्र में एन डी एफ बी के सदस्यों के अपराधों का विवरण प्रस्तुत करते हैं।

17. पुलिस कर्मचारियों तथा गृह मंत्रालय एवं असम राज्य के गृह विभाग के कर्मचारियों के हलफनामे के अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार ने (सील कवरों) में मेरे समक्ष विभिन्न आसूचना एजेंसियों जिसमें मंत्रिमंडल सचिवालय के आसूचना ब्यूरो, अनुसंधान एवं विश्लेषण शाखा, रक्षा मंत्रालय सम्मिलित हैं ने एन डी एफ बी की गैर कानूनी एवं आपराधिक गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया है। क्योंकि यह केन्द्रीय सरकार द्वारा मात्र मेरे अवलोकन के लिए प्रस्तुत किया गया था तथा मैंने इसका अवलोकन कर लिया है। अत: इस सामग्री को अधिकरण की कार्रवाई का भाग नहीं बनाया गया है जैसा कि केन्द्रीय सरकार द्वारा यह प्रस्तुत करते समय अनुरोध किया गया था।

18. केन्द्रीय सरकार एवं असम राज्य सरकार द्वारा इस अधिकरण के समक्ष रखे गए सभी साक्ष्यों को कोई चुनौती नहीं दी गई है ये अपरिवर्तित एवं असंदिग्ध रहे हैं। अत: अधिकरण को साक्ष्यों तथा प्रचुर मात्रा में रखी गई अन्य सामग्री के संबंध में संदेह करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता। इस अधिकरण की कार्रवाई के दौरान इनके समक्ष रखे गए साक्ष्य तथा विभिन्न गवाहों द्वारा प्रस्तुत सामग्री एवं साथ ही विभिन्न आसूचना एजेंसियों से सरकार द्वारा प्राप्त आसूचना जिसे इस अधिकरण के अवलोकन के लिए सरकार द्वारा केवल सील कवर में प्रस्तुत किया गया तथा जिसका अवलोकन केवल मेरे द्वारा किया गया तथा उसे दुबारा सील करके सरकार को भेज दिया गया इन सबको ध्यान में रखते हुए यह अधिकरण बिना संदेह के इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड को अवैध संगठन घोषित करने के सरकार के निर्णय को पुष्ट करना वांछनीय है और एतद्द्वारा इसे पुष्ट किया जाता है।

विभिन्न अवैध गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए जिसका विवरण विस्तार से इस रिपोर्ट के पूर्व के भाग में दिया गया है एन डी एफ बी को एक अवैध संगठन घोषित करना उचित है बावजूद इस तथ्य के कि एन डी एफ बी के कुछ सदस्य सरकार के साथ शांति-वार्ता के लिए आगे आए हैं परन्तु उन्होंने एन डी एफ बी की सदस्यता नहीं छोड़ी है और न ही वह समाज की मुख्यधारा से जुड़े हैं।

पी. के. भसीन,
नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैण्ड
के संबंध में अवैध गतिविधि (निवारक) अधिकरण

मई, 21, 2011

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 17th June, 2011

S.O. 1417(E).—In terms of Section 4(4) of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967, the order of the Tribunal presided over by Hon'ble Justice Shri P. K. Bhasin, Judge, Delhi High Court, to whom a reference was made under Section 4(1) of the Unalwful Activities (Prevention) Act, 1967 for adjudicating whether or not there is sufficient cause for declaring the National Democratic Front of Boroland (NDFB) organization of Assam as unlawful association is published for general information.

[F. No. 11011/57/2010-NE-III]

SHAMBHU SINGH, Jt. Secy.

Report of the Unlawful Activities (Prevention) Tribunal of India Constituted by the Government *vide* Notification No. S.O. 2826(E), dated 23-11-2010 in Respect of National Democratic Front of Boroland Under Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967.

National Democratic Front of Boroland (which shall hereinafter be referred to as 'the NDFB' was declared to be an unlawful organization by the Government of India way back in the year 1992 by issuing a notification under Section 3(1) of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (in short 'the Act of 1967') because of its primary aim of liberation of Boroland, consisting of Boro inhabited areas of Assam, from India by all kinds of unlawful and violent means. However, the unalwful activities of the NDFB continued unabated even thereafter and, therefore, the Central Government ever since then has been continuing to declare the NDFB as an unlawful association by issuing similar notifications after every two years and those declarations were confirmed by different Tribunals constituted by the Government of India as provided under Section 5(1) of the Act of 1967. *Vide* notification dated 23-11-2010, the Government of India made a fresh declaration declaring the NDFB as an unlawful association with immediate effect, subject of course to its confirmation by this Tribunal. That notification is re-produced below :—

"MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd November, 2010

S.O. 2826(E).—Whereas the National Democratic Front of Boroland (hereinafter referred to as NDFB) has its professed aim, the "Liberation" of Boroland consisting largely of Bodo inhabited areas of Assam and to bring the secession of the said areas from India, in alliance with other armed secessionist organizations of the North East Region;

And whereas, the Central Government is of the opinion that the NDFB has been:-

(i) indulging in illegal and violent activities intended to disrupt, or which disrupt, the sovereignty and territorial integrity of India in furtherance of its objective of achieving a separate Boroland,

(ii) aligning itself with other underground outfits of the North Eastern Region in furtherance of its objectives to create a separate Boroland;

(iii) engaging in unlawful and violent activities thereby undermining the authority of the Government of India and the Government of Assam and spreading terror and panic among the people,

(iv) indulging in extortion of money from various sections of the society with a view to financing and executing its plans and activities;

(v) embarking on a systematic drive for recruitment of fresh cadres with a view to continuing its terrorist and insurgency activities;

(vi) creating carnage and ethnic violence resulting in killings, destruction of property of non-Bodos inhabiting in Bodo dominated areas in Assam with a view to spreading panic and insecurity among non-Bodos;

(vii) establish camps and hideouts across the Country's border to carry out its secessionist activities;

And whereas the Central Government is further of the opinion that the violent activities of the NDFB include:

(i) killing of 63 persons including 3 Security Force personnel in 168 incidents of violence in 2008; and

(ii) killing of 13 civilians in 74 incidents of violence in 2010 (up to 30th June)

And whereas the Central Government is also of the opinion that for the reasons aforesaid, the activities of the NDFB are detrimental to the sovereignty and integrity of India and that it is an unlawful association:

And whereas the Central Government is also of the opinion that unless the unlawful activities of the NDFB are kept under control, the organization may make fresh recruitments, indulge in violent, terrorist and secessionist activities, collect funds and endanger the lives of innocent citizens and security forces personnel; and therefore, circumstances do exist which render it necessary to declare the NDFB as an unlawful association with immediate effect;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of

1967), the Central Government hereby declares the National Democratic Front of Boroland(NDFB) as an unlawful association;

The Central Government, is of further opinion that it is necessary to declare the NDFB to be an unlawful association with immediate effect and accordingly, in exercise of powers conferred by the proviso to sub-section (3) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby directs that this notification shall, subject to any order that may be made under section 4 of the said Act, have effect from the date of its publication in the Official Gazette.

F.No. 11011/57/2010-NE-III
R.R. JHA, Jt. Secy."

2. After issuance of the afore-said notification the Government of India constituted one-man 'Unlawful Activities(Prevention) Tribunal' to be headed by me vide its Notification No.S.O. 2964(E) dated 15.12.2010 as provided under Section 5(1) of the Act of 1967 and then vide notification dated 23.12.2010 made a reference to this Tribunal for adjudicating whether or not there is a sufficient cause for declaring the NDFB as an unlawful association. Alongwith the reference notifications dated 23rd November, 2010, 15th December, 2010 and a resume of facts/ unlawful activities of the NDFB which prompted the Government of India to declare this organisation as an unlawful association were also submitted. The contents of that resume are re-produced below:-

AIMS AND OBJECTIVES OF THE OUTFIT

The NDFB (originally known as Boro Security Force) was formed on 3rd October, 1986 with the avowed aim and objective of liberating the Bodo-inhabited areas of Assam from India and to form an independent and sovereign Bodoland through armed struggle. The aims and objectives of the NDFB are:-

(i) to liberate Boroland from the Indian expansionism and occupation;

(ii) to free the Boro nation from the colonialist exploitation, oppression, and domination;

(iii) to establish a Democratic Socialist Society to promote liberty, equality and fraternity; and

(iv) to uphold the integrity and sovereignty of Boroland.

The NDFB entered into an Agreement for 'Suspension of Operation'(SOO) with Government of India and Government of Assam initially for one year with effect from 1st June 2005, which has been extended from time to time. The SOO agreement is valid upto 31.12.2010. Despite this agreement, the outfit has been making for 'sovereignty' and 'self-determination'.

INFLUENCE AREAS/STRENGTH AND ARMS HOLDING

NDFB continues to be active in the Bodo dominated areas of Kokrajhar, Chirang, Udalguri, Baska, Barpeta, Nalbari, Darrang, Kamrup, Sonitpur Bongaigaon, Dhemaji and Karbi Anglong district of Assam. According to Ranjan Daimary, the leader of NDFB who was arrested on 1st May, 2010, NDFB has a cadre strength of around 170-180 with around 100 arms.

LINKS WITH OTHER TERRORIST OUTFITS/PAKISTAN INTER SERVICES INTELLIGENCE.

NDFB has links with National Socialist Council of Nagaland (Isac-Muviah) [NSCN(I/M)]. NDFB (RD) and NSCN (I/M) are members of an umbrella organization styled as 'Self Defence United Front of South East Himalayan Region' which includes small North East Extremist groups of Tripura, Meghalaya and Manipur. There has been no activity by this front in the recent past. The leaders of NDFB keep visiting abroad particularly Thailand (Bangkok) and Bangladesh. It has shelters/hideouts in Bangladesh. NDFB has set up a training camp near Indo-Myanmar border. During interrogation of Ranjan Daimary he confessed his links with Pak-ISI, which provided arms as well as training of NDFB.

VIOLENT ACTIVITIES OF NDFB

After signing of agreement for Suspension of Operation (SoO) in May 2005, NDFB maintained a low violence profile till 2007. However, year 2008 witnessed a sharp increase in violence with 112 people being killed in 93 incidents of violence. On October 30, 2008, some cadres of NDFB led by Ranjan Daimary planned and executed serial blasts at Guwahati, Barpeta, Bongaigaon and Kokrajhar, killing 88 persons and injuring 423 persons. Since 2009 violence by NDFB has shown an increase. During the year 2009, 63 persons including 3 Security Forces personnel were killed in 168 incidents of violence attributable to NDFB. In 2010 (upto 30th June), 13 civilians were killed in 74 incidents of violence by NDFB.

In the past NDFB had been targeting non-Bodos, businessmen, police personnel and members/leaders of the political parties including Bodo parties/organization opposed to its ideology. The NDFB has been responsible for collection of huge sums of money through coercive methods. Tea gardens, businessmen contractors, doctors, lawyers and

even teachers working in small towns of Assam have been routinely asked to pay up exorbitant sum of money to NDFB failing which threat of death penalty is held out to the victims. NDFB UGs have also been harassing and intimidating non-Bodos and have been asking them to either pay 'Boroland tax' or leave the 'Boroland' area otherwise face dire consequences. Such acts of NDFB have created a fear psychosis among the non-Bodos living in the 'Boroland' area. NDFB's widespread extortion have yielded crores of rupees which are utilized for financing its organizational machinery, training programmes, arms procurement and stay of its leaders abroad.

Continued adherence to violence by the NDFB, links with other militant outfits, propensity to indulge in sabotage and cause ethnic tension/violence, rampant extortion and above all its insistence on 'sovereign Boroland' are matters of serious concern. The outfit continues to have the capability to indulge in targeted violence. Arrest of Ranjan Daimary, President [NDFB (RD)] has not affected its violence profile. NDFB through a press release on 8th July 2010 owned responsibility of the serial blasts on railway tracks in Bongaigaon on the intervening night of 7.7.2010 and 8.7.2010.

RECOMMENDATION OF GOVERNMENT OF ASSAM, MINISTRY OF DEFENCE AND INTELLIGENCE AGENCIES

The Government of Assam and Intelligence Bureau have recommended that NDFB(P) under the leadership of Dhiren Boro President need not be declared 'unlawful association' under the Unlawful Activities(Prevention) Act, 1967 and only NDFB(RD) be declared as an unlawful association for a period of two years beyond the 22nd November, 2010. The Ministry of Defence, Central Reserve Police Force, Border Security Force and Research & Analysis Wing have, however, recommended that NDFB may continue to be declared 'unlawful association' beyond 22nd November, 2010.

JUSTIFICATION FOR EXTENSION OF THE BAN

Considering the situation described in the preceding paragraphs, the NDFB has been declared 'unlawful association' under the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 for a period of two years beyond 22nd November, 2010 on the following grounds:

(i) indulging in illegal and violent activities intended to disrupt, or which disrupt, the sovereignty and territorial integrity of India in furtherance of its objective of achieving a separate Boroland;

(ii) aligning itself with other undergrounds outfits of the North Eastern Region in furtherance of its objectives to create a separate Boroland;

(iii) engaging in unlawful and violent activities thereby undermining the authority of the Government of India and the Government of Assam and spreading terror and panic among the people;

(iv) indulging in extortion of money from various sections of the society with a view to financing and executing its plans and activities;

(v) embarking on a systematic drive for recruitment of fresh cadres with a view to continuing its terrorist and insurgency activities;

(vi) creating carnage and ethnic violence resulting in killings, destruction of property of non-Bodos inhabiting in Bodo dominated areas in Assam with a view to spreading panic and insecurity among non-Bodos;

(vii) establish camps and hideouts across the Country's border to carry out its secessionist activities;

AND WHEREAS the Central Government is further of the opinion that the violent activities of the NDFB(RD) include

(i) killing of 63 persons including 3 Security Force personnel in 168 incidents of violence in 2008; and

(ii) killing of 13 civilians in 74 incidents of violence in 2010(upto 30th June).

Under the proviso of sub section (3) of section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967, if the Central Government is of the opinion that circumstances exist which render it necessary to extent the notification declaring NDFB as 'unlawful association', it may direct for reasons to be stated in writing that the notification shall have effect from the date of its publication in the Official Gazette. The activities of the NDFB are continuing, and it was felt that if there were any delay in extension of the notification, this organization may take undue advantage of the situation and mobilize its cadres for escalating secessionist, subversive and violent activities. It may also provide an opportunity to the leadership of this organization to openly propagate anti-national activities in collusion with foreign elements inimical to India's security concerns. The Police and the Security Forces in such an eventuality will also find it difficult to detain and prosecute the members or cadres of the outfit. It was, therefore, considered necessary to extend the notification banning NDFB for a further period of two years from the date of its publication in the Official Gazette."

3. The matter was taken up by me for preliminary consideration on 04.01.2011. After considering the facts narrated by the Government in the notification dated 23rd November, 2010 as well as the Resume of Facts, which have been re-produced verbatim already, I directed issuance of notice to the NDFB to show cause within 30 days from the date of service of the

said notice as to why it be not declared as an unlawful association. The notice to show cause was directed to be served on the NDFB at all its available addresses besides getting the same published in two daily national newspapers and two local newspapers of Assam. The notice was further directed to be served on the NDFB by affixing a copy thereof at some conspicuous part of the office of the said organization.

4. The NDFB was duly served, as directed, but it did not respond to the show-cause notice issued by this Tribunal within the period of thirty days and so further proceedings in the matter were ordered to be held *ex-parte*.

5. The Central Government and the State of Assam were permitted to adduce evidence by way of affidavits in support of the declaration of the NDFB being an unlawful association. On behalf of the Central Government Mr. J.P.N. Singh, Director in the Ministry of Home Affairs filed his affidavit, Ex.SW-19/A. Alongwith his affidavit Mr. Singh also annexed, besides other relied upon documents, Resume of facts (Ex. SW-19/B), which is the same document which was forwarded to this Tribunal by the Government while making the reference and contents of which have already been re-produced. That Resume is now part of the affidavit of Mr. J.P.N. Singh. A copy of the Constitution of the NDFB containing its unlawful aims and objects has also been placed on record alongwith the affidavit of SW-15 Mr. D.Malakar, Joint Secretary, Government of Assam, Home & Political

Department and the same is Ex. SW-15/A. Relevant Articles of that Constitution are re-produced below:-

> *"ARTICLE 6. AREA OF OPERATION*
>
> *Notwithstanding the activities of the NDFB shall mainly be in Boroland, it shall have no jurisdiction as far as the operation is concerned.*
>
> ***ARTICLE 18. THE BOROLAND ARMY***
>
> *To carry out the armed struggle for national liberation the NDFB shall have its own army known as the BOROLAND ARMY. The Boroland Army shall be regulated through Boroland Army Formation.*
>
> ***ARTICLE 19. THE PEOPLE'S REVOLUTIONARY GOVERNMENT***
>
> *The NDFB in the course of revolutionary struggle shall form and establish the People's Revolutionary Government known as the GOVERNMENT OF THE PEOPLE'S REPUBLIC OF BOROLAND.*
>
> ***ARTICLE 20. THE PEOPLE'S REVOLUTIONARY COURT***
>
> *The NDFB shall have a JUDICIARY known as the People's Revolutionary Court for free and fair trial of conviction."*

6. The other important witness to whose evidence my special attention was drawn by the learned Additional Solicitor General as well as the learned counsel for the State of Assam is SW-14 Ms. Banya Gogoi, Superintendent of Police(SOU), Dispur, State of Assam. This is what she has stated in her affidavit, Ex. SW-14/A:-

> " That the deponent begs to state that, there was an agreement of suspension of operation (SoO) signed on June 1, 2005 between the Government of India and Government of Assam and the NDFB for a period of 6 (six) months and subsequently it has been extended in phased manner with an aim to have lasting peace in the region. However, in spite of the aforesaid agreement, NDFB continues to violate the ground rules for suspension of operation as agreed on June 1, 2005 and is actively waging war against the State. In spite of the above agreement, the NDFB continued its secessionist and violent activities with a view to establishing a sovereign Bodoland by stepping up its acts of terrorist violence including attacks on Army/. Police/ Security force personnel and law abiding civilians and destruction of public and private properties. The outfit has established a number of camps/ hideouts in Sherpur district and the Chittagong Hill tracts of Bangladesh bordering with Meghalaya & Mizoram respectively. The establishment of camps in foreign soil

facilitated the training of the NDFB cadres which remained unchecked. This has facilitated the continuance of their depredatory activities in the State as because after imparting training to the newly recruited cadres in foreign soil they are deputed to the State for committing subversive activities. The existence of similar camps of other North-Eastern militant outfits like ANVC, HNLC, NSCN (IM), ULFA and NLFT in close proximity to the NDFB camps in Bangladesh helps the outfit in the transshipment of arms. The unholy nexus of NDFB with HNLC of Meghalaya (Hynniewtrep National Liberation Council) and ULFA is still continuing. They have established a camp on Assam-Meghalaya border shared by Ribhoi district of Meghalaya, which is within the vicinity of Guwahati City. From the said place, they jointly conducted operation in Guwahati City like kidnapping of businessmen for realizing ransom. The NDFB leadership stationed in Bangladesh including President Ranjan Doimary (since arrested) is espousing the cause of establishing sovereign independent Bodoland. Ranjan Doimary (President, NDFB) urged trainees in a passing out parade held in Khagrachari camp of Bangladesh to sacrifice their lives for establishing an Independent Bodoland.

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

That since its inception, NDFB in pursuance of its secessionist objective has been indulging in large scale terrorist and subversive acts in the Bodo-inhabited areas within the districts of Darrang, Sonitpur, Kokrajhar, Nalbari, Barpeta, Nagaon, Golaghat, Lakhimpur, Dhemaji, Kamrup, Chirang, Udalguri, Karbi-Anglong, Baksa, Goalpara, Dhubri and Guwahati City causing widespread panicy and feeling of insecurity among the non-tribal population and also the Bodos who oppose the secessionist ideology of the NDFB.

That the organization has been continuing to maintain close nexus with other insurgent groups of the North East including the ULFA, NSCN (K), NSCN(IM), KYKL, UNLF, KLO, TPDF, HNLC, ANVC and LDCM. It has established number of hideouts viz. Bolchari camp (Khagrachari), Manikura (Halowaghat), West Kafrul (Dhaka town) in Bangladesh. They established transit camps in collaboration with NLFT.

Extract from the Interrogation Statement of Ranjan Doimary is enclosed and marked as **ANNEXURE- "B"**

Deponent begs to state that the entire interrogation statement of Ranjan Doimary is sensitive in nature, therefore, deponent craves the leave of this Hon'ble Tribunal to file the entire original statement in sealed cover before the Hon'ble Tribunal, if so required.

Besides, the presence of similar camps of other North-Eastern Militant outfits e.g. ANVC, HNLC, NSCN (IM), ATTF and NLFT in close proximity to the NDFB camps help the outfit in the transshipment of arms received with the help of various agencies via the Chittagong Port route. The NDFB leadership stationed in Bangladesh including President Ranjan Doimari (since arrested in May 2010) dwelt upon the establishing a sovereign independent Bodoland.

That in view of the increasing terrorist violence indulged in by the NDFB, the Govt. of India had initially notified the outfit as an unlawful association under the U.A(P) Act vide Govt. of India's Notification No. SO 851 (E) Dtd. 23-11-92. The ban was subsequently extended for a

period of 2 years vide Govt. of India's Notification No. SO 836 (E) Dtd. 23-11-94. Because of the continued depredatory acts of terrorist violence which resulted in large-scale killing of innocent civilians, Police/SF personnel etc and caused widespread panic among the peace-loving citizens, the ban on the NDFB was further extended for a period of 2 years vide Govt. of India's Notification No. SO 811 (E) dtd. 23-11-96 w.e.f. 22.11.96. The said ban was again extended for another 2 years vide Govt. of India's notification No. SO 988 (E) dtd 23.11.98. The said extension of the ban was made vide GOI Notification No. S.O.1043 (E) dtd 23-11-2000. The said ban was again extended for another 2 years vide GOI Notification No. SO 1224 (E) dtd. 23-11-2002. The extension of the ban was again made vide GOI Notification No.S.O. 1292 (E) dtd 23-11-2004 for a period of 2 (two) years up to 22-11-2006. Further extension of ban was made vide Government of India (GOI) Notification No. SO 1292 (E) dated 23-11-2006 for a period up to 22-11-08. Again vide Notification SO. 2714(E) dated 23-11-2008 it was extended upto 22-11-10. The Honorable Tribunal constituted under the Unlawful Activities (Prevention) Act confirmed the ban order of the Government of India (GOI).

That following the arrest of some senior leaders including the Vice Chairman, the General Secy. of NDFB and decreasing trend of public support base towards the outfit after the formation of Bodoland Territorial Area Districts (BTAD), the NDFB declared unilateral cease fire w.e.f. 15-10-2004. An agreement of suspension of operation was signed between GOI, GOA and the NDFB leadership w.e.f. 01-06-2005 for one year which has been extended for another 6 (six) months only w.e.f. 01-06-2006 because of the secessionist philosophy pursued by NDFB even after ceasefire. The Cease Fire at this stage extended up to 30-06-2011.

That the trend of violence perpetrated by the NDFB after suspension of operation w.e.f. 01 June, 2005, reveals that in 2005 after SoO, the outfit committed 05 nos. of violent incidents where 02 nos. of innocent civilian were killed, again 28 nos. of violent incidents were committed in 2006 where 7 civilians died, in 2007, 36 nos. of violent incidents were committed where 3 civilians died. Meanwhile the leadership of NDFB in Assam was contemplating to drop the issue of sovereignty from the Charter of Demand with a view to expediting the peace process. This was not accepted by Ranjan Doimary, President of NDFB, who was camping at that time in his Dhaka hideout in Bangladesh. This gave birth to a conflict among the leadership centering round the sovereignty issue. While Ranjan Doimary, with his loyalists, was a protagonist of "sovereignty" issue to be retained in the Charter of Demand, the other group comprising majority of the top hierarchy including Dheeren Bodo, Vice President, Gobinda Basumatary, Genl. Secy. etc. was keen to solve their problems within the ambit of the constitution of India by giving up the demand of sovereignty. To this affect Gobinda Basumatary Genl. Secy. of NDFB submitted the revised Charter of Demand in Sept. 29/08 to the Govt. of India where issue of sovereignty was dropped. Under these circumstances, Ranjan Doimary started to intensify violence in their area of influence by regrouping his loyalists, some of whom were operating in Assam while some others in Bangladesh under his guidance with a view to demonstrating their strength as well as to put pressure on the Govt. of India. As a result, in 2008 there was a spurt in commission of violence and other subversive activities. All total 128 nos. of violent incidents took place in 2008 where 126 civilians

were killed which included the gruesome incidents of serial bomb blasts that took place on Oct. 30, 2008 in four town of Assam including Guwahati City where 89 persons died and 593 persons sustained injury. The ongoing conflict among the leadership became evident in the outcome of the General Council meeting that was held in the Kokrajhar Designated camp on Dec. 15, 08 where Ranjan Doimary was replaced by Dheeren Boro as President of the outfit. At present the NDFB under Dhiren Boro is maintaining low profile and is keen to solve their problems through dialogue for which, they have rechristned themselves as NDFB (Progressive) and amended their constitution.

However, it is a matter of serious concern that there are several instances of cadres of the NDFB (Progressive), i.e. the NDFB (Pro-talk faction) group leaving the designated camps under different pretexts of sickness, visiting home for personal reasons, family functions and then joining the NDFB commonly known as NDFB (Ranjan Doimary faction) or NDFB (R) or NDFB (Anti-talk faction) and thereby resorting to violent activities again. For an example, G. Rafikhang, who was the camp Commander of Borbori designated camp in Baksa district, Bishnu Goyari @ Bidei an inmate of Borbori designated camp, deserted the camp and aligned with the above NDFB (Ranjan Doimary faction) who opposed the ongoing peace process initiated by NDFB (Pro-talk faction).

The speech by the Vice President of NDFB G. Rafikhang on the Martyr's day of September 14, 2010 has a clear indication of division of the outfit into the pro-talk and anti-talk group where by the latter vowed to carry on their secessionist ideology and violent activities against the State.

A copy of the above noted statement of G. Rafikhang is enclosed in **Annexure C.**

There are innumerable instances of extortion by NDFB (Ranjan Doimary faction) in different parts of the state. They are secretly collecting money from the individuals, businessmen and contractoRS. The cadres of the organization are found involved in issuing demand letters to the different civilians, the Heads of the ongoing projects etc. in the name of donation for the organization. This is a tactic adopted by the organization to extort money in the name of donation. The cadres being fully equipped with arms and ammunition, extorted money from different individuals, businessmen etc. at gun point. They even did not hesitate to kill any person who fails to pay the demanded amount. In this connection it may be mentioned that on July 23, 2009 at around 1130 hrs, 3 (three) suspected NDFB (R) extremists covering their face by clothes, kidnapped an employee of the IIRM (Institute of Integrated Resource Management) namely, Dipak Gurung (25) S/O Ritu Gurung of village Mijikajan, PS-Biswanath Chariali, from Jor Pukuri under Dhekijuli PS in Sonitpur district. Further information has been received that, based on a secret information, police/ army recovered Dipak Gurung from Loudangi jungle area (Dhekiajuli PS). This refers to Dhekiajuli PS Case No. 219/09 u/s 365/ 34 IPC and on March, 22, 2010, suspected NDFB (R) extremists kidnapped two persons, namely, Md. Alam (25) s/o Md. Moinuddin and Md. Golab s/o Md. Nasiruddin belonging to the Bihari Muslim community (Quilt maker), who stayed in a rented house of Ward no. 2 of Rangapara town under Rangapara PS of Sonitpur district. On 25-03-10 Police recovered their dead bodies from the nearby jungle of village Gaurangjuli Pahar under Rangapara PS.

On August 3, 2010, around 2030 hrs, acting on a tip off, Tezpur police apprehended 4(four) NDFB (R) women cadres from Tezpur Bus Stand namely, Miss Usha Ramchiary @ Udangshri of Kathalguri (Silapathar PS, Dhemaji dist), Mrs Aruna Basumatary of Jiabari, MRs. Mina Basumatary of No. 4 Batashipur and MRs. Urmila Gayari of Alaisri Jiabari, all under Dhekiajuli PS. Police also recovered cash Rs. 12,16,153/- (Rupees twelve lakh sixteen thousand and one hundred fifty three) only, one mobile phone and some incriminating documents from their possession. This refers Tezpur PS Case No. 726/10 U/S 120(B)/ 121/ 121(A)/ 384 IPC R/W Sec. 10/ 13 UA(P) Act.

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

That the he NDFB(Rranjan Doimary faction)(in short referred to as "NDFB(R)") continued to attack the political leaders, innocent civilians:

On April 24, 2009, at around 1130 hrs, while Shri S. K. Bwismuthiary, candidate for Kokrajhar HPC along with one Executive Member of BTAD and others, were proceeding in a convoy towards Tipkai Panbari side from Gossaigaon, they were ambushed by suspected NDFB (R) cadres at Nasraibari under Gossaigaon PS of Kokrajhar district and thereby 2(two) persons (Police-1, Civ-1) were killed and 9 (Police-5, Civ.-4) were injured. Shri S.K. Bwismuthiary escaped unhurt. The injured persons were en shifted to Gossaigaon hospital for treatment. Further On Oct. 04, 2009, at around 1800 hrs, the NDFB (R) cadres unleashed a reign of terror by opening indiscriminate firing upon innocent civilians at No. 2 Bhimajuli village and No. 2 Dilichang under Biswanath Chariali of Sonitpur district killing 12 (twelve) persons and causing injuries to 10(ten) otheRs. This refers to Biswanath Chariali PS Case No. 151/ 09 U/S 120(B)/ 121/ 121(A)/ 122/ 324/ 326/ 307 IPC R/W Sec. 27(3) Arms Act and Sec. 10/13 UA(P) Act.

On 29/30-06-09 NDFB (R) cadres brutally killed 4 Hindi Speaking people at No - 1 Nahoroni grant under Rangapara PS of Sonitpur District. This case relates to Biswanath Chariali PS Case No. 151/ 09 U/S 120(B)/ 121/ 121(A)/ 122/ 324/ 326/ 307 IPC R/W Sec. 27 (3) of Arms Act and Sec. 10/13 UA(P) Act.

Recruitment and training in foreign soil : - The NDFB (R) leadership has been recruiting new cadres for their organization with a view to strengthening their organizational base for achieving their ideology of creating sovereign Bodoland. During cease-fire period, the outfit has also recruited number of youths from different parts of the State for the organization. The new recruits have been sent to Bangladesh in batches for getting imparted with training in handling of arms, explosives etc. They underwent training in different camps of NDFB(R) in Bangladesh. In October/09 a new training camp has been set up at Tamo, Myanmar with help of KYKL, a Meitei outfit, where 64(sixty four) cadres including 54(fifty four) new cadres underwent arms training under KYKL.

Extract from the interrogation statement of Ranjan Doimary is enclosed. **ANNEXURE- " E".**

Deponent begs to state that the entire interrogation statement of Ranjan Doimary is sensitive in nature, therefore, deponent craves the leave of this Hon'ble Tribunal to file the entire original statement in sealed cover before the Hon'ble Tribunal, if so required.

That during the imposition of the above ban, the NDFB continued its secessionist activities and waged war against the State by stepping up its acts of terrorist violence including attacks on the SF, law abiding civilians, kidnapping, extortion and destruction of public properties. During the ban period from 23-11-2008 to 22-11-2010 total 99 persons had been killed by NDFB and 146 persons received injuries in their murderous attempts. They committed 323 incidents of violence. They also kidnapped 51 persons for ransom.

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

The NDFB cadres also surrogated a new militant group which have demonstrated activities in district of Dhemaji and part of Lakhimpur and northern part of Majuli in Jorhat district under name and style "Liberation Democratic Council of the Mishing" (LDCM)" with a view to penetrating into the areas inhabited by the Mishings for safe hideout. About 25 cadres of LDCM were imparted training in NDFB camp located at an interior place in Assam-Arunachal Pradesh border.

Extract from the Interrogation Statement of Ranjan Doimary and debriefing statement of Ahit Swargiary are enclosed and marked as **ANNEXURE-"G".**

Deponent begs to state that the entire interrogation statement of Ranjan Doimary is sensitive in nature, therefore, deponent craves the leave of this Hon'ble Tribunal to file the entire original statement in sealed cover before the Hon'ble Tribunal, if so required.

That the activity of NDFB are detailed herein below:

Nexus with other militant outfits of the State:

Earlier the NDFB had only diplomatic relationship with ULFA. But from 2008, while the NDFB was on the verge of split-up, giving birth to NDFB (R), the new faction has drawn itself closer to ULFA. Now both of them have developed operational relationship with a view to furthering their common intention in context of dwindling mass support.

Of late, the NDFB had developed its nexus with the KLO/ NSCN (IM)/ KYKL/ NLFT/ NSCN(K)/HNLC/ KPF/ UNLF/ANVC/ GNLF and LDCM. Extract from the interrogation statement of Ranjan Doimary is enclosed and marked as **ANNEXURE-"H"** Deponent begs to state that the entire interrogation statement of Ranjan Doimary is sensitive in nature, therefore, deponent craves the leave of this Hon'ble Tribunal to file the entire original statement in sealed cover before the Hon'ble Tribunal, if so required.

a) **Activities of NDFB in Meghalaya.**

In the post-ceasefire period the NDFB forged unholy alliance with the HNLC, a militant outfit of Meghalaya. It has committed several incidents of kidnapping, explosion, smuggling of arms consignment etc inside Meghalaya from across the international border in connivance with HNLC. The serious aspect of this nexus is that HNLC is providing the logistic support to these pro-Ranjan Doimari NDFB cadres who sneak into Meghalaya after commission of crime in Assam.

On the other hand a newly formed outfit under name and style of "Liberation Achik Elite Force (LAEF)" having stronghold in East and West Garo Hills district of Meghalaya has established contact with NDFB. These two outfits occasionally resorted to extortion by means of kidnapping. They have also become accomplices in smuggling of arms from Dimapur as well as from across the international border with Bangladesh.

In an abortive attempt they tried to kidnap the son of a businessman in Shillong. However the attempt was failed due to prompt action by the Meghalaya Police. Police managed to apprehend two of them.

Report of Superintendant of Police, East Khasi Hills district, Shillong, Meghalaya and marked as **ANNEXURE-"I"**.

b) **Activities of NDFB in Arunachal Pradesh:**

It is pertinent to note here that NDFB(R) cadres are involved in a spate of kidnappings for ransom which have demonstrated an increasing trend particularly in Sonitpur district. The high profile kidnapping of the IFS officer of Maharashtra Shri Vilas Bardekar from the bordering state of Arunachal Pradesh on 12th May, 2010 has given them a shot in the arm. The officer was kept in their custody in the forest tracts on the inter state border and was released by the outfit reportedly after receiving a payment of huge amount of ransom money.

Report of SP Udalguri are annexed as **ANNEXURE-"J"**.

d) **Activities of NDFB in Indo- Bhutan Border :**

(i) Further it is pertinent to mention that in the night of 18/19 July/09 a group of (8/9) NDFB (R) cadres equipped with AK-series weapons snatched away 4(four) nos. of SLR from the Forest Guards of Bhutan at border Pillar No. 198/4 an area bordering Chirang district of Assam.

(ii) The outfit has also demonstrated its fire power by attacking a patrolling party of SSB on July 26, 2010 in Siklajan of Chirang district and killed 4 (four) SSB personnel including one Assistant Commandant and injuries to 3 (three) otheRs. Report of SP Chirang is annexed as **ANNEXURE-"K".**

That In 2009, NDFB (R) self styled President Ranjan Doimary reconstituted the National Executive council in the Bangladesh based hideout with 11 important high ranking cadres.

In a press release dtd 18-11-09 the NDFB (R) adopted the resolution of their general meeting held on 29th and 30th Oct. 2009. The meeting resolved and vowed to work and fight together with vigor and determination to liberate Bodoland and the Western South East Asia, which is synonymous with the so-called "North East India". Copy of Press release dtd. 18-11-09 is annexed as **ANNEXURE –"L".**

That further the general meeting of NDFB (R) held on 17-06-10 with the top hierarchy of the Bodoland Army and the National Council adopted an eight (8) point resolution. Among all these, the most significant resolution of the Action & Plan Policy was the decision to destroy the government properties like bridges, electricity powerhouses, Government offices and other Government properties, enemy properties and means of transport & communication.

As a sequel to these decisions, it demonstrated its capability to cause blast. As of late it committed a number of blasts in the first week of July 2010 along the railway tracks. In one such explosion on the railway track at Madati bridge in Kokrajhar district on July 08, 2010, the Garib rath Express suffered casualty where one child died.

In another resolution of the meeting to strengthen the Foreign Diplomacy & Foreign base a new strategy was passed, by the General meeting to send SS Lient. G. Onthao as the Representative with 5 cadres to Nepal for the survey to make new base for the outfit in that country. Copy of resolution of general meeting of NDFB (R) dtd. 17-06-10 sent through e-mail to different newspaper houses is marked as **ANNEXURE –'M".**

That finally the NDFB higher ups have contemplated to approach the Govt. of Bangladesh and China to help NDFB in fighting the Indian Union to fulfill their so called legitimate demand.

Copies of paper cutting of Dainik Batori dtd. 04-10-09 is annex as **ANNEXURE-N".**

However, due to persistent efforts by security forces and intelligence agencies, NDFB(R) Chief Ranjan Doimary was arrested by the State Police on 1st May, 2010. Since then he has been thoroughly interrogated for his role in all violent activities in Assam. He was arrested by the CBI in connection with the serial blast cases of 30th Oct, 2008 as

well as by State police in a number of cases pertaining to other subversive / criminal acts in Assam that included attack on Police outpost.

Due to the arrest of NDFB Chief Ranjan Doimary, the NDFB's leadership has suffered major jolt. However, the intelligence input indicates that the remaining leadership, in a state of desperation, is trying to boost up sagging morale of field cadres by exhorting them to cause as many IED explosions as possible in different parts of the state. Accordingly many, innocent lives were lost in violent incidents committed by NDFB after arrest of Ranjan Doimary, who was arrested on May 1, 2010. Highly reliable intelligence inputs also indicate that several Bangladesh/ Myanmar based important cadres of NDFB (R) viz. Danswarang, Sangbijit, Bidei, Laifang, Naisong etc are trying to indulge in more terrorist activities including extortion and kidnapping for ransom.

The belligerent attitude of the outfit was very much evident in the e-mail statement dated 01-11-2010 made By. B. Jwngkhanh @ George Bodo @ John, Deputy C-in-C of the NDFB (since arrested) whereby he threatened the Govt. of India and Govt. of Assam that the NDFB would kill twenty or more Indians if one Bodo people or NDFB cadre would be killed by the Indian Army.

As a sequel to this statement under the pretext of death of an NDFB (R) cadre in an encounter with security force (in short "SF") in Sonitpur district on Nov. 08, 2010 the NDFB resorted to widespread violence on Nov. 08 & Nov. 09, 2010 that spread in the districts of Sonitpur, Udalguri, Baksa, Chirang, Kokrajhar, and Karbi-Anglong districts where in 9 number of incidents 22 (twenty two) innocent civilians including 12(twelve) no. of Hindi speaking persons were killed and 13 number of persons sustained injury.

A copy of the e-mail statement of B. Jwangkhang @ George Bodo @ John published in news paper has been enclosed in **Annexure "O".**

That the figures of the violent incidents involving NDFB (R) are noted in : **ANNEXURE-"N"."**

7. The extracts of the highly explosive statement of Ranjan Doimary @ D.R. Nabia S/o Late Stephen Doimary of Village Odlakahibari, arrested in connection with SOU PS case No. 2/98 u/s 384 IPC R/W section 10/13 UA (P) Act, referred to by SW-14 in her evidence also need to be noted. This is what he had claimed in his statement made during his interrogation by the police after his arrest:-

"Camps and hide outs in Bangladesh:

1. **Boholsori camp:-** In Khagrasari dist under Chittagong Hill tract. From Khagrasari town it is about one hour's journey by vehicle to Bagaihat via Dighinala. From Bagaihat Bazar during rainy season to move towards North East by powerboat (up stream) for about 4/5 hour and in winter season it takes about 6/7 hours by powerboat. The name of the river is Bolsory. The boat reaches a place, which we call "Boat Command". We keep a powerboat. ¾ NDFB cadres station there. Adjacent to Boat Command we have an agricultural farm where our cadres cultivate green vegetables for our use. To the down ward side of Boat Command Boholsory bazaar is located where there are about 4/5 shops. It is about 1 ½ /2 hrs by powerboat from Boholsori bazaar to the Boat Command. Adjacent to the Hoholsory bazaar there are Tripuri and Chakma villages. Earlier the camp was called "Tham thim camp means preparation camp.

From boat command after about 20 minutes walk to the West HNLC camp is located. There are about 6/8 HNLC cadres with 303 Rifle/SLR.

After about 20/25 minutes walk to the West from HNLC camp our NDFB (AT) camp is located. This camp is now known as Council HQ Camp.

Inmates of the Camp:- (as on 30/04/2010)

1. SS 2nd LT B. Thulunga (28/30) @ Thungri Boro of Baksa dist Camp commdr.
2. SS LT B Fwrdan (32) of near Bongalgaon.
3. SS LT B. Okhri (31) of Baksa/Nalbari dist.
4. SS Capt G. Rifikhang (33) @ Rajesh Gorari of Barpela Road, Vill. Khagrabari with wife and son-Finance Secy.
5. N. Dinthigra (32) of Runikhata area of Kokrajhar dist.-Gen Secy.
6. B.Onjalu (31) 2 Abhiram Basumatary of Sila Baligaon PS Silapathar, Dhemaji-Info and Publicity Secy.
7. PTE B. Bithorai (26) of Borobori PS area (Barama) Baksa dist-Senior among women cadres.SS Sgt. B. Jarang (28) of Kakrajhar dist.
8. BSM B. Okha Hadwi (29) of Chirang dist.
9. and 60 others including 6/8 female cadres whose names not known.

Arms strength:

AK 56 Rifle	-	12 Nos.
Semi automatic Rifle	-	3 Nos.
Snipper Rifle	-	1 No.
9 mm Pistol	-	1 No.
Explosive	-	Nil
Generator	-	1
H F Set	-	1
R T Set	-	4/5
Mobile Phone	-	10 approx (Air cell, Gramin and Banglalink).
Wooden powerboat	-	1
Portable TV	-	1

Sl. No. 4, 5 and 6 are also staying in the hired house at Khagrapur near Khagrasari town.

Hide out at Khagrapur near Khagrasari town:-

NC members G. Rifikhang with wife and son, D. Dinthigra and B. Onjalu take shelter in the hired house. They also stayes in the main camp.

Transit Camp at Manikura, PS-Halowaghat:-

Manikura transit is about 5/6 km from Indo-Bangla Border. As per my instruction SS LT B. Satbangsa @ Sushil Drong @ Sushil Boro had purchased about I.S. bigha of land at 1 Lac 40 thousand Taka in the name of father in law Prabin Drong in 1997 for our shelter and storage of arms amn. Sushil has constructed an Assam type house. We have used it as our transit camp till 2004. Now Sushil's wife Kajol Drong and her daughter have been staying there. In 2004 Sushil was arrested and put in jail. In Dec/04 i.e. after 6/7 months he was released on bail. After his arrest the house not used by us.

Noxi-Halchati shelter under Jinaigali PS, Dist-Sherpur:-

Our cadres take shelter in Noxi and Halchati village, which are adjacent to Indo-Bangla border. Both the villages are inhabitated by Hojong and Koch people. Two NDFB cadres stay there to assist our cadres in crossing Indo-Bangla border.

Shelter cum transit camp at Khagrapur near Khagrasari town:

Our NC leaders namely G. Fifikhang with family, N. Dinthigra (Gen Secy.), B. Onjalu (info and publicity Secy.) take shelter in the hired house of Tripuri people.

NDFB (AT) Office cum transit camp at West Kafrul, Dhaka City:

N C MEMBER N. Jansrang (of Gossaigaon area) is the incharge of this office with NDFB accountant N. Anjad (of near Bongaigaon) since 2008.

Prior to this our office was at Seorapara, Dhaka. The office at Kafrul is located in 6 storied building at top floor.

My hired shelter:

Flat at 5th floor.
Of a 5 storied building.
House no. 35, Road No. 13,
Sector 13, Uttara, Dhaka City.
Owner MR & MRs. Khan.

From the middle of 2004 I stayed in the hired flat with my wife son and daughter till the date of my arrest (30/04/2010). Rent is 15,000 Taka per month.

After every one or two years I changed my residence. From 1993 to 2003 I had hired houses and stayed with my family within Dhaka City areas namely Sahjahanpur, Baily road, Siddheswary apartment, Bangla motors, DHOS maha Khali area.

Camps of other militantoutfits at Boholsori area near NDFB (AT) camp.

NSCN (IM) Camp:-

From Bagaihat bazaar by power boat it takes about 2 to 2 ½ hours in rainy season through Boholsori river. From Boholsori river it is about 1 hour walk to the West to the NSCN (IM) camp.

There are about 30/35 cadres of NSCN (IM) camp. In 2002 the NSCN (IM) camp was raided by Bangladesh army. NSCN (IM) also keeps boat in the river for their communication. I have not visited this camp.

From NSCN (IM) camp it takes about 1 hour by powerboat to reach Baholsori bazaar.

HNLC Camp:-

From Boholsori bazaar it takes about 1 hour by boat (upstream) to reach our boat command. From there about 20 minutes walk to the HNLC camp (to the West of the river bank). There are about 6/8 cadres of HNLC with 303 Rifle and SLR.

KYKL Camp:-

From NDFB (AT) Boat Command it is about 1 ½ /2 hrs journey by powerboat to the KYKL camp towards North side. From the river bank after about 45/50 minutes walk to the Wes KYKL camp is located. There are about 30/35 cadres of KYKL. In 2006 they established the camp. In the same year I had visited the camp. I have no knowledge about their arms strength and leaders staying in the camp. They also keep boat at the river bank.

NLFT HQ Camp:-

It is about 30 minutes walk from KYKL camp to the NLFT camp. I visited camp in Jan/06. This camp is to the north of KYKL camp. There were more than 150 armed cadres in the camp. There may be defence posts and other small camps around the HQ camp. From this camp Tripura border (Indo-Bangla border) is at a distance of about 2 days walk. During my visit NLFT Chairman Baithang Deb Burma was present in the camp.

All the camps communicate with each other earlier by RT set. We have no joint defence post. It may be mentioned that near Bagaihat Bazar there is a Bangladesh army camp. Now so far my knowledge goes ULFA has no camp within Khagrasari area.

Last batch of trainees:

In Jab/Feb 2010, 38 cadres have been trained at Boholsori camp in Khagrasari, Bangladesh out of which 10/12 cadres have already been sent to Assam for committing extortion and subversive activities.

In February/March 2010 34 cadres have been trained in Myanmar.

We have already imparted training to them in respect of handling and operation of sophisticated arms, preparation and explosion of high explosives and guerilia warfare tactics to wage war against the Union of India.

In 1993 I went to Bangladesh and arranged my shelter by hiring house mainly at Dhaka city. As per my approval and decision our leaders and cadres set up transit camps, hide outs in different places of Bangladesh and set up transit camps at Thansi, Ali Kadam etc. for storage and transshipment of arms amn. In 1997 the camps of NDFB was set up in Khagrasari dist near Boholsori.

In 2002 we had started imparting arms and guerilla training to our cadres.

E.g.-	In 2002	-	a batch of 30/32 cadres
	In 2005	-	a batch of 30/35 cadres

In 2007 - a batch of 30/35 cadres

Generally the new cadres from Assam were taken in the batch of 2/3 cadres at a time through clandestine route via West Garo Hills dist of Meghalaya touching Noxi border.

Through ISI official John based in Pak Embassy at Dhaka I sent two batches of our selected leaders and cadres-in 1996-5 cadres and in 1998- 11 cadres who underwent advance arms, guerilla training including preparation and explosion of high explosives at POK area under ISI. Out of those trained cadres SS Maj. B. Alongbar, SS LT B. Romesh (died) and SS Capt D. Jabrang (died) after coming back from Pakistan imparted advance demolition training to our selected cadres in the Bhutan camps till 2003.

After declaration of suspension of operation by the Govt. of Indian in our three designated camps at Udalguri, Borbori and at Serfanguri our senior cadres had trained up about 600/700 newly recruited male cadres in 5/6 batches in 2007 and 2008.

After split of NDFB on 15/12/08 we have imparted training to the following batches-

(a) In Myanmar NDFB (AT) Camp- 41 cadres in February-March/10

35th Batch - Instructors

(1) SS Sgt Maj. B. Maison. Org Secy. NDFB(AT)

(2) SS LT B. Jongkhang @ John @ George Basumatary. Dy. Chief of Army.

(3) 3 instructors from KYKL imparted 50 days training.

(b) In Boholsory camp (Khagrasari dist)- 38 cadres in Jan-Feb/10.

34th Batch - Instructors

(1) SS Sgt Maj. B. Sgrid. Chief training instructor.

(2) And 4/5 others (names not known) imparted 50 days training.

Since 1989 till 2010 we have imparted training to our cadres in total 35 batches of Bd SF, NDFB, NDFB (CF) and NDFB (AT) cadres with the same objective.

Split in NDFB and reformation of NDFB (R):

After my oust form President ship on 15/12/08 I had contacted with SS LT I.K. Sangbijit Deputy Commdr 3rd Bn over phone and asked him that we would continue our struggle so he should keep we would continue our struggle so he should keep our cadres united in Sonitpur dist and also to welcome the cadres of NDFB ceasefire group who were intending to joint our group. He was taking shelter in Sonitpur dist. I had contacted with him over phone. At that time there were about 30/32 cadres under his disposal.

On 13/1/09 i.e. after my expulsion from NDFB C/F group I had sent SS LT D. Rwjab @ Rajab Deka Commdr 3rd Bn for undergoing treatment of his kidney stone at Guwahati and to re-organise our cadres in Kokrajhar, Bongaigaon district. He came to Guwahati, underwent treatment and went to Bongaigaon and Kokrajhar dist and gathered about 70 cadres of NDFB with 5/6 AK Rifles and 7/8 pistols. Those 70 cadres

were commanded by SS LT. B. Anthao of Bengtol area. Those cadres took shelter in the houses of Boro people to the northern side of Bengtol.

As per my direction both Commdr. D. Rwjab and Dy Commdr. I.K. Sangbijit had strengthen the base of NDFB (AT).

On 15th Dec/08 NDFB was splitted into two factions i.e. NDFB (C/F group) and NDFB (AT).

Set up of Camp in Myanmar:

In Jan/09 I met the Home Secy. of KYKL (name forgotten) in a hotel at Dhaka along with accountant N. Dansarang. On discussion he told that they would help NDFB and we might set up a shelter cum training camp in Myanmar adjacent to KYKL BN HQ Camp. During the course of discussion over phone I talked with KYKL Gen Secy. N. Oken who was taking shelter temporarily at Kathmandu. Over reconfirmed that KYKL would help us. Both of them told us that before monsoon we must depute our cadres.

Then on discussion with our existing leaders decided to sent Org. Secy. N. Naison of Karbi Anglong and two three other cadres by KYKL camp in Myanmar. In Sept/09 Naison with 2/3 cadres guided by KYKL activists via Mon dist of Nagaland went to KYKL camp. From Mon dist. It is about 10 to 15 days walk. They selected the camp site and started construction and informed me. From Oct/09 to Jan/10 total 64 cadres including 54 new cadres recruited from Sonitpur, darrang, Nalbari and Barpeta dist. Naison used satellite phone and contacts me from the camp. Chief of Army IK Sangbijit had given Rs. 5 lacs to Naison at the time of his departure and later in Dec/09 he sent Rs. 10 Lacs to the camp for their maintenance.

In March/10 KYKL had given 3 AK 56 Rifles (second hand) to the camp free of cost. In the last week of Jan/10 SS LT B. Jingkhang went to the camp. Both Naison and Jinghang are still camping there. In April/10 they purchased 6 AK-56 Rifles with two mag and 36 rds of amn at the cost of Rs. 9 Lacs from KYKL.

Nexus with Liberal Democratic Council of Missing Land (LDCM):

I do not know details about this outfit. In Sept/Oct 2009 SS Capt D. Rifikhang, Finace Secy. Of NDFB (AT) from Khagrasari area informed me over phone (while I was in Dhaka) that a group of cadres of LDCM has approached I.K. Sangbijit Chief of Boroland army for getting training under NDFB. And Sangbijit would impart arms and guerilla training to LDCM group in Nov/Dec 2009. I told Rifikhang that no benefit in imparting training later they would flee away after collection of money. But later I came to know that Sangbijit has imparted training in Nov/Dec 2009. Somewhere in Arunachal Pradesh near Assam border and to the Northern side of Biswanath Chariali. The LDCM outfit is from Mising infested area of Dhemaji district.

Nexus with Maoist:

We have no connection with the Maoist. They have never approached us for training or arms. From our side we have never tried to contact with maoist activists.

Clashes with Muslims in Kokrajhar and Bongaigaon dist: Since 1993 communal feeling cropped up between Boro and Muslim communities at Amteka area under the then Kokrajhar district resulting communal conflict. The then Dy. Commdr. SS Maj. D. Jafrang @ Debojit Dolman and his group equipped with arms attacked Muslim peoples of

that area burnt their houses and killed Muslim people. Later Gen. Secy Gobinda Basumatary and finance Secy. Nileshwar Basumatary had approved the actions of the Bd SF Dy Commdr.

Again in July/94 as per order of Gen Secy. Gobinda Basumatary and Finance Secy. Nileswar Basumatary. Following the orders Commdr. SS 2nd LT B. Gaokhrub @ Baneswar Basumatary (died) and his armed group attacked Muslim people of Salbari area in Barpeta district, set their houses on fire and killed about 200 Muslim people.

Nexus with like minded outfit:

NDFB has nexus with the following likeminded outfits. Myself being the President cum Incharge foreign affairs maintained close relation with NSCN (IM) in 1987 and with the rest after 1993 i.e. after making my base in Bangladesh.

DHD:-

In June/July 1997 Dilip Nunisa, vict President DHD along with Vice President Dimasa student Union and one executive member of the same student Union guided by one bore student who studies Economics in Silchar University went to our temporary camp to the northern side of Sarbhog area where I along with vice President Dhiren Boro and gen Secy. Gobinda Basumatary were present. Dilip Nunisa told us that DHD was very much connected with NSCN (IM). Both operated jointly in DHD area, extorted huge amount of money but DHD was deprived of from their share. The relation between both the outfit deteriorated. So DHD wanted to come out from the clutches of NSCN (IM) who was in truce. They sought our assistance to train up their cadres and to request NSCN (IM) high ups on behalf of them to dissociate DHD by paying their shares. Since NDFB 7 NSCN (IM) were working on the same platform it would be unwise on our part to request NSCN (IM) in favour of them. However I advised them to come out gradually from NSCN (IM) and set up their own camp and worked independently. I asked them to send their cadres to our camp in Bhutan and we would train up them. They went back.

In March/April 1998 a group of 11 DHD cadres came to Namlang camp in Bhutan. We imparted training to them for about 50 days along with our 13th batch of trainees.

In the middle part of 199 Dilip Nunisa on being guided by one PLA activist went to Dhaka and requested me to depute a contingent of armed NDFB cadres to assist them in operational activities. He requested me to depute about 30 NDFB cadres to their operational area NC Hills etc. accordingly by 2000 as per my order NDFB army chief Chabin Boro deputed a group of trained armed cadres numbering 12/15 under SS 2nd LT B. Nerkhang and SS Sgt Maj. B. Udla (both died) were depute to NC Hills to work in collaboration with DHD. Our group conducted joint operation, extorted money; kidnapped people for ransom jointly with DHD groups till cease fire of DHD i.e. 1/1/03. Our groups received money from the collected extortee amount and dispatched the same through our leaders camping in Dimapur.

In Sept/Oct, 2002 DHD Chairman Joel Garlossa sent his Dy C-in-C and one Biren in charge foreign affairs met me at uttara, Dhaka and requested me to supply 25 Nos. of AK Rifles with 25,000 amn in view of the clashes between Dimasa and Hmar Community in NC Hills dist. I refused to provide them arms amn to utilize those in communal clashes. After this relation between DHD and NDFB deteriorated and our deputed cadres quited NC Hills and went to Karbi Anglong and get attached with KLNLF and engaged in extortion etc. till surrender of KLNLF. During

this period our NDFB group has recruited youths, both Boro and Karbi to NDFB. Evenafter declaration of Unilateral cease fire our NDFB cadres remained there. And after split in Dec/08 those NDFB cadres came under the command of NDFB (AT). Now those NDFB cadres are under SS 2nd LT B. Aojar Commdr. Southern Command of NDFB (AT).

After cease fire (1/1/2003) of DHD gradually enmity cropped up between DHD (CF) and DHD (AT) and the incidents of attack and counter attack took place. Later the anti talk faction of DHC formed DHD (J) under the chairmanship of Joel Garlosa.

Since middle of 2008 foreign Secy. DHD Franky sent message to me through our cadres, over telephone. That wanted our assistance for their safe shelter. In 2009 (might be in February) Joel Garlosa sent an e-mail message requesting me to provide shelter to DHD (J) cadres in Bangladesh and he would send his representative to Dhaka to meet me. In reply through e-mail message I welcomed his proposal and asked him to send his representative. In March/09 Franky Foreign Secy. DHD (J) went Dhaka. We discussed the matter and agreed to sent about 30 cadres to Bangladesh. Franky returned back and died. DHD (J) could not sent their cadres to Bangladesh as Joel Garlosa was arrested. I had agreed with the hope of expansion of our base, shelter and operational area in N.C. Hills etc.

Nexus with NSCN (IM):-

In 1987 I along with D. Merga went to the NSCN base in Myanmar and talked with Chairman Isaac Sisi Swu and others who assured us to impart arms and guerilla training to our cadres, they supply arms amn and conduct joint operation to raise fund.

During the last part of 1988 NSCN (IM) leaders and instructors came to Gurungjuli camp and from 26/10/89 they imparted training to our 33 cadres.

During 1990-91 both Bd SF and NSCN (IM) cadres conducted joint operation. They looted Rangapara Branch of SBI and Itanagar Branch of SBI and equally shared the looted money.

In April/93 Chairman NSCN (IM) Issac Sisi Swu asked me to go to Bangladesh to receive some arms amn procured by them.

Accordingly in May 1993 I along with B. erakdao went to Shillong and with the assistance of NSCN (IM) Chairman we crossed Indo-Bangla border via Dauki and went to Dhaka and stayed in the hired house owned by one Nuru Mia at Sahjahanpur, Dhaka. It may be mentioned that NSCN (IM) had procured about 300 Nos. of arms from Combodia by sea and disembarked at Teknaf near Cox bazaar. I sent back Erakdao to bring cadres from Assam to receive arms amn and to set up our camp at Ali Kadam.

In 1994 (mid) I along with my wife went to Bangkok from Dhaka on the strength of Bangladesh Passport furnishing fake name. in Bangkok I had contacted with Chairman Swu and foreign minister Angelus Shimray discussed and decided to procure sophisticated arms amn from foreign country. We also decided to send a joint team of NDFB and NSCN (IM) to China to make necessary arrangement for procurement of arms amn and explosives, Swu entrusted SS Capt Anthony for the mission to China.

Later in the last part of 1994 Boroland Army Chief SS LT Col. B. Bwhithi @ Bhupen Boro (died) Info & Publicity Secy. B. Erakdao @ Emanuel Basumatary along with SS Capt Anthony went to Shanghai, China. They contacted with the arms dealers and agents of Norinco Ordinan factory. The dealers and agents assured to provide required arms

amn valued not below one million US dollar and those arms amn would be supplied to us through North Korean Cargo.

In Feb/94 NSCN (IM) had given us M-16 Rifles = 2 Nos., Rocket Launcher = 1 and AK 47 Rifles = 9 Nos. with sufficient amn free of cost and those were brought to udalguri are via Myanmar, Nagaland etc.

The consignment of arms amn from Norinco Company China was brought by North Korean Cargo in March/96. Through NSCN (IM) we received about 550 nos. of arms of various assortment with sufficient amn.

As per discussion with the Muivah, Gen Secy. NSCN (IM) I had collected prescribed from to be member of UNPO (Unrepresented Nations and Peoples Organisation). The HQ of UNPO is at Amsterdum, Netherland. To project our demand and grievances before the international forum and to get support and assistance from the international community. We intended to become its member. In Dec/97 I had sent the duly filled up form along with supporting documents by fax from Dhaka to UNPO office. I received the letter of acknowledgement from UNPO. Till date we have not pursued the matter.

In 1997 NSCN (IM) has come in to touch without informing us. So our relationship with NSCN (IM) diminished. However I have maintained contact with SS Brig Anthony and SS Capt Ashing in Dhaka. They also visited our NDFB later NDFB (AT) office at Seurapara and West Kafrul, Dhaka.

Nexus with KYKL:

In Aug/1994 we had set up a common platform of the militant outfits of North East. Region except NSCN (K), ULFA, PLA, UNLF, KLO etc. which was called self Defence United Front of South East Himalayan Region (SDUFSEH) to fight jointly against the Union of India to liberate North East Regin. Our constituent members were NDFB, NSCN (IM), KYKL, NLFT, HNLC, KPF etc. the Muivah was Chief convenor and I was the Convenor. As Muivah mostly remained away in abroad so N. Oken GTen Secy. KYKL was chosen as Convenor. Subsequently SDUFSEH became defunct. After the split of NDFB, in Jan/09 I talked with the Home Secy. Of KYKL (name forgotten) in Dhaka and over phone I talked with SS Brig N. Oken (Gen Secy.) KYKL and sought their assistance for our shelter and to set up a camp in Myanmar. They agreed. Accordingly SS Sgt. N. Naison and with 2/3 cadres were sent to Myanmar via Mon to the Camp of KYKL in Sagain division Naisen set up a camp cum training center of NDFB (AT). From Oct/09 to Jan/10. 64 cadres of NDFB (AT) including 54 newly cadres to that training camp.

KYKL given 3 AK 56 Rifles to our cadres in the camp free of cost and through KYKL Naison has purchased 6 AK-56 Rifles at Rs. 9 Lacs.

Office bearers of KYKL:

Chairman - Name not know.

Chief of Staff - Name not known but he was arrested near Siliguri in Feb/March 2010.

Gen. Secy. cum Brig- N. Oken (58/60) Now he might be in Myanmar near Mooreh. His children are grown up who are staying in Imphal.

Home Secy. - Name forgotten. He is also staying in a town in Myanmar near Mooreh.

KYKL cadres and commanders take shelter in Manipuri villages inMoulavi bazaar dist. While they come to Dhaka they stay in the hotels and in the houses of the Manipuri people. KYKL demands sovereignty of

Manipur. Earlier N. Oken was the foreign Secy. of UNLF. He guided the outfit and formed KYKL.

In Jan/10 I had deputed SS LT B. Jingkhang Dy. Chief of Boroland army to our camp in Myanmar. Both Jingkhang and N. Naison and looking after our camp.

Nexus with NUPA:-

Some times in 2002 B. Jukhrub (died) the then Judicial Secy. of NDFB was camping at Khagrasari district used to visit Jawalfandi near cox bazaar where he became familiar with one NUPA activist (National United Party of Arakan). Later the NUPA activist told that the high ups of NUPA desired to hold talks with us. Accordingly in the same year in the hired house of R. Guthal at Khikhat, Dhaka I along with Commdr R. Guthal and NC member SS Capt Benu boro hold talks with Dr. Khin Muang Chairman NUPA and their Foreign and finance Secy. (names not remembered). We mainly decided to work mutually and to procure arms amn (second hand) from Combodia. Their Dy. Chief of Army stationed in Bangkok would assist us in procuring arms through Thai arms dealer of Bangkok.

From the last part of 2002 till July/2004 SS Capt Benu Boro went to Bangkok and with the help of NUPA Deputy Chief and Thai arms dealer went to Combodia made an agreement to purchase 300 nos. of AK 47 Rifles (2nd hand arms) valued 3 Lacs Euro-dollars equivalent to Rs. 1 crore 68 Lacs and paid Rs. 84 Lacs (1 Lac 50,000 euro dollars) to the dealers of arms in two installment. But NUPA Chairman informed me that two consignment of arms on the way to Bangladesh from combodia were captured by the authority.

But had not convinced with the statement of NUPFA Chairman. He further insisted me to pay more money for the proposed arms amn. In the mean time in July/04 Benu Boro was intercepted by the authority in Bangkok and later he has surrendered before the authority and our mission was endedin Fiasco. Since arrest of Benu Boro we have no relation with NUPA.

Nexus with ULFA:

In 1987 while I went to NSCN HQ in Myanmar as advised by NSCN leader I stayed with ULFA in their camp and came into the contact of Rabin Handique. Kishore Mahanta etc. and at that time under the leadership of Paresh Baruah a group of about 200/250 cadres were in KIA HQ in Kachin Province for training.

In 1991 before Rhino operation Chairman Arabinda Rajkhowa went to our camp in Bhutan. There were two agreements of Bd SF and ULFA leaders for mutual understanding. Our Gen. Secy. Gobinda Basumatary and Chairman Arabinda Rajkhowa made the agreements. Since 1991 we are maintaining good relationship with each other. In 1995 in Bangladesh I met Paresh Baruah Chief of Army Staff of ULFA at Dhaka I obtained his contact number. Then I talked with him over phone. In Septe/2000 at Dhaka Paresh Baruah and I discussed regarding procurement of arms amn.

In Dec/2000 Paresh Baruah procured and brought a consignment of arms from China to Chittagong and given the following arms-

AK 56 Rifle	-	180 Nos.	-	Without amn.
M-20 Pistol	-	100 Nos.	-	-do-
Rocket launcher	-	5 Nos.	-	Shell-30
Chinese Grenades	-	30		
60 mm mortar	-	2	-	Shell-20

MMG 1 amn-8000.

For the above consignment I paid 3 Lacs 50 thousand U.S.dollars through SS 2nd LT Rubel to Paresh Baruah. Later the consignment was brought to Assam.

In 1998 we had a meeting with Chairman Arabinda Rajkhowa, CS Paresh Baruah, foreign Secy., Sasha Choudhury and from our side VC Dhiren Boro, GS Gobinda Basumatary, Org Secy. M. Gerema and I took part. The meeting was held at Malibag, Dhaka in the hired house of SS LT Sushil Boro @ B. Satbangsa. We formed a coordination committee of ULFA and NDFB to resolve our political and ideological differences and other problems if and when arises.

Again in the early part of 2003 and meeting of the co-ordination committee was held in the hired house of R. Tuhai at Khilkhet, Dhaka attended by chairman Arabinda Rajkhowa, foreign Secy. Shasha Choudhary, Chief Org Secy. Ashanta Bagh Phukan of ULFA and from NDFB SS Capt D. Derhasa (Org Secy), Army Chief Chabin Boro, SS Capt Benu Boro, SS Maj R. Guthal and I was present. The meeting emphasized for mutual understanding and to hold co-ordination meeting frequently and to strengthen the bond of friendship between the two outfits.

In 2004 i.e. after operation all clear in Bhutan both chairman Arabinda Rajkhowa and CS Paresh Baruah came to my hired residence at Uttara, Dhaka. From NDFB side SS Maj. R. Guthal, SS Capt benu Boro and I discussed and decided to constitute a joint operation team headed by two captains of ULFA and NDFB for committing extortion and operational activities jointly. Besides, we discussed about the loss incurred in Bhutan due to all clear ops. Through we had decided but it could not be materialized.

It may be mentioned that in the meeting of 1998 Arabinda Rajkhowa expressed that both ULFA and NDFB fighting for sovereignty of Assam and Boroland but under no circumstances Assam should be splitted. If required the name of Assam should be changed and we should inhabit together. About a week before Jan/2004 Paresh Baruah from China rang up me from the satellite phone to give him 2 Lacs US dollars to provide me arms amn likely to reach Bangladesh soon. But I could not give him money. And in Jan/04 10 trucks of arms amn brought by Paresh Baruah were captured at Chittagong near Fertiliser Factory on the bank of Karnaphuli River. After the incident of Capture there was no physical contact with Paresh Baruah and Arabinda Rajkhowa. But sometimes I met with Sasha Choudhury and Raju Baruah in Dhaka.

NEXUS WITH UNLF:

Already I have stated.

NEXUS WITH KLO:

KLO is mainly connected with ULFA. NDFB has good relation with KLO. In 2001 while I was going to Dhaka from NDFB 2nd BN HQ camp Kalikhola, KLO Chairman Jibon Singh and SS LT Rustov Choudhury of ULFA escorted me from Kalikhola to Dhaka following my request to KLO army chief Milton. At that time KLO leaders and cadres were in 709 BN HQ camp near Kalikhola. It may be mentioned that while escorting me to Dhaka Jibon Singh did not disclosed his identity.

In 2004 after OPS all clear in Bhutan Chairman Jibon Singh met me at the hired residence of R. Guthal at Khilkhel, Dhaka and requested me to impart training to their cadres and to provide some arms amn. I

told him that we would inform him later. In the mean time ULFA leaders in Dhaka arranged training of KLO cadres under TPDF at Satsori camp in Moulavi Bazar district. As per my advice SS Maj. R. Guthal Commdr 3rd BN maintained good relation with KLO Chairman. Later in 2007 R. Guthal in collaboration with KLO acting army Chief (sister husband of Jibon Singh) came from Bangladesh to Dhubri, Kokrajhaar and Bongaidaon district area mainly Koch-Rajbonshi area for mobilization to get support from those people as well as to expant our base area. But after 5/6 days of mobilization KLO stopped our team. There was understanding between ULFA na dKLO that KLO would refrain from mobilizing people in Assam.

In spite of this we are maintaining good relationship between us. Presently there may be 10/15 trained cadres of KLO. One Patowary a close associates of Jibon Singh has been arrested from Rangpur in Sept/09. Jibon Singha has hide out (hired house) at Mirpur. We have not given any arms amn to KLO.

NEXUS WITH NLFT:

NLFT Chairman Baithang Deb Barma is one of the constituent members of Self Defence United Front of South East Himalayan Region, which formed in Aug/94 in Dhaka. The operational area of NLFT is Tripura, Moulavi Bazar area. We are maintaining good relationship with each other. In 1997 NLFT cadres assisted us in shifting our camp from Ali Kadam Dist – Bandarbon to Boholsory under Khaprasari dist. As a token of friendship we have given 10 AK 47 Rifles, 3 semi automatic rifles and 1 snipper rifle to NLFT. NLFT has assisted NDFB cadres in transshipment of arms amn in 1997, 1998 through Tripura, also they assisted our cadres and leaders in crossing over to Bangladesh from India and Vice Versa.

NLFT Vice Chairman	-	Yam bork Deb berma(now at Khagrasari)
NLFT Army Chief	-	Thomas Deb barma(now at Boholsori camp)

Their total strength may be 150/200. Except Boholsori camp they have transit camps and the cadres stay in Tripuri villages of Tripura, Moulavi bazaar and Khagrasari dist. Area of Bangladesh.

It may be mentioned that in 1998 in Namlang camp in Bhutan our Pak trained cadres imparted advance guerilla training to 5/6 NLFT cadres for one month. Some of the cadres were Dipak Deb berma, Sangsar Deb berma. As per request of their Chairman and army Chief I had directed the then Boroland army Chief Chabin Boro who arranged training.

So far I know NLFT cadres ambushed and killed 14/15 Jowans of Assam Rifles in Tripura before or after Tsunami. Before this incident NLFT killed about 21 CRPF personnel and snatched their arms in both the incidents. 5/6 cadres of NLFT has under net training in Pakistan under ISI might be in 1996 or 1997.

NEXUS WITH TPDF:

East while ATTF now TPDF is in very good relationship since 1993. TTF cadres assisted ULFA in transshipment arms from cox bazaar area to Assam and Bhutan via Myanmar and Mizoram.

After shifting of our Camp from Ali Kadam to Bahalsori in 1997 near Ali Kadan. The Dy. Chief, Finance Secy and one cadre of TPDF were killed by NLFT troops. But TPDF Chairman suspected NDFB in killing their leaders and cadres. TPDF Chairman Ranjit Debberma made international publicity blaming/accusing NDFB and NSCN (IM) behind the killing. All the time of the incident I was a Namlang camp in Bhutan. Then I went back to Dhaka and during Dec/97 I had requested Paresh Baruah, CS of ULFA to arrange a meeting with TPDF Chairman Ranjit Debberma to clarify our position, as we were not involved in the incident.

In Jan/98 Paresh Baruah arranged a meeting meet in a Chinese restaurant at Moo Bazaar, Dhaka where I had clarified the matter to TPDF Chairman Ranjit Deb berma to array the misgivings. Later Ranjit Debberma came to know that neither NDFB nor NSCN(IM) were involved in the matter.

After long gap in 2006 on my request KLO Chairman Jibon Singh arranged my meeting with Ranjit Deb Berma in a restaurant at Farm Gate, Dhaka were I tried to make a friendly relationship between NDFB and TPDF.

In 2009 on my request Ranjit Deb berma had arranged my meeting with UNLF Chairman Sanayeima near Sangshad Bhaban, Dhaka. I wanted to know about arms amn to procure from Myanmar for our use. He told me that second hand arm can be purchased from Myanmar in a consignment of 5/6 arms at a time.

In Dec/09 after the arrest and deportation of Sasha Choudhury, Chitrabon Hazarika, Raju Baruah and Arabinda Rajkhowa from Bangladesh to India over phone and e-mail. I had discussed with Sanayeima, Ranjit Deb Berma and Paresh Baruah jointly released press statement to media of Bangladesh and Assam stating that during the liberation movement of Bangladesh the people of India helped them. So the Bangladesh authority should also help us.

Further I did not get time to negotiate with him for procurement of arms from Myanmar.

NEXUS WITH ANVC:

Achik National volunteers Force was formed by the Garo people of Garo Hills area of Meghalaya. Prior to formation of NAVC there was antoher outfit called United Liberation Army of Meghalaya (ULAM). Deluxe Marak was its Army Chief. Probably in 1995 Delux Marak was arrested and lodged in Shillong Jail. In the same year Delux Marak along with NSCN (IM) and HNLC cadres escaped from jail and went to Dhaka and stayed in the shelter of NSCN (IM) at Dhaka. I also met him and gave 10,000/- Taka for his expenses. We encouraged him to form a new outfit. In 1997 from the side of NDFB I had given AK 56 Rifles – 3, Semi automatic Rifles – 2, Pistols – 2 to Delux Marak. Also I had deputed 10/12 NDFB cadres headed by Org Secy. D. Derhasa to assist Delux Marak to mobilize and raise fund. In 1997 Delux Marak formed ANVC abolishing ULAM and he became its Chairman and still continuing. ANVC is in cease fire since 2003. We had helped them to ensure free movement of our cadres from and to Bangladesh, transshipment of arms amn from Bangladesh and for shelter. Since 1997

till 2003 one group of our armed cadres jointly operated with them, extorted money etc.

NEXUS WITH HNLC:

HNLC (Heina trep National Liberation Council) of Meghalaya is a Khasi outfit, which is the constituent member of SDUFSEHR since 1994. Hence we are maintaining good relationship with each other.

In 2003 at the request of the then chairman HNLC Julius Dorfang (since surrendered). I had deputed a group of 5/6 armed NDFB cadres head by SS LT D. Ofri to conduct joint operation, extortion with HNLC cadres in Jayantia Hills area bordering Karbi Anglong. Our team remained there till 2004. Sometimes in 2004 the Special Operation Team (SOT) has killed one of our cadres and captured our two arms.

Chairman	-	
Gen. Secy	-	Cherlish Thangkiu (42)
Army Chief	-	Boby Marwin (38)

HNLC has a camp at Boholsori. Their total cadres strength may be 20/30. Boby Marwin underwent 14 months training under Assam Rifles and deserted.

NEXUS WITH GARO NATIIONAL LIBERATION FRONT (GNLF):

Very recently the outfit has been formed. Formerly there was a Garo outfit "Elite Achik National Force" headed by one SOT Commando, who has been killed in encounter. After that one Dy. Supdt. of Police of Meghalaya Battallion formed GNLF with the cadres of Elite Force, deserters of HNLC etc. NDFB has no relationship with GNLF."

8. Now, I come to certain Press Releases, which as per SW-14, were given by the NDFB. First Press Release referred to by SW-14 in his affidavit as Annexure L and which during his statement before this Tribunal was marked as Ex.SW-14/L is re-produced below:-

"A general meeting of NDFB was held on the 29th and 30th October, 2009 with a view to form National Council of NDFB and to appoint the Chief of Army Staff and Deputy Chief of Army Staff of Boroland Army and Commanding and Deputy Commanding Officers of the Four Commands and to discuss various issues and problems of the party. The meeting was chaired by D.R. Nabla, the President of NDFB and N Dinthi Gwra, the Spokesman of NDFB was unanimously elected as the recording secretary for the meeting. The meeting after detailed and

lengthy deliberation unanimously resolved to form the National Council consisting of seven members and adopted the following resolutions.

The meeting has unanimously formed the National Council, the highest executive and decision making body of the NDFB, consisting of seven membeRS. The elected seven members of the National Council are:

Ronaigra Nabla Daimari	President
Dinthi Gwra Narzary	General Secretary
Ohnjalu Basumatary	Information and Publicity Secretary
Barbai Basumatary	Asst. Information and Publicity Secretary
Rifikhang Goyary	Finance Secretary
Rwjab Deka	Organizing Secretary(now with CF)
Danswrang Narzary	Member

* The meeting has unanimously appointed **Captain Songbijit Ingti Kathar** and **Lieutenant Jwngkhang Boro** as the Chief of Army Staff and Deputy Chief of Army Staff of Boroland Army respectively.

* After a detailed discussion, the meeting has resolved to centralize all operations of the Boroland Army and ask to refrain from activities that may adversely affect the party as a whole and that are against the revolutionary ethics. The meeting has also resolved that any major or serious activity or action must be done only through consultation with the highest authority of the party.

* The meeting has resolved and vowed to work and fight together with vigor and determination to liberate Boroland and the Western South East Asia, the so called "North-East India".

9. The resolution which the NDFB had passed on 17th June,2010 in its General Meeting was annexed with the affidavit of SW-14 as Annexure M and was marked as Ex. SW-14/M during his evidence before the Tribunal reads as under:-

"THE GENERAL MEETING OF THE NATIONAL DEMOCRATIC FRONT OF BOROLAND HELD ON THE 17TH JUNE, 2010

The General Meeting of the National Democratic Front of Boroland was held on 17th of June, 2010 Thursday in presence of high official from Boroland Army and National Council. The meeting was chaired by the honourable Vice-President of the NDFB. The meeting started with the 1 minute condolence for the martyrs who sacrifice their live for Boroland. According to the agenda the meeting broadly

discussed needs of the secretary in different field to function the organization and the engagement of senior cadres in the commands. The increase and spread the bases of the organisation's foreign diplomacy were placed important and necessary in the meeting. The member of the general meeting has also discussed the important of the bribing money and its proper utilization. On the spend and the utilization of the collected money the meeting made certain rule and regulation that every commands has to follow in which the General Meeting has passed. In the house of the general meeting the increase of strength as well as the force against the enemy was discussed in detailed.

Resolution of the General Meeting:-

1. The General Meeting taking from all opinion and support rising on the issue of the appointment of Finance Secretary. The houses appoint. Capt. N. Danswrang as the Finance Secretary of National Democratic Front of Boroland. And in that same agenda according to need Lt. B. Shotbangsa has been appointed as new Council Member of the National Council of NDFB.

2. In the resolution of the financial matter the house passed the rule that every Collectors as well as the commanding officer must follow the rule and regulation. That without consult of Army Chief or Finance Secretary the commanding officer and its lower officer cannot spend more than one lakh rupees and every command are asked to obey the chain-of-command in case of utilization of money.

3. Foreign Diplomacy & Foreign Base was taken as the agenda in where the new strategy was passed, that the General Meeting resolute to send Lt. G. Onthao as the Representative with five cadres to Nepal for the survey to make new base for the hide out. And in that same agenda the senior cadres are resolute engaged them in different the command.

4. Increased of strength and force by recruiting more cadres to fight with more power and vi was taken as the resolution in the General Meeting so the Commanding Officer are asked new adult boy from different parts by simple judging the background.

5. Organization Matter was taken as the agenda in where the resolution was passed to united according to the decision taken before as the submission of the Proposed Agenda the Ist of May, 2008 to the Indian Government is the final issue for our Organization.

6. In the miscellaneous agenda the re-issue of the collection's Receipt-book are asked to more to the Financial Department according to needs in all the commands. And even command are asked to use receipt-book and entered in the Account-Book.

7. Resolution of the Action & Plan Policy the house take decision to destroy the government properties like bridge, electricity, power house, government office and other government properties and enemies means of transport & communication.

8. The General Meeting once again vowed to struggle for the liberation of Boroland and Boroland people from the clutches of India colonialism with all determination and dedication until goal is reached and never to compromise on the right to National Self-determination."

10. The Government is also relying upon the following statements made by three of the activists of the NDFB after their arrest by the Assam Police in connection with some crime details of which are given by SW-4 Shri Nitul Gogoi, Superintendent of Police, Bomgaigon, Assam in his affidavit Ex.SW-4/1-A, SW-7 Shri Partha Sarathi Mahanta, Superintendent of Police, Kampur District, State of Assam in his affidavit Ex. SW-7/A and SW-10 Shri Debaraj Upadhaya, Superintendent of Police, Chirang District, Assam in his affidavit Ex.SW-10/1-A:-

"Statement of accused Md. Ayub Ali u/s 161 Cr.P.C. in connection with Bijni PS Case No. 185/10 U/S 120(B)/121(A)/122/353/396/307 IPC r/w Sec. 27(2) Arms Act & r/w Sec. 10/13 UA(P) Act.

"His name and address mentioned above are true as told by him. He was working as a cycle mechanic since last 2/3 years at Haden Bazar. During that period some extremists of NDFB came to Haden Bazar and they had repaired their cycles. He also stated that now he is working as a cycle mechanic near Swiss Gate. The group of NDFB also came to his cycle shop and used him as their helper. He only know one Bidai who is a extremist of NDFB. Sometimes, the group of NDFB collected dry ration as well as some mobile numbers of local people from him by putting fear. He confessed that he was working for NDFB but in the incident he was not involved with them in connection with the case. Of course, he stated that the such incident was done by the NDFB under the command and control of said Bidai."

"Statement of accused Sri Damanik Mushahary @ Jatgu"

"My name is Sri Damanik Mushahary @ Jathi. Since 8 (eight) months, I joined in banned NDFB organization. I have no training. I have been working as carrier of letters and goods from one place to another place. I have been handing over the photocopies of demand letters of NDFB to Platoon Comander N. Jangkhala Basumatary of NDFB extremist anti-talk group. I have done the photocopies at Bangtol Gate. Later on, police seized the Xerox machine from Bengtal gate, which was used for NDFB

works. On 26/9/09 I ordered to Sri Biswajit Basumatary to send a fax, which was a warning to the government with threatening for carrying out major sabotage/explosion in Assam in the name of NDFB. I brought the fax letter and handed over to Sri Lakhan Basumatary. The fax letter was handed over to Biswajit Basumatary by Lakhan Basumatary. I directed Biswajit Basumatary to send the fax. Accordingly Biswajit Basumatary and Lakhan Basumatary were sent to fax. Earlier, the Platoon Commander N. Jangkhala Basumatary, Bijni area gave some demand letters to me. I along with Biswajit Basumatary served the demand letters to some shop keepers of Bongaigaon town. Sri Raj Kr. Chouhan, shop keeper of Chapaguri Road collected some phone numbers of shop keepers of Bongaigaon town and gave me accordingly. On receipt of phone numbers, I demanded money from some shop keepers of Bongaigaon town over telephones. But I do not know whether the money was given to the NDFB or not. Because I was given Rs. 2,50,000/- by Platoon Commander N. Jangkhala Basumatary to purchase laptop, cloths, blankets, etc. from Dimapur. I along with Kanchai Musahary of Amtenga village and Tupil Islary were arrested at Jorabat when we were proceeding to Dimapur. On way to Dimapur, Police apprehended us and seized the money from us. Later Udalguri Police arrested and forwarded us to Jail custody."

Statement of accused Ranjit Das

"My name and address is true as stated above. I am carrying a business of cycle repairing shop at Kalmani Singimari chowk and presently Patrol and Diesel also stoked and sale to the locality from my shop Though I I am not a NDFB Cadre but as a Sarania Kachari youth, I am inspired by the ideology, aim and objective of NDFB and I have been working as NDFB link man for about 5/6 yeaRs. I am not involved in any commission of crime committed by NDFB cadres. NDFB cadres Bipul Boro from Tangla and Dipak Boro from Goreswar who sometimes came to me for purchasing oil, inspired me to work as linkman for NDFB. I am not familiar to any other cadre of NDFB. Sometimes Bipul and Dipak used to come to my residence and shop and took shelter. Three months ago Bipul Boro of Tangla gave me one hand grenade to keep at my house and accordingly, I kept it. Today morning I am informed to hand over the hand grenade to Dipak Boro at Goreswar and they will informed me how to handover it after my arrival at Goreswar. Accordingly taking the Phone No. 9854826535 which is in the name of my wife and Rs. 4060 from the Rs. 5,000/- which was provided to me by them, I came out from home to go to Goreswar by Traker, a joint team of Indian Army and Rangia Police conducted search and seized the articles from me as per seizure list. Seizure was done in presence of witnesses. I am not lieing that I am not familiar with any other NDFB cadres. I am familiar to Bipul Boro and Dipak Boro only. I even don't know their actual address. Specially using black Pulser motor cycle they came to the weekly markets located at Interior areas of Kalmani and Madhukuchi respectively. I don't know about their sheltering specially at night and what kind of Arms and Ammunitions use to carry with them. I am not aware about why the hand grenade kept in my possession and for what purposes has been asked to

hand over to Dipak Boro at Goreswar today. Since, no one from my locality knows me as link man of NDFB, so I easily help them in their activities but I got apprehended. I am married person and father of a child and living with my father and other family members jointly."

11. SW-14 has also annexed with his affidavit the speech made by G. Rafikhang, in his capacity as Vice President of the NDFB, on 14th September, 2010. The same was marked as Ex. SW-14/C during his evidence and its English translation is reproduced below:-

Speech of Vice President G. Rafikhang on the Martyr's Day

My dear comrades, supporters of Liberated Boroland and those who had helped us in our struggle in various ways, at the outset, I would like to express my heartfelt gratitude to all of you. I would like to pay homage to those brave soldiers and their families who had lost their lives for the cause of Independent Boroland during the 24 years of struggle by the NDFB. We observe 14th September as Martyr's Day. On this day today, I would like to remember all those who had sacrificed their lives and those who are lodged in various jails.

On 14th September, 1988 action commander B. Bangbur Gwra lost his life and thus became the first Martyr for the cause of Boroland as since then from 14th September, 1989 we have been observing this day as Martyr's Day. After 20 years of struggle, on 8th October, 2004 NDFB had declared ceasefire in anticipation of talks with the Govt. of India. It was hoped that we could place before them our various demands for the welfare of people. Our leaders waited for 5 years thinking that the Indian Government will invite us for talks, but instead the Indian Government only created policies to prolong the ceasefire without any political talk or discussion to solve the Indo-Bodo problem. During the ceasefire many unfortunate incident happened. The cadres of our 3rd Bn did not wish to continue with the ceasefire as such many of them were killed by the security forces in the name of breaking ceasefire ground rules. Most of our leaders have fallen prey to luxury and are busy in family business ignoring their affiliation with the organization. On 1st May, 2009 as per instruction of the Indian Government, we had submitted a copy of the proposed agenda but this was not accepted by Navin Verma, who was the mediator on behalf of the Indian Government. He had asked us to resubmit a revised copy of the proposed agenda as according to him the said copy of proposed agenda was written in foreign language. This only shows that the Govt. of India is not interested in sitting for talks with th e NDFB. Some of our leaders who had no idea about the government's

policy had submitted the revised copy of the proposed agenda without consulting our top leaders. This resulted in the break up of the NDFB into Pro-talk and Anti-talk faction. Now the question arises why we are in the Anti-talk faction, this is because there is no right to self determination, historical rights of the Bodo people and dream of the martyrs are not included in the proposed agenda that was revised and submitted by the leaders of the pro-talk NDFB. The real revolutionaries and patriots of the NDFB can never compromise the ideology and principles of the party before the formal political talks and as such we are compelled to take up arms again.

We have lost more than 800 brave men in our struggle so far for the cause of independent Boroland. It is to fulfil their wish and dreams that we have to continue our fights against the enemy. For the last 22 years NDFB had been fighting against the Govt. of India as one. It is very unfortunate that now there is a division and infighting among ourselves, the advantage of which is being taken by our enemies. We have to take special care that nobody can take advantage of our disunity and as such I would like to request both the group i.e. ceasefire and anti-talk to unite and fight as one with the renewed vigour for the cause of Boroland. I would like to let this be known to all that if our scholars, politicians and all those organizations can fulfill the long demand of separate Boroland, our organization will be very happy with that.

Our leader Ranjan Daimary have been arrested and lodged in the prison. This had led the Govt. of Assam to believe that we have weakened and NDFB as an organization will meet its death. Let the Govt. of India and the Govt. of Assam think so but we have to show them that we have no weakened and continue our fight. I would like to request our cadres that we have to forcefully take what rightfully belongs to us. Our leader is facing tremendous hardship in the prison and great injustice is being done in the name of interrogation. I would also like to let you know that till date six organizations have entered into a ceasefire agreement with the Govt. of India but till date there has not been any meaningful solution to their problem.

The DHD had entered into a ceasefire agreement with the Govt. of India and have also surrendered their arms but their leaders have been sent to prison and are being harassed on various false cases. I am of the opinion that such peace talks are futile and nothing will come out of it.

Last of all I would like to once again express my gratitude to the people and our supporters who inspite of undergoing great hardship stood by us in the struggle for the Bodo community. I pray that the sacrifices made by our martyrs will not go in vain and promise to continue our struggle till their dreams and wishes are fulfilled.

Thank you.

Long Live Boroland Army,
Long Live NDFB,
Long Live the struggle for Boroland."

12. A copy of the Press Release given by the NDFB on 1st November, 2010, which was annexed with the affidavit of SW-14 as annexure 'O' and which was marked as Ex. SW-14/O, is also reproduced below:-

"The Government of India/Assam has been killing innocent Boro people doing fake encounters in the name of NDFB. School students, cultivators and simple living innocent Boro peoples are killed by Indian forces. And these fake encounters are continuing. So the Boroland Army, NDFB strongly warn the Government of India/Assam to stop the killing of innocent Boro peoples in the name of fake encounter. We, the Boro people and the Boroland Army, NDFB bear all these for long yeaRs. The Government of India/Assam has done too much against the Boro peoples. Patient also have limit and now our patient is over. We can't break stone with brick, we have to use stone. From today or onward if any innocent Boro/NDFB cadres killed by Indian forces in the name of fake encounter then the Boroland Army, NDFB will take action against any Indian. We don't care who are they, may be any Indian (civilian) or Indian forces. One innocent Boro people equal will be twenty Indian or may be more (1 Boro people = 20 or more Indian). And this will be anytime and any moment. All the Boroland Army, NDFB are ready. So, remember this warning and be serious before killing any innocent Boro people. If, again the Government of India/Assam start this then we will start and nobody have right to comment against us. And if this start then all with blame will be the Government of India/Assam, but not the Boroland Army, NDFB. Fight with the Boroland Army, NDFB not with the innocent Boro civilian peoples. Colonialist has no right in our land. We are the SON OF SOIL. The Government of India/Assam doesn't know respect and there is discrimination whenever they arrest our peoples, cadres and leadeRs. The Government of India/Assam doesn't know how to respect a revolutionary fighter because whenever they kill our comrades in fake encounter or in battle field, they treat like as an animal even the dead body but not like as human being. The Boro peoples, NDFB are also human being and we are fighting for our own Boro National and for our legitimate rights, so learn to respect otheRs. Don't proud with your mighty power. If Super Power like USSR can breakdown then what is India. Remember everything is possible in this world.

Long Live NDFB
Long Live Boroland Army

Let us die for Boro Nation but let not Boro Nation die for us."

13. A copy of another Press Release issued by the NDFB on 11th November, 2010 was annexed with the affidavit of SW-2 Shri Debajit Deory, Superintendent of Police, Udalburi district, BTAD, Assam and which was marked as Ex. SW-2/C and the same is reproduced below:-

"The Boro people in the past have chronicles of kings and kingdom, have developed culture, custom and tradition, believed and practice and having long history of its own. The invasions of different groups in different time the Boro people become nearly minority in their own land. Since the Ahom invasion the Boro kingdom declining and extinction of Boro history process start. After Indian independence the Boro Kingdom and Boro People become under Indian rule. India is the largest Democratic Country in the world which has its Fundamental Rights, Directive Principles of State Policy, constitutional Rights are there but all these Rights are only for ruling class in every state in India. In Assam the Boro people are victim of these. Since the Indian Independent the lackadaisical attitude, jobless, unemployment, suppression, oppression, domination and colonialist behavior to peace lover Boro people become aggressive and frustrate now at present. There are lots of democratic movement launch by the Boros in different time which are ignored and not recognized because of which the violent organization had to emerge to protect and security to our Boro people. National Democratic Front of Boroland (NDFB) has been waging war against India since 1986 which is yet to recognize no response had been given to it. The security forces in the name of NDFB operation killed many innocent Boro peoples before and after the division of NDFB and after division the number of Boro youth which shown as more than 200 out of which only 20 to 25 are only NDFB trained cadres, others are all innocent Boro youth some of them are brutally killed in joint operation by pro-talk NDFB and security forces and the arrest toll moved to more than 225 out of which only 40 of them are actual NDFB cadres. Many time NDFB's press release asked to sincere as well as warning was given about innocent killing but the massive killing is still on the way. Government should learn a lesson from the incidents, actions, serial train blasts and etc. what arrogant the NDFB organization is? In spite of warning on the 8th of Nov. 2010 why the Gurkha regiment and Assam Police had to killed brutally the innocent farmer youth Moheswar Basumatary, vill: Mainaosri, P.O. Batasipur, P.S. Dhekiajuli, Dist. Sonitpur, who was living simple life with his wife and two children. Who is now the responsible for those killed? It's all to the government and the security forces. Condemning to NDFB organization cannot bring permanent peace and total solution in the state. When one NDFB is killed hundred come to join the organization looking into which the Indian government should take initiative to solve Indo-Boro problem. After the arrest of our leader or Chairman we remain calm and quiet in which the beefed up security took advantage to nabbed and killing. Keeping quiet for some time should not be interpret as the weakness to any armed revolutionary which in result will be like the last incidents which government will only to blame and responsible.

Most of the noted Boro and non Boro leaders find publicity only during incidents when NDFB attacks. When the security force killed brutally to any innocent Boro youth students, farmers they have no words to condemn at all. Even in the same community nobody come forward to protest against security forces and to recover the innocent youth. So I appeal to all the Boro Frontier Organizations, BPF leaders, Boro Sahitya Sobha, ABSU and other Boro organizations made judgments and condemned and protest all those innocent killings and arrest, the harassment, the robbery and torture made by the security forces during operation in Boro villages and houses. In response and respect to the intellectuals Boro National Convention lead by the deputy chief of BTC Khampha Borgoyary our organization honour the initiative to unite the Boro people. NDFB appeal all the Boro people to be unite and stand united against the enemy. Further I appeal to all communities residing in Boro Belts areas to security forces or other Indian communities to make any mistake or crime against NDFB, the result might be heinous and horrible one, so keep away from all these."

14. SW-2 had also annexed with his affidavit a copy of statement of one accused Daithun Boro and which was marked as SW-2/D. The same is reproduced below:-

"My name and address as stated above, my present age is 25 years, my qualification is HSLC passed. I joined in the NDFB in the year 2005 with the help of one Jeo NDFB (Ranjan Daimary Group) and proceeded to Bangladesh via Tura Meghalaya. The training camp was located at Ghagrachari Hills at Bangladesh. Where 30 (thirty) cadres of NDFB have been trained. We have been trained about two and half months where AK-47, 303" Rifle, Sniffer Rifle and 9 mm Pistol. In the training camp there are about two hundred (200) cadres with the following arms: - AK-47 Series Rifle; 35 nos., 303" Rifle: 15 nos., Sniffer Rifle: 15 nos., AK-81: 10 nos, and 9 mm Pistol: 30 nos. After my training, I return back to Tamulpur with Jeo. As instructed by Pln. Commander N.S. Goram I along with others of NDFB kidnapped one Kamaleswar Gupta, Manager of Menoka T.E. and demanded Rupees one crore. On 28/12/2010 the garden authority paid rupees 16 lakhs as ransom. Accordingly, the manager of Menoka T.E. was released on 29/12/2010 at Nagrajuli. On 15/01/2011 while I was proceeding to Dimapur with one Sanjib then we have been arrested by Karbi Aanglong Police."

15. The evidence of SW-18 Shri Pransta Kr. Dutta, Superintendent of Police, Kokrajhar District, Assam was also specially highlighted before me by the learned Additional Solicitor General and learned counsel for State of Assam. This is what this witness had stated in his affidavit:-

"That I am the Superintendent of Police, Kokrajhar District, Assam. My duty is to maintain law and order in the District and I, supervise the functions of all the Police Stations in the said District. I, also monitor investigations of unlawful cases and in particular, those relating to terrorist organization. I, regularly send reports of such incidents to the Special Branch, Kahilipara, Guwahati and Assam Police Headquarter, Guwahati. In my district, members of NDFB, who are opposed to the peace talks with the Government machinery, and are unofficially identified as NDFB (Anti Talk) group, are very active and they are indulging in large scale of unlawful and violent activities, undermining the authority of the Government and waging war against India as well as spreading terror among the people they are found involved in killing of innocent civilians, kidnapping of Government employees, extortion, illegal possession of arms and ammunitions and thereby causing them immense impediment in leading a normal life and forcing them to live in terror and lead a life under constant fear. I, crave leave of this learned Tribunal to cite some instances/case, in which members of NDFB are involved in unlawful activities.

That on 19-08-2009, complainant Sub Inspector Upen Ch. Das of Kokrajhar P.S. lodged an FIR at Kokrajhar PS to the effect that on the night of 18th August, 2009 a reliable input was received regarding movement of a group of NDFB (Anti-Talk) cadres in Taraibari area under Kokrajhar Police Station for causing subversive activities. Accordingly, in the same night at about 1.30 A.M. a joint team of Police and Army of 11th Maratha Light Infantry led by the Deponent herein proceeded to the above area. After arrival there, the joint team conducted a discreet enquiry about the location of suspected NDFB (Anti-Talk) cadres and then advanced towards the location of their presence. But at about 3.00 A.M., suddenly sensing the presence of security forces, the militants opened fire towards them with the intention of killing them. As a consequence of that, security forces retaliated and the exchange of Fire continued for about 20 minutes. Later on, the militants escaped from the place of occurrence by taking advantage of darkness. However, on being searched, a dead body of an unidentified militant was found lying on the nearby paddy field. A huge number of Arms and ammunitions, electrical detonators, electronic clock, explosive materials etc. were recovered from the possession of the slained militant. This refers to Kokrajhar PS C/No. 284/2009 U/S 120 (B)/121 (A)/121 (A)/122/307 IPC, R/W Sec. 25 (1-B) (A) Arms R/W Sec. 25 of E.S. Act, R/W Sec. 10/13 UA (P) **Act.** Later on, the deceased was identified as Nikhil Brahma @ Narla (25/26 Yrs) S/O-Sri Guneswar Brahma of village Taraibari, PS & Dist.-Kokrajhar, who was a hardcore NDFB (anti-talk) cadre.

Certified copy of Kokrajhar PS FIR No. 284/09, Dated 19/08/09 has been annexed herewith and marked as **ANNEXURE – "A".**

True certified photocopy of seizure list dated 19/08/09 vide M.R. No. 99/09 is annexed herewith in **ANNEXURE – "B".**

True certified translated copies of statement of witnesses including the complainant are annexed as **ANNEXURE – "C" (COLLY).**

That on 18-05-2010, complainant V.P. Singh, Lieutenant/Company Commander of 15th Dogra Regiment, Adabari lodged an F.I.R. at Serfanguri P.S. stating that on 17-05-10 at about 1400 hours, based on an

specific information, carried a joint search operation along with Police in Patgaon area under Serfanguri PS. During the course of operation, the joint team of Army/Police apprehended one Sri Barhungkha Basumatary @ B. Birkhai @ Jalo, a self-styled Platoon Commander of NDFB(Anti Talk) , Platoon, aged 25 years, S/O Gukul Basumatary, R/O Vill. –North Bhomraguri, PS – Serfanguri and District – Kokrajhar (Assam).During interrogation, he disclosed that he belongs to NDFB (Anti Talk) faction and was acting as the platoon commander of Kokrajhar area. Later on, on being led by him, a search operation was conducted in the village Hasraobari and North Bhomraguri, where from a huge quantity of arms and ammunitions were recovered from a hideout. This refers to Serfanguri P.S. Case No. 35/2010 U/S 121/121(A)/122 I.P.C. R/W Sec. 25(1-B)(a)/27 Arms Act. R/W Sec. 10/13 UA(P) Act. The afore-said accused was arrested and forwarded to the judicial custody.

Certified copy of Serfanguri PS FIR No. 35/10, dated 18/05/10 is annexed herewith in **ANNEXURE – "D"**.

True certified photocopies of seizure lists dated 17/05/10 vide M.R. No. 20, 21, 22/2010 is annexed herewith in **ANNEXURE – "E" (COLLY).**

True certified translated copies of statement of witnesses including the accused persons and complainant are annexed herewith in **ANNEXURE – "F" (COLLY).**

That on 24-10-09, Subedar Santosh Kumar lodged an F.I.R. at Kokrajhar P.S. to the effect that on the same day, on the basis of a specific information, a joint team of Army/Police on the bank of river Tarrang was launched near the vicinity of Bhomraguri village. At about 2015 hours, a group of suspected NDFB (A/T) militants was noticed to be moving towards the ambush site in a suspicious manner. On being challenged, the NDFB (A/T) group started to fire at the ambush party. So, finding no alternative, the ambush party also resorted to fire. During the exchange of fire, one militant was killed on the spot and the other cadres managed to escape, taking the advantage of thick jungles. One 7.65 mm Pistol (made in USA), One 7.65 mm Pistol magazine, Five rounds 7.65 ammunitions were recovered from the slained militant. This refers to Kokrajhar PS C/No. 375/09 U/S 120(B)/121/121(A)/122/307 IPC R/W Sec. 25 (I-B) (a)/27 Arms Act. R/W Sec. 10/13 UL (P) Act. The deceased militant was identified to be as Sri Jesmin Boro,(26 years), S/O-Sri Dhaneswar Boro, Vill-Balajan Tiniali, PS & Dist.-Kokrajhar. During investigation, it was found, the deceased militant was a member of NDFB (A/T) organization and was indulging in various subversive activities.

Certified copy of Kokrajhar PS FIR No. 375/09, dated 24/10/09 is annexed herewith in **ANNEXURE – "G".**

True certified photocopy of seizure list, dated 24/10/09 vide M.R. No. 168/09 is annexed in **ANNEXURE – "H "**.

True certified translated copies of statement of witnesses including the complainant and accused persons are annexed in – **"I" (COLLY).**

That on 27/09/2009 complainant S.I. Makib Ali, Officer In-Charge of Kachugaon PS lodged an FIR at Kachugaon PS to the effect that on 26-

09-09 at about 6.45 P.M., one person namely Samiram Basumatary, a surrendered NDFB cadre was killed by suspected cadres of NDFB (Anti Talk faction) at Serfanguri near irrigation canal under Serfanguri P.S. On getting the above information, the Deponent herein alongwith Army of 11 Maratha Light Infantry rushed to the spot. On arrival there, it could be known that few hardcore cadres of NDFB (Anti Talk) were seen moving suspiciously in Serfanguri area just before the incident. Sources also informed the Deponent herein that the cadres of NDFB (Anti Talk faction) who had committed the crime, were seen moving in the same night at Thaisoguri village under Kachugaon P.S. On getting the above input, the Deponent accompanied with a joint team of Police and Army (11 Maratha L.I.) proceeded to the above area. On arrival there and also being informed by the source, he immediately ordered to establish multiple ambushes in and around that village, where a public Mela was also going on in connection with the ongoing Durga Puja festival. However, after waiting for about 2(two) hours in ambush, the source suddenly informed that the aforesaid militants had already sneaked into the Mela ground, equipped with sophisticated weapons for causing some subversive activities there. On knowing that, a small Police/Army joint party in disguise and also accompanied by the sources entered inside the Mela with a view to nab them. But on seeing the presence of the security forces, the three militants present there resorted to indiscriminate firing on the security forces at a very close range in a bid to flee away. The security forces also fired at them and managed to neutralize one militant, using only small arms. Meanwhile, the other two militants escaped, taking the advantage of the heavy crowd, who were also running helter-skelter due to panic. Later on, the whole area was searched and 1(one) 7.62 mm Mauser Pistol, 1(one) magazine, 5(five) rounds of 7.62 mm ammunitions, 5(five) rounds of empty catches of 7.62 mm ammunition, 3 (three) rounds of empty catches of 9 mm were recovered from the possession of the slained militant and seized accordingly. In this connection, a Case vide Kachugaon PS Case No. 38/09 U/S 120(B)/121/121(A)/122/307 IPC R/W Sec. 25(1-B)(a)/27 Arms Act R/W Sec. 10/13 UA(P) Act was registered and investigated into. In course of investigation of the case, the deceased militant was identified to be as Birdao Mushahary @ Birpan Mushahary S/O Lt. Thosen Mushahary of Village No.1 Gangia Gandabil, PS-Kachugaon, who was a hardcore cadre of NDFB (Anti-talk) and was involved in many illegal activities.

Certified copy of Kachugaon PS FIR No. 38/09, dated 27-09-2009 is annexed in **ANNEXURE – "J"**.

True certified photocopy of seizure list dated 27-09-2009 vide M.R. No. 18/09 is annexed in **ANNEXURE – "K "**.

True certified translated copies of statement of witnesses including that of complainant and accused are annexed in **ANNEXURE – "L" (COLLY)."**

16. Besides the aforesaid evidence and material placed before the Tribunal on behalf of the Central Government and the State of Assam and

the evidence of police officials affidavits of many other police officials from the State of Assam were filed and their statements were also recorded before the Tribunal. I need not refer to all those witnesses since more or less all of them are on the similar lines. Each one of them has given facts about various crimes committed by the NDFB cadres within their respective jurisdiction.

17. In addition to the affidavits of the police officials as well as the officials from the Ministry of Home Affairs and Home Department of the State of Assam, Central Government had also produced before me (in sealed cover) inputs received by it from various intelligence agencies including Intelligence Bureau or Research & Analysis Wing(R&AW) of the Cabinet Secretariate, Ministry of Defence regarding the unabated unlawful and criminal activities of the NDFB. Since the same were produced by the Central Government only for the perusal of the Tribunal I have perused the same and that material has not been made a part of the Tribunal proceedings, as was requested on behalf of the Central Government while producing the same.

18. The entire evidence adduced on behalf of the Central Government and the State of Assam before this Tribunal has remained unchallenged, uncontroverted and unimpeached and, therefore, this Tribunal has no reason for entertaining any doubts about the credibility of the evidence as well as other material placed on record in abundance. Considering that evidence adduced during the proceedings before this Tribunal and the material brought on record through the evidence of various witnesses as well as the

records relating to the inputs received by the Government from various Intelligence agencies, which were produced for the perusal of the Tribunal only in a sealed cover and which were perused by me and have been sealed again to be returned back to the Government, this Tribunal has unhesitatingly come to the conclusion that the Government's decision declaring the National Democratic Front of Boroland as an Unlawful Association vide its notification dated 23rd November, 2010 deserves to be confirmed and the same is hereby confirmed. The NDFB has been rightly declared as an Unlawful Association in view of its multifarious unlawful activities, which have been noticed in detail in the earlier part of this report, despite the fact that some of the members of the NDFB have allegedly come forward to have some kind of peace talks with the Government but without renouncing their membership of the NDFB and joining the mainstream of the society.

P. K. BHASIN, J.
"Unlawful Activities (Prevention) Tribunal"
in r/o National Democratic Front of Boroland

May 21, 2011

Printed by the Manager, Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.